सितून, थांभ, थूनी, टेक ।

प्रा० थार } (सं० स्थाल, स्था वा
थाल } स्थल्=ठहरना) पु०
बड़ी थाली ।

प्रा० थाला-(सं० स्थल, स्थल्=
ठहरना) पु० थांवला, पेड़ के
आस पास का घेरा जिसमें पानी
सींचते हैं, एक गड़ा अथवा खोखली
जगह जिसमें पेड़ उगाया जाताहै,
२ (सं० स्थाल) बड़ी थाली ।

प्रा० थाली-(सं० स्थाली, स्था, वा
स्थल्=ठहरना) स्त्री० थलिया,
टठिया ।

प्रा० थाह-(सं० स्था=ठहरना)पु०
तला, पेंदा, पानी के नीचे की
धरती ।

प्रा० थिर } (सं० स्थिर, स्था=
थीर } ठहरना) गु० ठहराहुआ,
अटल, अचल, २ शांत, सुस्थिर ।

प्रा० थिरता-(सं० स्थिरता) स्त्री०
ठहराव, २ शांति, चैन, आराम ।

प्रा० थुतकारना } क्रि० स० दुर-
थुथकारना } दुराना, अनादर
के साथ निकाल देना, अपमान
के साथ हटाना ।

प्रा० थुथनी-स्त्री० ऊंट घोड़े आदि
का मुँह । [तेवरी चढ़ाना ।

प्रा० थुथाना-क्रि० अ० भौं चढ़ाना,

प्रा० थूक-पु० खखार, कफ, राल,
लार ।

प्रा० थूकचाटना-बोल० वचनतो-
ड़ना, कहीं अनकही करना, मुकर
जाना, बातको बदलना ।

प्रा० थूकना- क्रि० अ० मुँह में से
खखार फेंकना ।

प्रा० थूणी } (सं० स्थाणु, स्था=
थूनी } ठहरना) स्त्री० थंभ,
खंभा, टेक, थांभ, धरन । [राब ।

प्रा० थूथड़ा-पु० मुँह, गु० बुरा, ख-

प्रा० थूहर } पु० स्त्री० एक कांटेदार
थोहर } पौधे का नाम ।

प्रा० थेई थेई - पु० स्त्री० नाचने में
खुशीका शब्द । [पैवन्द ।

प्रा० थेगली-स्त्री० जोड़, चिप्पी,

प्रा० थैला-पु० बोरा, गोन । [थली ।

प्रा० थैली-स्त्री० छोटा थैला, को-

प्रा० थोक-पु० ढेर, राशि, २ रोंक,
रोकड़, ३ हिस्सा, भाग ।

प्रा थोड़ा-पु० कम, तनक, अल्प,
कुछ, किंचित्, जरा, कम ।

प्रा० थोड़ाथोड़ा-बोल० कुछ कुछ,
धीरे धीरे, कम कम ।

प्रा०थोड़ाथोड़ाहोना-बोल० ल-
ज्जित होना, २ कम कम होना ।

प्रा० थोड़ाबहुत-बोल० घाट बाढ़,

कमोबेश, कम व कास्त ।

प्रा० थोड़ेसेथोड़ा-बोल० बहुत थोड़ा, निहायत कम ।

प्रा० थोथा-गु० बिन फल, फलहीन, खाली, छूछा, पु० बिन फल अथवा बिन अणी का तीर, २ एक दवा का नाम ।

प्रा० थोथीबात-बोल० वृथा बात, अनर्थक वाक्य, अर्थहीन बात, सटर पटर, बेमतलब ।

प्रा० थोपना-(सं० स्तुप्=ढेरीलगाना, बटोरना) क्रि० स० सहारना, थांभना, २ लेपना, थापना, छोपना, ३ बटोरना, इकट्ठाकरना ।

प्रा० थोपी-स्त्री० धक्का, थापी, मुक्की ।

द

सं० द-(दा=देना, वा दैप्=शुद्ध करना, वा दो=काटना) गु० देनेवाला, दाता, पु० दानदेना, २ पर्वत, ३ खंडन, काटना, स्त्री० भार्या, पत्नी, ४ शोधन, शुद्ध करना, ५ रक्षा, ६ कलत्र, ७ मेघ ।

प्रा० दई-(सं० दैव) पु० ईश्वर, २ देवता, ३ भाग्य, क़िस्मत, स्त्री० ईश्वरता ।

प्रा० दईमारा-बोल० अभागा, दुर्भागी, अभाग्यवान, अभिशापित, धिक्कार, शापित ।

सं० दंश-(सं० दंश्=काटना, डसना) पु० डांस, २ डंक, ३ दांत, ४ दोष ५ कवच, ६ महिष, भैंसा ।

सं० दंशक, दंशी-(दंश्=काटना, डसना) क० पु० डंक मारने वाला, पु० डांस, २ सांप ।

सं० दंशन-(दंश्=काटना) भा० पु० दांतों से काटना, डंक मारना, २ कवच ।

सं० दंशित-(दंश्+इत) कर्म० पु० काटा हुआ, काटा गया ।

सं० दंष्ट्रा-(दंश्=काटना) जिस से काटते हैं ग० स्त्री० दाढ़, बड़ेदांत ।

सं० दक-पु० पानी, रस ।

प्रा० दक्खन, दखन, दखिन-(सं० दक्षिण) पु० दक्षिणदिशा, २ हिंदुस्थान का दक्षिण भाग ।

सं० दक्ष-(दक्ष्=बाढ़ना) पु० ब्रह्मा का बेटा, एक प्रजापति का नाम, कहते हैं कि दक्ष ब्रह्मा के दहने हाथ के अंगूठे से पैदा हुआ था और उस के ६० बेटियां थीं जिन में से २७ तो चांदको ब्याही (वेही सत्ताईस नक्षत्र कहलाते हैं) और एक उस की बेटी सती महादेव को ब्याही थी और १३ कश्यप मुनिको ब्याही जो सब सृष्टि की माता थीं । और १० धर्मको ब्याही (एक बार दक्षने यज्ञ किया था उस में महादेव को नहीं बुलाया और सती

का निरादर किया इस लिये सती उस यज्ञ के कुंड में जल के मरगईं तब महादेव ने दक्षका शिर तोड़ डाला) २ एक मुनि का नाम, ३ महादेव के बैलका नाम, गु० चतुर, निपुण, प्रवीण, २ समर्थ।

सं० दक्षसावर्णि—पु० नववाँमनु, चौदह मनु में एक मनु।

सं० दक्षकन्या } (दक्ष+कन्या वा
दक्षसुता } सुता=बेटी) स्त्री० दक्षकी बेटी, सती, दुर्गा।

सं० दक्षिण-(दक्ष्=बढ़ना) गु० चतुर, प्रवीण, निपुण, २ दहना, ३ दक्षिणदिशा का, ४ खरा, सच्चा, पु० दक्खन, दक्षिणदिशा, २ दहना भाग, ३ सब नायिका में बराबर सनेह रखनेवाला नायक।

सं० दक्षिणा-(दक्ष्=बढ़ना) स्त्री० दान, ब्राह्मणको खिलाके कुछदेना, गुरुकी भेंट, २ दुर्गाकी एकसूरत।

सं० दक्षिणायन-(दक्षिण=दक्खिन दिशा की ओर, अयन=चाल वा जाना) पु० दक्षिणदिशाकी ओर सूर्य के जाने का समय जो सावन से पूस अथवा कर्क की संक्रांति से धन की संक्रांति तक रहता है।

प्रा० दखनी } (दक्षिण) गु०
दखिनी } दक्खिनका, दक्खिन का आदमी वा चीज।

प्रा० दगधना-(सं० दग्ध) क्रि० स० जलाना, २ सताना, छेड़ना, ३ सजादेना, धमकाना, डाटना, घुड़कना, ताड़ना करना।

प्रा० दगला-पु० रूईदार अंगरखा, रूई भरा अंगरखा।

सं० दग्ध-(दह्=जलना) स्त्री० पु० जलाहुआ, झुलसाहुआ, भस्म, ज्वलित, विप्लुष्ट, जलायाभया, भस्मन्त।

सं० दग्धिक-पु० दहीभात।

प्रा० दङ्गा-पु० झगड़ा, रौला, बलवा, हुल्लड़।

प्रा० दङ्गैत-(दङ्गा) गु० दंगा करने वाला, झगड़ालू, लड़ाक।

सं० दघ-(दह्=जलाना)पु० त्याग, हिंसा, नाश।

प्रा० दच्छ } पु० दक्ष शब्द को
दछ } देखो।

प्रा० दच्छिना } स्त्री० दक्षिणा
दछना } शब्द को देखो।

प्रा० दड़कना } क्रि० अ० फटना,
दरकना } चिरना, तड़कना।

प्रा० दड़ेड़ा-(सं० दृढ़) पु० मेहकी बड़ी झड़ी, भारी वर्षा, प्रचण्ड झड़, असाढ़की वर्षा।

प्रा० दढ़मुंडा-(दाढ़ी+मुंडा)गु० दाढ़ीमूंडाहुआ, बिनदाढ़ीका।

प्रा० दढ़ियल-(दाढ़ी) गु० लम्बी

दाढ़ीवाला।

सं० दण्ड-(दण्ड्=सज़ा देना वा दम्=वश करना वा शान्त करना) पु० लाठी, सोंटा, २ ताड़ना, सज़ा, शासन, जुर्माना, प्रकाण्ड, राजाओं का चौथा उपाय अर्थात् वध, दण्ड, फांसी, ३ एक घड़ी, साठपल का समय, ४ यमराज, ५ चक्राव्यूह, ६ इक्ष्वाकु राजा का पुत्र, ७ क़तल, ८ दमन।

सं० दण्डक-(दंड्=सज़ा देना) पु० एकराजाकानाम, एकछन्दकानाम।

सं० दण्डकारण्य- (दण्डक+अरण्य) दण्डक नाम राजा का देश, शुक्राचार्य अथवा भृगु मुनिके शाप से नष्ट होकर जंगल होगया) पु० हिन्दुस्तान के दक्षिण में दण्डक नाम वन जहां वनवास के समय श्रीरामचन्द्र कुछदिन रहेथे।

सं० दण्डदास-पु० शोक, गदा, आयुध, यम, किंकर, सज़ादेनेवाला।

सं० दण्डधर- (दण्ड+धर, धृ=धरना) क० पु० यमराज, कुलाल अर्थात् कुम्हार, लकुटधारी, राजा, दंडी, संन्यासी, द्वारपाल, सिपाही, आसाबरदार।

सं० दण्डनायक- पु० यमराज, मुलाजिमफौजदारी।

सं० दण्डपांशुल- पु० सिपाह, चौकीदार।

सं० दण्डपाशिक- क० पु० बधिक, फाँसी देनेवाला, जल्लाद।

सं० दण्डवत्-(दण्ड=लाठी, वत्=बराबर, अर्थात् लाठी के समान गिर कर प्रणाम करना) स्त्री० प्रणाम, नमस्कार।

सं० दण्डधात्री- स्त्री० फ़ौजदारी।

सं० दण्डादण्डी-(दण्ड=लाठी) स्त्री० लाठा लाठी, लाठी से लड़ना, गदायुद्ध।

सं० दंडी-(दण्डिन्, दण्ड=लाठी अर्थात् लाठी रखनेवाला) पु० एक प्रकार के संन्यासी जो हाथ में दण्ड रखते हैं, २ यमराज, ३ राजा, ४ द्वारपाल, ५ काव्यादर्श के बनानेवाले कवि का नाम, गु० लाठी रखनेवाला, लठैल, चोबदार।

सं० दतवन, दतौन (सं०दन्तधावन) पु० दतुन, दांतन, दांत साफ़ करने की लकड़ी।

सं०दत्त-(दा=देना) कर्म० पु० दिया हुआ, समर्पित, पु० वैश्यों का उपनाम, उर्फ़।

सं० दत्तक-(दा=देना) कर्म० पु० गोदलिया हुआ, ले पालक, दत्तक पुत्र=गोद लियाहुआ लड़का, पोष्य पुत्र, लेपालक, मुतबन्ना।

सं० दत्तात्रेय- पु० अत्रि ऋषिका पुत्र, विष्णु का अवतार भेद, बड़े ज्ञानी थे २४ गुरु किये।

सं० ददत्त-पु० दान देना, त्याग।

सं० दद्रू-पु० दाद रोग। फुलाव।

प्रा० ददोड़ा-पु० फोड़ा, गुमड़ा।

सं० दधि(दध्=रखना)पु० दही चक्का।

प्रा० दधिकांदौ-(सं० दधि+कर्द-म, दधि=दही, कर्दम=कीच) पु० श्रीकृष्ण के जन्म दिन अर्थात् जन्माष्टमी का उत्सव जिस में मनुष्य दही और हल्दी मिलाकर आपस में एक दूसरे पर डालते हैं और खेलते हैं जिससे कीच मच जाती है।

सं० दधीचि-(दध् वा धा=रखना) पु० एक ऋषि का नाम जिस ने अपने शरीर का हाड़ इन्द्र और सब देवताओं को दिया तब इन्द्रने उस का वज्र बना के वृत्रासुर को मारा। [त, नैनू।

सं० दधिसार-पु० मक्खन, नवनी-

सं० दनुज-(दनु कश्यपमुनि की स्त्री० और दक्षप्रजापति की बेटी, ज=पैदा होना) पु० दनु के बेटे, दानव, दैत्य, असुर, राक्षस।

सं० दन्त-(दम्=तोड़ना, वा वश करना) पु० दांत ३२ की संख्या।

सं० दन्तच्छद-(दन्त=दांत, छद्=ढकना) पु० होठ, ओंठ, ओष्ठ।

सं० दन्तधावन-(दन्त=दांत धाव्=धोना) पु० दांतुन, दँतवन।

सं० दन्तवेष्टन-(वेष्ट=लपेटना) पु० मस्कुर, मसूढ़ा।

सं० दन्तशठ-पु० कैथा, नींबू, नारंगी, करौंदा।

सं० दन्तालिका-(दन्त+अलिका अल्=भूषणकरना, रोकना) लगाम।

सं० दन्ती-(दन्त=दांत, अर्थात् जिसके बड़े दांत होते हैं) पु० हाथी, हस्ती, गज, गु० दन्तैल, दन्तीला।

प्रा० दन्तीला-(सं० दन्तुर, दन्त=दांत) गु० दांतवाला, दन्तैल, जिस के बड़े और ऊंचे दांत हों, शूकर, वृक सुअर, भेड़िया।

सं० दन्त्य-(दन्त) गु० जो दांतोंसे बोले जायँ, लृ ॡ त थ द ध न ल स ये अक्षर दन्त्य कहलाते हैं।

प्रा० दन्दनाना-क्रि० अ० आराम से रहना, चैन करना, गाजना, विराजना।

प्रा० दपट-(दपटना) स्त्री० दौड़, सपट, बाग छूट दौड़, घोड़े की बड़ी दौड़।

प्रा० दपटना-क्रि० अ० सपटजाना, झपटना, दौड़ना, टूट पड़ना, २ डाटना, धमकाना, झिड़कना, घुड़कना।

प्रा० दबकना-क्रि० अ० छिपरहना,

लुकजाना, घात में बैठना, २ डर-जाना।

प्रा०दबकजाना } दबकरहना } बोल० छिप रहना, लुक रहना, जी छिपाना, जी चुराना।

प्रा० दबंग-पु० कुशील, कुढंग, धृष्ट, मूढ़, निठुर, गँवार, जड़, मूर्ख, गधा, पशु।

प्रा० दबना-क्रि० अ० झुकना, नवना, चपना, सिकुड़ना, २ आधीन होना, डरना, ३ लजाना, ४ छिपरहना, दबकना।

प्रा० दबचलना } दबनिकलना } बोल० वश होना, आधीनहोना, डर जाना।

प्रा० दबजाना-बोल० चलाजाना, हटजाना, पीछे फिरना, हारजाना।

प्रा० दबमरना-बोल० कुचल जाना, चूर २ होना। [हौले।

प्रा० दबेपांव-बोल० धीमें धीरे,

प्रा० दाबना-(दबना) क्रि० स० दाबना, चापना, जीतना, २ तंग करना, ३ जबरदस्तीसे कराना, ४ डाटना, झिड़कना, ५ रोकना, थांमना, ६ नीचा करना, झुकाना, नवाना, ७ छिपाना, ८ जीतना, हराना, पराजय करना।

प्रा० दबामरना-बोल० कुचल डालना, चूर २ करना, २ हराना, जीतना।

प्रा० दबालेना-बोल० चढ़जाना, चढ़ाई करना, धावाकरना।

प्रा०दबाव-(दबाना)पु० दाब, चांप, २ जोर, पराक्रम अधिकार, ३ आधीनता।

प्रा० दबावमानना-बोल० धाकमानना, डरना, अदब करना।

प्रा० दबेल-(दबना) आधीन, वश में, पु० प्रजा, रइयत।

प्रा० दबोचना-क्रि० स० दबा डालना, दाबना।

सं० दम-(दम्=वशकरना, वा शांत करना) पु० इन्द्रियों को वश में करना, इन्द्रियों की इच्छाको रोकना, २ ताड़ना, सजा, ३ वशकरना।

सं० दमक-(दम्+अक) क० पु० वश करनेवाला, रोकनेवाला।

प्रा० दमक-(दमकना) स्त्री० चमक, झलक, शोभा, भड़क।

सं० दमघोष-पु० शिशुपाल का पिता, चंदेरी का राजा।

प्रा०दमकना-क्रि० अ० चमकना। झलकना। [की कल।

प्रा० दमकना-पु० आग बुझाने

प्रा० दमड़ा-(सं० द्रम्म) पु० धन, दौलत, विभव, सम्पत्ति।

प्रा० दमड़ी-(सं० द्रम्म) स्त्री० पैसे का आठवांभाग।

प्रा० दमड़ीकेतीनतीनहोना—बोल० उजड़ना, नष्टहोना, सत्यानाशहोना, बरबाद होना।

सं० दमन-(दम्=वश करना, वा शांतकरना) पु० वशकरना, नाश करना, २ एक फूल का नाम।

सं० दमनीय-(दम्+अनीय) क्र० पु० दाबने के लायक, तोड़ने योग्य।

सं० दमयन्ती-(दम्=वशकरना) स्त्री० नल राजा की पत्नी, विदर्भ देश के राजा भीमसेन की बेटी।

फ़ा० दमामा-पु० नगारा, धौंसा, डंका।

सं० दमी-(दम्+ई) क्र० पु० योगी, इन्द्रियजित्।

सं० दम्पति-(जाया=पत्नी, पति=भर्त्तर, यहां जाया को दम् आदेश होजाता है) पु० स्त्री पुरुष, जोड़ा, जायापति।

सं० दम्भ-(दम्भ्=छल करना) पु० पाखण्ड, कपट, छल, २ घमंड, दर्प, अहंकार, जवान बैल।

सं० दम्भी-(दम्भ) गु० पाखंडी, कपटी, छली, २ घमंडी, अभिमानी।

सं० दया-(दय्=देना, पालना) स्त्री० कृपा, करुणा, किसी के दुःख दूर करने की इच्छा, मेहरबानी, रहम।

सं० दयायुत-(दया=कृपा, युत=मिला हुआ) गु० दयालु, कृपालु, दया करने वाला।

प्रा० दयालु-(सं० दयालु, दया) गु० कृपालु।

सं० दयावन्त, दयावान्-(दया=कृपा, वत्=वाला) गु० कृपालु, दयालु।

सं० दयित-पु० प्रिय, पति, खाविंद।

सं० दयिता-(दय्=देना वा पालना) स्त्री० पत्नी, भार्या, स्त्री, प्रिया, प्यारी।

सं० दर-(दृ=फाड़ना, वा डरना) पु० छेद, गुफ़ा, खोह, खड्डा, २ डर, ३ शंख, गु० थोड़ा।

प्रा० दर-पु० मोल, भाव, दाम।

सं० दरद-पु० म्लेच्छ जाति, २ भयानक, भय, ३ हिंगुल, हींग, ४ शिंगरफ़, मुर्दाशंख, पारा, स्त्री० पीड़ा, त्रास, भय।

फ़ा० दरबार-पु० कचहरी, सभा।

प्रा० दरदरा-गु० मोटा पीसाहुआ, दलिया, अधपीसा।

प्रा० दरस-(सं० दर्श,) पु० दर्शन, देखना, दीठ।

सं० दरा, दरी-(दृ=फाड़ना) स्त्री० गुफ़ा, खोह, कन्दरा।

प्रा० दरांती-(सं० दात्र, दा=टुकड़े करना) स्त्री० हँसुवा, हँसिया।

प्रा० दरार-(सं० दृ=फाड़ना) स्त्री० फटी हुई जगह, दरज, शिगाफ़, चीर, फटा, दरका, फाड़।

सं० दरिद्र-(दरिद्रा=दुर्दशा होना) गु० कंगाल, निर्धन, रंक, दीन, दुःखी, गरीब, मुफ़लिस।

सं० दरिद्रता-(दरिद्र) भा० स्त्री० कंगालपन, निर्धनता, ग़रीबी, दीनता, दुःख, दुर्दशा।

प्रा० दरिद्री-(सं० दरिद्री) गु० कंगाल, निर्धन, दीन, दुःखी, ग़रीब, दरिद्र।

सं० दर्दुर-(दु=दुःख देना (कानों को शब्द करके) वा दृ=फाड़ना) पु० दादुर, मेंडक, बेंग, भेक, २ मेघ, ३ एक बाजे का नाम, ४ एक पहाड़ का नाम।

सं० दर्प-(दृप्=घमंड करना) पु० घमंड, अभिमान, अहंकार, दाप ग़रूर।

सं० दर्पण-(दृप्=चमकना) पु० काच, आईना, आरसी, मुकुर।

सं० दर्पित-क० पु० अहंकारी, घमण्डी, मग़रूर।

सं० दर्वी-(दृ=फाड़ना) क० स्त्री० कलछुली, कर्छी, चमची डोई।

सं० दर्भ-(दृभ्=गाथना, बांधना) पु० डाभ, कुशा, एकप्रकार की घास।

प्रा० दर्राना-क्रि० अ० (निधड़क और बिनठहरे सीधा चलाजाना।

सं० दर्श-(दृश्=देखना) पु० दर्शन, देखना, दृष्टि, २ अमावस्या जिस दिन चांद और सूर्य एक जगह देखे जाते हैं।

सं० दर्शक-(दृश्=देखना) क० पु० दिखानेवाला, पु० द्वारपाल, पौरिया।

सं० दर्शन-(दृश्=देखना) भा० पु० देखना, दृष्टि, दीठ, २ भेंट, एक दूसरे को देखना, ३ रूप, आकार, दिखाव, ४ आंख, ५ सपना, ६ दर्पण, ७ न्यायआदि छः शास्त्र, (१ न्याय इसका आचार्य गौतमऋषि, २ वैशेषिक इसका आचार्य कणाद मुनि, यह बहुत बातों में न्याय से मिलता है और बहुतमें नहीं मिलता, ३ मीमांसा इसका आचार्य जैमिनि ऋषि, इस में यज्ञ, व्रत, तप, दान, और वेद पढ़ना आदि कर्मों के करने से मुक्ति पाना लिखा है, ४ वेदान्त इसका आचार्य व्यासदेव, ५ सांख्य, इसका आचार्य कपिलमुनि इस मतके माननेवाले सृष्टि का कोई कर्त्ता नहीं मानते और कहते हैं कि संसार नित्य है और कोई इसका बनानेवाला नहीं है, ६ पातंजल इसका आचार्य पतंजलिमुनि, यह और सब बातों से सांख्य से मिलता है पर सांख्यवाले सृष्टिका कोई

कर्त्ता नहीं मानते, और इसमें ईश्वर को सृष्टि का कर्त्ता माना है)।

प्रा० दर्शनी—(सं० दर्शनीय=देखने योग्य) स्त्री० वह हुंडी जो देखनेही से पट जाय, २ भेंट, चढ़ावा, गु० सुन्दर, सुडौल, रूपवान, मनोहर, देखने योग्य। [मिनी।

सं० दर्शनप्रतिभू—पु० हाजिर जा-

सं० दर्शन्त—भा० पु० देखना, देख पड़ना।

सं० दल—(दल्=फाड़ना वा टुकड़े२ करना) पु० वृक्ष का पत्ता, २ बड़ी सेना, ३ ढेर, समूह, ४ खंड, टुकड़ा, ५ कीचड़, ६ आधा, दलदार, गु० मोटा, गाढ़ा। [झलक।

प्रा० दलक—(दलकना) स्त्री० चमक,

प्रा० दलकना—क्रि० अ० चमकना, झलकना, झझकना, थरथराना।

प्रा० दलदल—(सं० दल=कीचड़) पु० कीचड़, पांका, कांदो, धसान, धसाव, पंक।

सं० दलन—(दल्=टुकड़े करना) भा० पु० टुकड़े २ करना, मर्दन, नाश, गु० नाश करनेवाला, टुकड़े करनेवाला, मर्दन करनेवाला।

प्रा० दलना—(सं० दलन) क्रि० स० मोटा पीसना, भुरभुराना, दो टूक करना (जैसे दाल को)।

सं० दलनी—स्त्री० दुर्मुट, लोहकी मुगरी, लोह का मुगदर।

प्रा० दलबादल—(सं० दलवारिद, दल=सेना वा समूह, वारिद=बादल) पु० बादलोंकी सेना, बादलोंका समूह, २ बड़ी सेना, ३ बड़ा डेरा।

प्रा० दलमलना } (सं० दलन) क्रि० स० पीस डालना, मींजना, तोड़ डालना, मर्दन करना।
दलमसलकरना }

सं० दलित—(दल्=इत) कर्म० पु० मर्दित, रौंदा गया, फाड़ागया।

प्रा० दलिद्र—(सं० दारिद्र) भा० पु० कंगालपन, निर्धनता, ग़रीबी, दीनता, दुःख, दुर्दशा।

प्रा० दलिद्री—(सं० दारिद्री) गु० कंगाल, निर्धन, दीन, दुःखी, ग़रीब।

प्रा० दलिया—(सं० द्वि=दल, द्वि=दो दल=टुकड़ा) पु० दला हुआ अनाज।

प्रा० दलेंती—(सं० दलयती) स्त्री० चक्की, जांती।

सं० दव—(दु=जलना, वा पीड़ा होना) पु० वन, जंगल, २ जंगलकी आग, ३ पीड़ा, दुःख।

सं० दवाग्नि—(दव+अग्नि) स्त्री० वन की आग।

प्रा० दवारी—(सं० दावानल) स्त्री० वन की आग।

सं० दविष्ठ—पु० बहुत दूर।

सं० दवीयस—पु० दूर।

सं० दश—गु० दश, पांच के दूने, काटना, अचल।

सं० दशकण्ठ—(दश+कण्ठ) पु० रावण, दशकन्धर, दशानन।

सं० दशकन्धर—(दश+कन्धर) पु० रावण। [वण।

सं० दशग्रीव-(दश+ग्रीवा) पु० रा-

सं० दशन—(दंश=काटना) पु० दांत, दन्त, २ कवच, ३ शिखर।

सं० दशम—(दश) गु० दशवां।

सं० दशमहाविद्या—(दश, दस महाविद्या=महामाया) स्त्री० दस प्रकार की दुर्गा, जैसे १ काली, २ तारा, ३ षोड़शी, ४ भुवनेश्वरी, ५ भैरवी, ६ छिन्नमस्ता, ७ धूमावती, ८ बगला ९ मातङ्गी, १० कमला।

सं० दशमलव—(दशम+लव) पु० दशमांश, दशवां हिस्सा, कसूर अशारिया। [तिथि।

सं० दशमी—(दशम) स्त्री० दशवीं

सं० दशमुख-(दश+मुख) पु० रावण।

सं० दशमुखान्तक-(दशमुख=रावण, अन्तक=नाशकरनेवाला) पु० श्रीरामचन्द्र।

सं० दशरथ (दश (दसों दिशा में) रथ (रथकी गति है जिसकी) अर्थात् जिसने दसों दिशा को जीतलिया) पु० अयोध्या का राजा और श्री रामचन्द्र का बाप।

प्रा० दशशीस—(सं० दश=दस, शीर्ष=शिर) पु० रावण, दशकन्धर, दशानन।

सं० दशहरा—(दश दशजन्म के पाप, हृ=हरना) पु० जेठ सुदी दशमी जो गङ्गा का जन्म दिन है, इस दिन जो कोई गङ्गा में अन्हाता है उसके दश जन्म के अथवा दशप्रकार के पाप दूर होजाते हैं, २ (दश (दश मुख) रावण, हृ=नाशकरना) कुंवार सुदी दशमी जिस दिन रामचन्द्र रावण को मारने के लिये चढ़े थे इस लिये इस को विजयदशमी भी कहते हैं।

सं० दशा—(दंश=काटना, विभाग करना) स्त्री० अवस्था, हालत, गति, दशा दशप्रकार की है १ गर्भवास, २ जन्म, ३ बालकपन, ४ लड़कपन, ५ किशोर, ६ जवानी, ७ अधबुढ़ापा, ८ बुढ़ापा, ९ प्राणरोध अर्थात् मरने के समय की अवस्था, १० नाश वा मरना।

सं० दशांश-(दश+अंश) गु० दशवां भाग, दशवां हिस्सा।

सं० दशानन—(दश+आनन पु० रावण, दशमुख, दशकंठ, दशकंधर, दशग्रीव, दशशीस।

प्रा० दस—(सं० दश) गु० पांच का दूना।

प्रा० दशहरा—पु० दसहरा शब्द को देखो।

प्रा० दसौंद्वार—(सं०दशद्वार)पु० व०व० शरीरके दश रस्ते, २आंखें, २कान, २ नाकके नथुना, सातवां मुंह, आंठवां लिंग इन्द्री, नवां गुदा, दशवांब्रह्मांड अर्थात् शिरका विचला भाग, संस्कृत और हिन्दी के बहुत से ग्रंथों में नौ द्वारही लिखेहैं वहां दशवां द्वार ब्रह्मांड नहीं माना है, नवद्वार शब्दको देखो।

प्रा० दसौंधी-पु०भाट,राय, स्तावक, प्रशंसक।

सं० दस्यु—(दस=देखना,चुराना) पु० शत्रु, चोर, तस्कर, ३ अग्नि, ४खल, ५ बड़ा साहसी, ६ लुटेरा।

सं० दस्र-पु० अश्विनीकुमार, गधा-पशु स्त्री० अश्विनीनक्षत्र।

प्रा० दह—(सं० ह्रद) पु० बहुत गहरा पानी, गहराव, भंवर, (जैसे कालीदह)।

प्रा० दहकना—(सं०दहन)क्रि० अ० जलना,२ खेद करना।

प्रा० दहड़दहड़-(सं०दहन) क्रि० वि० बल से जोर से, वेग से, प्रचंडता से।

प्रा० दहड़दहड़जलना-बोल० बहुत वेग से जलना, बहुत जोर से आग का लहकना।

सं० दहन-(दह=जलाना) भा०पु० आग, अग्नि, आगी, २ जलाना, जलन, दाह, ३ चित्रक वृक्ष, गु० जलानेवाला। [जलना।

प्रा० दहना—(सं०दहन) क्रि० अ०

प्रा० दहना }
दहिना } (सं० दक्षिण) गु० दाहिना, दक्षिण।

सं० दहर (दह=जलाना) पु० सूक्ष्म,ह्रस्व,२बालक,३मूषक,चूहा, ४ छोटाभाई,५बहन६हृदय, आकाश।

प्रा० दहलना—क्रि० अ० कांपना, डरना।

प्रा० दहाड़ना-क्रि० अ० गरजना।

प्रा० दहाना-(सं० दहन) क्रि० स० जलाना, २ बोराबन्दी।

प्रा० दही—(सं० दधि) पु० जमा हुआ दूध।

प्रा० दहेंड़ी—(सं० दधि=हण्डी) स्त्री० दही की हांडी।

प्रा० दाई—(सं० दायक) क० पु० देनेवाला, (जैसे सुखदाई)।

प्रा० दाई—(फा० दायह) स्त्री० धाय, दूध पिलानेवाली, २ दाई, जनाई,३ दासी, चकरानी, लौंड़ी।

प्रा० दाऊ—पु० बड़ा भाई, २ बाप, ३ बलदेवजी का नाम।

प्रा० दाऊदी—(अरबी दावदी)स्त्री० एक झाड़ का अथवा उसके फूल

का नाम, २ एक तरहकी आतशबाजी ३ सफेदी।

प्रा० दांड—(सं०दण्ड) पु०सज़ा, ताड़ना, दंड, जुर्माना, ३वटी, ४डांड।

प्रा० दांत—(सं० दन्त) पु० दन्त, दशन, रदन।

प्रा० दांतउंगलीकाटना—बोल० अचंभे में आकर दांतों से उंगली काटना, अचरज करना, विस्मय करना।

प्रा०दात कचकचाना-बोल०खीस, निकालना, खिसियाना, दांत पीसना।

प्रा० दांतकटकटाना—बोल० दांत पीसना, किचकिचाना।

प्रा० दांतकाटीरोटीखाना—बोल० किसीका जीसे मित्र होना, दिलीदोस्त होना, पक्की मित्राईहोना।

प्रा० दांतखट्टे करना—बोल० मन तोड़ना, मन मारना, हरा देना, वे हिम्मत करना, सताना, क्रोधित करना।

प्रा० दांततलेउंगलीदवाना वा काटना—बोल० हका बका रह जाना, भैचक रहना, अचंभेमें होना, मुतहैयर होना।

प्रा० दांतनिकालना-बोल०हंसना, मुसकुराना, २ अपनी अयोग्यता और बेबशी जतलाना, अथवा मानना।

प्रा०दांतपरचढ़ाना—बोल० किसी की भलाई अथवा नामवरी को मिटाना, कलंक लगाना।

प्रा० दांतपीसना—बोल०दांत कड़कड़ाना, खिसियाना, दांत कचकचाना, कटकटाना, क्रोध करना, खीस निकालना।

प्रा० दांतबजना या बाजना—बोल० टेंटें करना, चेंचें करना, बकबक करना, झगड़ना।

प्रा० दांतरखना,या होना किसी पर—बोल० किसी वस्तुको बहुतही बहुत चाहना, २ अवज्ञा करना, तुच्छ जानना।

प्रा० दांतुन—(सं० दन्तधावन) पु० दतवन, दतून।

प्रा० दाताकिलकिल—(सं० दन्त किलकिला) स्त्री०झगड़ा, लड़ाई।

प्रा० दांव—पु० घात, जाल, पेंच, २ अवसर, मौका, गौं, बारी, समय, ३ कुश्ती में पेंच।

प्रा० दांवचलना—बोल०बररहना, जीतना, सरस होना, बढ़ चलना, दाल गलना।

प्रा० दांवचलाना—बोल० काबू चलाना, गौं पाना, चोट करना।

प्रा० दांवपकड़ना—बोल० कुश्ती करना, कुश्तीलड़ना, पेंच करना, दांव करना।

प्रा० दांवबैठना—बोल० घात में बैठना, दबकना।

सं० दाक्षायणी—स्त्री०सती, पार्वती, अश्विन्यादि नक्षत्र,दंतीवृक्ष, जमा, लगोटा का वृक्ष।

सं० दाक्षाय्य—पु० गृद्धपक्षी।

सं० दाक्षिण—भा०पु०कथन,उपाय, अधिकार, दक्षिण देशीय।

सं०दाक्षिणात्य—पु० नारियलवृक्ष, दाक्षिणीय।

सं० दाक्षिण्य—भा० पु० उदारता, होशियार, मददगार, अनुकूल।

प्रा० दाख—(सं०द्राक्षा) स्त्री०अंगूर, मुनक्का, किशिमश।

प्रा०दाग़—(फा०दाग़ और सं०दग्ध) पु० चिह्न, कलंक, दोष, गर्म लोहे से जलने का चिह्न।

प्रा० दाग़चढ़ाना, या लगाना—बोल० कलंक लगाना, बदनाम करना।

प्रा० दाग़देना—बोल०गर्म लोहे से चिह्न करना, गुल देना, दागना, जलाना, २ दोष लगाना, कलंक लगाना।

प्रा० दाग़लगना—बोल० बदनाम होना, अपकीर्त्ति होना।

प्रा०दाग़लाना-बोल०कलंकलगना, तोहमत लगना।

प्रा० दाग़ना—क्रि० दाग देना,गुल देना, गर्म लोहे से चिह्न करना, २ बंदूक अथवा तोप छोड़ना।

सं० दाघ—पु० दाह, जलना।

सं० दाडक—पु०दांत,दाढ़, दंष्ट्रा।

सं० दाड़िम, दालिम—(दल्=फटना) स्त्री० अनार।

प्रा० दाढ़ (सं० दाढ़ा, दा=काटना, दंष्ट्रा, दंश्=काटना) स्त्री० बड़े दांत, पिछलेदांत, पीसने के दांत।

प्रा० दाढ़ी—(सं० दाढ़िका, दाढ़ अर्थात् दाढ़ के पास स्त्री० ठोढ़ी पर के बाल।

प्रा० दाढ़ीबनाना या मुड़ाना—बोल० हजामत बनाना,खतबनाना, क्षौरकराना।

सं० दाता—(दा=देना) क०पु० देने वाला,दानी,उदार,दानशील,दयालु,हितकारी,सखी,फ़ैयाज़।

प्रा० दातार—(सं० दातृ, दा=देना) क० पु० देनेवाला, दाता।

सं० दात्र—(दा=काटना, छेदना)पु० हँसिया, बसूला।

प्रा० दाद—(सं० दद्रु, दद्=रखना, वा दृ=फाड़ना)पु०दिनाय,चकवाई।

सं० दाद—पु० दान, देना।

प्रा० दादा—पु०बापका बाप, पितामह, २ बड़ा भाई।

प्रा० दादी—स्त्री० बाप की मा।

प्रा० दादुर—(सं०दर्दुर)पु०मेंडक, भिभकुर, बेंग।

प्रा० दादू—पु० एक बड़ा साधु जिसने एक नया मत चलाया जो दादू पंथ के नाम से प्रसिद्ध है ।

प्रा० दादूपंथी—पु० दादू के धर्म को माननेवाला ।

प्रा० दाधना—(सं० दग्ध) क्रि० अ० दग्धना, जलना, दहना ।

सं० दान—(दा=देना) पु० देना, त्याग, पुण्यार्थ वा नामके लिये देना, २ पुण्य, खैरात, भीख, दक्षिणा, ३ भेंट, समर्पण, अर्पण, ४ गजमद ।

सं० दानपत्र—पु० हिबानामा ।

सं० दानव—(दनु) पु० दनुके बेटे दनुज, असुर, दैत्य, राक्षस ।

सं० दानशील—(दान=देना, शील=स्वभाव) गु० दान करने का जिसका स्वभाव हो, दानी, दाता, उदार ।

सं० दानशौण्ड—पु० बड़ादानी, दान शूर, बहुप्रद, बड़ादाता ।

प्रा० दाना—(फ़ा० दाना) पु० अनाज, अन्न, बीज ।

फ़ा० दाना—गु० बुद्धिमान, अक़्लमन्द, ज्ञाता ।

प्रा० दानापानी—बोल० अन्नजल, संयोग, पु० खाना पीना ।

सं० दानी—(दा=देना) गु० दाता, देनेवाला, उदार, दानशील, पुण्यात्मा, फ़ैयाज़, परोपकारी ।

सं० दान्त—(दम्=दबाना) पु० जितेन्द्रिय, तपी ।

सं० दान्ति—(दम्+ति) भा० स्त्री० इन्द्रिय निग्रह, दमन, इन्द्रियवश करना, नफ़्सकुशी ।

प्रा० दाबना—(दबना) क्रि० स० दबाना, दमन करना, चापना, २ निचोड़ना ।

प्रा० दाबरखना—बोल० छिपालेना, चुरालेना, २ पकड़ रखना, दबाउ रखना ।

प्रा० दाप—(सं० दर्प) पु० घमंड । अभिमान, अहंकार, गरूर, शेखी ।

सं० दाम—(दामन्, दो=काटना) स्त्री० रस्सी, जेवरी, डोरी, २ माला ।

प्रा० दाम—पु० एक पैसेका पचीसवां भाग, २ मोल, भाव, क़ीमत ।

सं० दामाञ्चन—(दाम+अञ्चन=बांधना) पु० घोड़े की अगाड़ी पिछाड़ीकी रस्सी ।

प्रा० दामिनी—(सं० सौदामिनी) स्त्री० बिजली, तड़ित्, कौंधा, बर्क़ ।

सं० दामोदर—(दामन=रस्सी, उदर=पेट अर्थात् जिसके पेटपर रस्सी बांधी गई हो, श्रीकृष्ण ने एक बार दूध दही के बरतन फोर डालेथे तब उनकी माता यशोदा ने उनके पेट पर रस्सी बांधी थी तब दामोदर ऐसा नाम हुआ वा दामन्=लोक

उदर=पेट, अर्थात् जिस के पेट में बहुत से लोकहैं जैसे "दामानिलोक नामानि तानियस्योदरान्तरे । तेन दामोदरो देव") पु० श्री कृष्ण का नाम, विष्णु ।

सं०दाम्पत्यमुक्तिपत्र–पु० तलाक-नामा, स्त्री और पुरुष के छुड़ौती बोलने का पत्र ।

सं०दाय–(दा=देना) पु० बापदादों का धन, पैत्रिकधन, बपौती, २ दान, ३ दायजा, यौतुक ।

सं०दायक–(दा=देना) क० पु० देनेवाला, दानी, दाता, उदार, दानशील ।

प्रा०दायजा–(सं०दाय)पु० दहेज, दैजा, यौतुक ।

सं०दायभाग–(दाय+भाग)पु० बाप दादों के धनका हिस्सा, पैत्रिक धनका विभाग, २एकग्रन्थका नाम ।

सं०दायाद–(दाय=पैत्रिक धन, आ+दा=लेना) पु० बेटा, पुत्र, २ स्वकुटुम्बी, नातेदार, रिश्तेदार, भाईबंध, ३ उत्तराधिकारी, वारिस ।

सं०दार दारा–(दॄ=फाड़ना, जो भाइयों के सनेह को घटा देती है) स्त्री० भार्या, पत्नी, जोरू, स्त्री, जाया ।

संदारक–(दॄ=फाड़ना, भेदना) पु० विष्णु के सारथी का नाम, २ बालक, ३ सुअर, क० फाड़ने वाला भेदक, काटने वाला ।

सं०दारकर्म–पु० विवाह, ब्याह ।

प्रा०दारचीनी–(सं०दारु=लकड़ी, चीनीय चीन देशकी) स्त्री०दालचीनी, एकपेड़की मसालेदारछाल ।

सं०दारण–भा० पु० भेदन, बिदारण, कर्तन, काटना ।

सं०दारद–पु० विष भेद, २ पारा, ३ शिंगरफ, समुद्र ।

सं०दारिका–(दारक=बालक) स्त्री० बेटी, पुत्री, लड़की, कन्या ।

प्रा०दारिद–(सं० दारिद्र) पु० दरिद्रता, कंगालपन, दीनता ।

सं०दारिद्र दारिद्रा–(दरिद्रा=दुर्दशाहोना) पु०कंगालपन, निर्धनता, गरीबी, दीनता, दुःख, दुर्दशा ।

सं०दारु–(दॄ=फटना वा फाड़ना) स्त्री० लकड़ी, काठ, काष्ठ, २ देवदारु वृक्ष ।

सं०दारुक–(दॄ=फाड़ना) पु० श्री कृष्ण के सारथी का नाम, २ देवदारु वृक्ष, ३ काठ, लकड़ी, स्त्री० कठपुतली ।

सं०दारुगर्भा–स्त्री० गुड़िया, पुत्तलिका, कठपुतली ।

सं०दारुण–(दॄ=फाड़ना, मनको, वा डराना) गु० भयानक, भयं-

कर, डरावना, विकट, कराल, कठिन, कठोर, पु० भयानक रस, रौद्ररस, २ चित्रक वृक्ष ।

सं०दारुहस्तक—पु० काष्ठ का चिमचा, काठकी कलछली, करछी ।

प्रा०दारू—स्त्री० मदिरा, मद, शराब, २ बारूत, बरूद ।

प्रा०दारूड़ा } पु० मदिरा, मद,
दारूड़ी } स्त्री०शराब, दारू ।

सं०दाल—(दल्=टुकड़ेकरना) स्त्री० दले हुये मूंग, चने, उरद, मोठ, मसूर, अरहरआदि, दलहन, दाली ।

प्रा०दालगलनी, किसी की—बोल० सरस होना, वर रहना, जीतना, गठाव गांठना, डौल बांधना, युक्ति करना, काम बनाना ।

प्रा०दालिद्र—(सं० दारिद्र) भा० पु० कंगालपन, गरीबी, निर्धनता, दीनता, दुःख, दुर्दशा ।

सं०दाव—(दु=जलाना) पु० जंगल, वन, २ वनकी आग, ३ गर्मी, पीड़ा, सन्ताप ।

सं०दावन—भा० पु० पीड़न, नाशन, दाबना, दबाना ।

सं०दावाग्नि } (दाव=जंगल,
दावानल } अग्नि वा अनल= आग) स्त्री० वन की आग, जंगल की आग ।

सं०दाश—(दाश्=देना जिस को दरमाहा आदि देतेहैं) पु० नौकर, सेवक, २ (दश्=काटना, मारना, जो मछलियों को मारता है) मल्लुवा, धीवर ।

सं०दाशरथ—(दशरथ) पु० दशरथ राजा के बेटे श्रीरामचन्द्र ।

सं०दाश्व—पु० दानी, दाता ।

सं०दास—(दास्=देना जो अपनी आत्मा को देताहै अथवा जिसको धन आदि देते हैं) पु० नौकर सेवक, किंकर, टहलुवा, २ शूद्र, ३ शूद्रों का उपनाम ।

सं०दासी—(दास) स्त्री० लौंड़ी, बांदी, चेरी, शूद्रा, पीत झंडी, वेंदी ।

सं०दासेय—पु० दासी पुत्र, सेवक, गुलाम ।

सं०दाह } (दह्=जलाना) भा० पु०
दाहन } जलाना, जलन, ताप, राख करना, भुलसाव ।

प्रा०दाहदेना—बोल० मुर्दाजलाना ।

सं०दाहक—(दह्=जलाना) क० पु० जलानेवाला, पु० चित्रक वृक्ष ।

प्रा०दाहना—(सं० दाहन) क्रि० स० जलाना ।

प्रा०दाहना } (सं० दक्षिण) गु०
दाहिना } दहना, दक्षिण, दहिना ।

सं०दिक्पति } (दिश=दिशा, पति,
दिक्पाल } राजा, वा पाल=

पालनेवाला)पु० दिशाओंके राजा, (श्लोक) इन्द्रोवह्निःपितृपतिर्नैर्ऋतो वरुणो मरुत् । कुबेर ईशःपतयः पूर्व्वादीनांदिशांक्रमात् जैसे १ पूर्व का इन्द्र, २ अग्निकोण का अग्नि, ३ दक्षिण का यमराज, ४ नैर्ऋत्यकोणका नैर्ऋत, ५ पश्चिमका वरुण, ६ वायव्यकोण का पवन, ७ उत्तर का कुबेर, ८ ईशानकोणका महादेव, ९ ऊपरकी दिशाका ब्रह्मा, १० नीचे की दिशा का अनन्त वा विष्णु—अथवा(श्लोक)सूर्यःशुक्रः क्षमापुत्रः सैंहिकेयः शनिः शशी । सौम्यस्त्रिदशमंत्री च पूर्वादीनामधीश्वराः १ पूर्वका दिक्पति सूर्य, २ अग्निकोण का शुक्र, ३ दक्षिण का मंगल, ४ नैर्ऋतकोणका राहु, ५ पश्चिम का शनैश्वर, ६ वायव्य कोण का चांद, ७ उत्तरका बुध, ८ ईशानकोण का बृहस्पति ।

सं० दिक्शूल } दिशाशूल } (दिश वा दिशा= ओर,शूल=कांटा, वा दुःख) पु० वह दिशा जिसतरफ़ किसी विशेष दिनको यात्रा करना अशुभहै(श्लोक)शनौचन्द्रेत्यजेत्पूर्वां दक्षिणाख्यांदिशंगुरौ। रवौशुक्रेपश्चिमां च बुधेभौमेतथोत्तराम् ॥ शनैश्वर और सोमवार को पूर्व में बृहस्पति को दक्षिण में रविवार और शुक्रवार को पश्चिम में बुधवार और मंगलवार को उत्तर में दिशाशूल होता है ।

प्रा० दिखलाना } दिखाना } (देखना) क्रि० स० बताना, बुझाना, बतलाना, समझाना, जताना, प्रकाशकरना, प्रकटकरना, लखाना, बुझाना, दर्शाना ।

प्रा० दिखलाईदेना } दिखाईदेना } बोल० जान पड़ना, देख पड़ना, मालूम होना ।

प्रा० दिखाऊ—(दिखाना) गु० देखने योग्य, सुन्दर, सजीला, सुहावना, रूपवान् ।

सं० दिगन्त-(दिक्+अन्त) पु० दिशा का अन्त । [आसमान ।

सं० दिगन्तराल- पु० आकाश,

सं० दिगम्बर-(दिक्=दिशा वा शून्य, अम्बर=कपड़ा, अर्थात् जिस के दिशाही कपड़ा है) गु० नंगा, नग्न, वस्त्रहीन, पु० शिवका नाम, २ बौद्धमत का अथवा जैनमत का भिखारी ।

सं० दिग्गज-(दिक्=दिशा, गज= हाथी) पु० दिशाओं के हाथी, दिग्गज कहाते हैं । वे आठहैं (श्लोक) ऐरावतः पुण्डरीको वामनः कुमुदोऽञ्जनः । पुष्पदन्तः सार्वभौमः सुप्रतीकश्च दिग्गजाः ॥

१ ऐरावत, २ पुण्डरीक, ३ वामन, ४ कुमुद, ५ अञ्जन, ६ पुष्पदन्त, ७ सार्वभौम, ८ सुप्रतीक ।

सं० दिग्ध-पु० विषलपेटा बाण, २ अग्नि, ३ स्नेह, ४ लेप, ५ लिप्त ।

सं० दिग्विजय-(दिक्=दिशा, विजय=जीत) स्त्री० चारों दिशा का जीतना ।

प्रा० दिग्गी } दिघी } (सं० दीर्घिका, दीर्घ=लंबा) स्त्री० लंबा पोखरा, तालाब ।

सं० दिति-(दो टुकड़े करना) स्त्री० दैत्यों की मा,—दक्षप्रजापति की बेटी और कश्यपमुनिकी स्त्री ।

सं० दित्सा-(दा=देना) भा० स्त्री० दानेच्छा, देनेकी इच्छा ।

सं० दिदृक्षा-स्त्री० देखने की इच्छा ।

सं० दिन (दो=नाश करना, अंधेरा को) पु० दिवस, दिवा, वासर, घस्र ।

प्रा० दिनकाटना-बोल० दुःख से समय बिताना ।

प्रा० दिनकोदिन रातकोरात न जानना-बोल० शोच में अथवा काम में डूब जाना ।

प्रा० दिनखुलना-बोल० भागजागना, दुःख के दिन चले जाना और सुख के दिन आना, दिन फिरना, बढ़ती होना, फलना फूलना ।

प्रा० दिनगँवाना-बोल० असावधानीसे अथवा वृथा समयबिताना ।

प्रा० दिनचढ़ना-बोल० दिन आना, दिन बढ़ना, २ स्त्रियों के कपड़ों से होने का समय बढ़ जाना ।

प्रा० दिनचढ़ाना-बोल० किसी काम को देर से शुरूअ करना ।

प्रा० दिनढलना-बोल० दिन घटना, दिन पलटना ।

प्रा० दिनधौले-बोल० दिनदोपहर, दिन दिया । [दुःख पड़ना ।

प्रा० दिनपड़ना-बोल० दुःखआना,

प्रा० दिनफिरना-बोल० क़िस्मत खुलना, भाग जागना, बढ़ती होना, फलना फूलना ।

प्रा० दिनबदिन } दिनादिन } बोल० हर एक दिन, प्रत्येक दिन, प्रतिदिन ।

प्रा० दिनभरना-बोल० दुःख और कष्ट में समय बिताना ।

प्रा० दिनमुँदना-बोल० दिन छिपना, सूर्य्य अस्त होना, सूर्य्य छिपना ।

सं० दिनकर-(दिन, कर=करनेवाला, कृ=करना, वा कर=किरण जिसकी किरण दिनमें दिखाई देती है) पु० सूर्य्य, रवि । [सूर्य्य ।

सं० दिनमणि-(दिन+मणि) पु०

सं० दिनमान-(दिन, मान=मापना)

पु० दिनका नाप, दिनका परिमाण ।

प्रा० दिनमुख-पु० प्रातःकाल, प्रभात।

प्रा० दिनाई-स्त्री० दाद ।

सं० दिनान्त-(दिन+अन्त) पु० दिनका पूरा होना, सांझ, सन्ध्या, सायंकाल, शाम होना ।

सं० दिनेश-(दिन+ईश) पु० सूर्य्य, दिनकर, दिनपति ।

प्रा० दिया-(सं० दीप) पु० दीवा, दीपक, चिराग़ २ (देना) क्रि० स० देना, देदिया ।

सं० दिलीप-पु० रघुराजा का पिता ।

सं० दिव-(दिव्=खेलना, चमकना, चाहना) पु० स्वर्ग, आकाश ।

सं० दिवस, दिवा (दिव्=खेलना, चमकना, वा व्यवहार करना) पु० दिन, बासर, रोज़ ।

सं० दिवाकर-(दिवा=दिन, कर=करनेवाला) पु० सूर्य, भानु, रवि, दिनेश, दिनकर ।

सं० दिवान्ध-(दिवा=दिन, अन्ध=अन्धा) गु० दिनमें अन्धा, पु० उल्लू, २ चिमगादड़ ।

प्रा० दिवाला-पु० ऋण चुकाने की असमर्थता, कोठी अथवा दुकानका बिगड़ना ।

प्रा० दिवाली-(सं० दीपावलि, दीप=दिया, अवलि=पांत) स्त्री० दीपमालिका, कातिकमें एक तिवहार।

सं० दिविषद्-(दिव्=स्वर्ग, षद् प्रकाश करना) पु० देवता, अमर ।

सं० दिवौकस-(दिव=स्वर्ग, आकाश+ओकस=आश्रय) पु० देवता, अमर, चातक, पपीहा ।

सं० दिव्य-(दिव=स्वर्ग, दिव्=चमकना) गु० स्वर्गका, स्वर्गीय, २ सुन्दर, मनोहर, स्वच्छ, मनभावन, पु० शपथ, गूगुल, जौं ।

सं० दिव्यदृष्टि-(दिव्य+दृष्टि) स्त्री० चमत्कारी ज्ञान, अलौकिक ज्ञान, ऐसी नज़र जिससे सब जगह की चीज़ें देख सके ।

सं० दिश्, दिशा (दिश्=देना, व दिखलाना) स्त्री० तरफ़, ओर, दिशा दश हैं, १ ऊपर, २ नीचे, ३ पूर्व, ४ अग्निकोण, ५ दक्षिण, ६ नैर्ऋतकोण, ७ पश्चिम, ८ वायव्यकोण, ९ उत्तर, १० ईशानकोण, दंतक्षत, ईषत, अलम् ।

प्रा० दिसावर-(सं० देश) पु० देश, विलायत, परदेश, मुल्क ।

प्रा० दिसावरी-(दिसावर) पु० एक तरह के पान, गु० दिसावर का (माल आदि) ।

प्रा० दिहरा, देहरा (सं० देवगृह) पु० देवता का मन्दिर ।

प्रा० दिहली-(सं० देहली) स्त्री० दोनों किवाड़ों के बीच का काठ

दहलीज, २ फाटक, द्वार, डेवढ़ी, नाम शहर का।

सं० दीक्षक-(दीक्ष्+अक, दीक्ष्=मंत्र देना) कृ० पु० मंत्रदाता, गुरु।

सं० दीक्षा-(दीक्ष्=यज्ञ करना, मंत्र देना) स्त्री० गुरुसे मंत्रलेना, गुरुमुखहोना, मंत्रउपदेश, २ यज्ञ, याग।

सं० दीक्षित-(दीक्ष्=यज्ञ करना, मंत्र देना) पु० मन्त्र देनेवाला, गुरु-यज्ञकरनेवाला, कर्म०मंत्रलियाहुआ।

प्रा०दीखना-(सं०दृश्=देखना) क्रि० अ० देख पड़ना, दिखलाई देना।

प्रा० दीठ-(सं० दृष्टि) स्त्री० दृष्टि, ताक, दर्शन, नजर। [रश्मि।

सं० दीधिति-स्त्री० किरण, मरीचि,

सं० दीन-(दी=नाश होना) गु० कंगाल, निर्धन, दरिद्र, दुःखी, गरीब, दुखिया, २ आधीन, नम्र, विनीत।

सं० दीनता-(दीन) भा० स्त्री० ग़रीबी, कंगलापन, २ आधीनता, नम्रता।

सं० दीनदयालु-(दीन+दयालु) गु० ग़रीबोंपर दयाकरनेवाला, भक्तों पर कृपा करनेवाला, ईश्वरकानाम।

सं०दीनबन्धु-(दीन+बन्धु) पु० ग़रीबोंके अथवा भक्तोंके भाई अथवा मित्र, ईश्वर का नाम।

प्रा०दीनानाथ-(सं०दीननाथ) पु० ग़रीबों के अथवा भक्तों के स्वामी, ईश्वर का नाम।

सं० दीनार-(दी=नाश होना) पु० सोने का एक सिक्का, २ सोने का एक तौल, सुवर्णकर्ष, निष्कपरिमित।

सं०दीप-(दीप्=चमकना) पु० दिया, दीवा, दीपक, चिराग़। [को देखो।

प्रा० दीप-(सं० द्वीप) पु० द्वीपशब्द

सं० दीपक-(दीप्=चमकना) पु० दिया, दीवा, दीप, चिराग़, २ एक रागका नाम, ३ एक अलंकार का नाम गु० चमकीला, दीप्तिमान्।

सं० दीपमालिका-(दीप=दिया, मालिका=पंक्ति) दिवाली, एक तिवहार का नाम।

सं० दीप्त (दीप्=चमकना) गु० प्रकाशित, चमकीला, प्रज्वलित, पु० सोना।

सं० दीप्ति-(दीप्=चमकना) स्त्री० चमक, प्रकाश, झलक, तेज, शोभा।

सं० दीप्तिमान्-(दीप्ति=तेज, चमक, मान्=वाला) गु० तेजस्वी, प्रतापी, शोभावान्, शोभायमान।

सं० दीप्यमान-(दीप्य+म्=आन) प्रकाशता हुआ, चमकता हुआ, शोभायमान।

प्रा०दीमक-(फा० दीवक) स्त्री० दीयां, बल्मीक, एक प्रकार की सफ़ेद चिंउँटी।

सं० दीर्घ-(दृह्=बढ़ना, वा दृ=फाड़ना, वा डराना) गु० लम्बा, बड़ा, ऊंचा,

पु० द्विमात्रिक स्वर, २ सालवृक्ष ।
सं० दीर्घग्रीव-(दीर्घ=लंबी, ग्रीवा =गरदन) पु० ऊंट, लंबी गरदन वाला)
सं० दीर्घजङ्घा-पु० सारसपक्षी, ऊंट।
सं० दीर्घजीवी-(दीर्घ=लम्बा अर्थात् बहुत दिनोंतक, जीवी=जीनेवाला) दीर्घायु ।
सं० दीर्घदर्शी-(दृश्=देखना) क० पु० दूरदर्शी, विवेकी ।
सं० दीर्घरोमन्-पु० भालू, रीछ ।
सं० दीर्घवक्त्र-(दीर्घ=बड़ा, वक्त्र= मुख) पु० हस्ती, हाथी ।
सं० दीर्घसूत्री-(दीर्घ=लम्बा अर्थात् बहुत देर से, सूत्र=चाहे हुए काम को करना) गु० आलसी, सुस्त, हर एक काम में देरी करनेवाला, धीमा, शिथिल ।
सं० दीर्घायुः-(दीर्घ=लम्बी, आयुष्= उमर) गु० चिरंजीवी, दीर्घजीवी, बहुत दिनोंतक जीनेवाला, पु० कौवा, २ सेमलका वृक्ष, ३ मार्कंडेय ऋषि।
प्रा० दीवा-(सं० दीप) पु० दीपक, दिया, चिराग़ ।
प्रा० दीसना-(सं० दृश्=देखना) क्रि० अ० दीखना, दिखाई देना, देख पड़ना, सूझना, प्रकट होना ।
प्रा० दुख, सं० दुःख-(दुःख=दुखकरना) गु० पीड़ा, कष्ट, कलेश, तकलीफ़, व्यथा, आपदा, विपद्दा ।
प्रा० दुखकामारा-बोल० दुखी, दुखारी ।
सं० दुःखद-(दुः +द, दा=देना) दुःखदाता, दुखदेनेवाला ।
प्रा० दुखपाना-बोल० कुढ़ना, कलपना, दुखभरना, दुखी होना ।
प्रा० दुखभरना-बोल० परिश्रम करना, दुखपाना, दुखी होना ।
प्रा० दुखड़ा-(सं० दुःख) पु० दुख, आपदा, अभाग, दुर्गति, तकलीफ़ ।
प्रा० दुखदाई-(सं० दुःखदायक) क० पु० दुखदेनेवाला ।
प्रा० दुखना-(सं० दुःखन, दुःख= दुख पाना) क्रि० अ० पिराना, दर्द होना, पीड़ा होना, कलेश होना, जलना, चरपराना ।
सं० दुःखसागर-(दुःख+सागर) पु० दुख का समुन्दर, बड़ा भारी दुख, २ संसार, दुनिया ।
सं० दुःशील-(दुः=बुरा, शील=स्वभाव) गु० दुष्टस्वभाव, बदमिज़ाज ।
प्रा० दुखाना-(दुखना) क्रि० स० दुख देना, सताना, पीड़ा देना । कलपाना ।
प्रा० दुखारी, दुखियारी, दुखिया, दुखियारा-(सं० दुःखी) गु० दुखी, दरिद्री, कंगाल, पीड़ित, उदास ।

सं० दुःखावह-(दुःख+वह=भोगना) क०पु० दुखिया, दुःखित, तकलीफ उठानेवाला।

सं० दुःखित-(दुःख) गु० दुखी, दुखियारी, दुखिया, पीड़ित।

सं० दुःखी-(दुःख) गु० दुःखित।

सं० दुःशासन-(दुर्=दुखसे, शास् =सिखाना) पु० धृतराष्ट्र राजाका बेटा और दुर्योधन का छोटाभाई।

सं० दुःसह-(दुर्=दुखसे,सह=सहना) गु० जो दुखसे सहाजाय, असह्य, बहुत कठिन, नहीं सहने योग्य।

प्रा० दुकड़ा-(सं० द्वि=दो) पु० दो दमड़ी,छदाम, पैसेका चौथाभाग।

प्रा० दुकान-(फा० दूकान) पु० हाट, सौदा रखने बेचनेकी जगह।

सं० दुकूल-पु० कपड़ा, वस्त्र, रेशमी कपड़ा, महीन कपड़ा। [राग।

प्रा० दुगुन-(सं० द्विगुण) पु० दूनी,

प्रा० दुगुना-(सं० द्विगुण, (द्वि=दो, गुण=गुनाहुआ)गु०दूना, दोगुना।

सं० दुग्ध-(दुह्=दुहना) कर्म०पु०दूध, क्षीर, पय।

प्रा० दुचित } (सं०द्विचित्त,द्वि=दो,
दुचिता } चित्त=मन) गु०जिस को दुविधा लगीहो, दोमना, दुबधैल, व्याकुल।

प्रा० दुत-(सं०दूर वा दुर्) नि० बो० दूर हो, परेजा, निकल भाग, चलाजा।

प्रा० दुतकार,पु० } झिड़की,घुरकी,
दुतकारी,स्त्री० } ताड़ना; दुतकारना,डाटना,झिड़कना,घुरकना।

प्रा० दुतदबक-बोल० झिड़की, घुरकी, डाट।

प्रा० दुत } (सं० द्युति) स्त्री०चमक,
दुति } चटक, भड़क, सुन्दरता, प्रकाश।

प्रा० दुधार } (दूध) गु० दूधदेने
दुधैल } वाली, दुधारी।

सं० दुंदुभि-(दुन्दु ऐसे शब्द से, उभ्=भरना) पु० धौंसा, नगारा, डंका, भेरी, २ वरुण, ३ एक राक्षस जिसको बालिने मारा।

प्रा०दुपट्टा-(सं०द्वि=दो,पट=कपड़ा) पु० दो पाट का कपड़ा जिसको दोनों कांधों पर डालते हैं, बहुत बार एक पाट के कपड़े को भी दुपट्टा बोलते हैं।

प्रा० दुपट्टातानकेसोना-बोल० असावधानी से अथवा बेफिक्र होके सोरहना।

प्रा०दुपट्टाहिलाना वा फिराना-बोल० सन्धि के लिये मोहलत या अवकाश चाहने के लिये झण्डा हिलाना, क़िला या गढ़ बैरी को सौंप देना।

प्रा० दुपहरिया-(दोपहर) पु० एक प्रकार का फूल, मध्याह्नपुष्प,

गु० दोपहर का।

प्रा० दुबिधा—(सं० द्वैविध्य, द्वि=दो, विध=प्रकार) स्त्री० सन्देह, खटका, दुचिताई, पसोपेश, संकल्पविकल्प।

प्रा० दुबला—(सं० दुर्बल) गु० कमज़ोर, दूबर, निर्बल, २ पतला, कृश, क्षीण।

प्रा० दुभाषिया—(सं० द्वि=दो, भाषा=बोली) क० पु० दोनोंओर की बोली समझाने वाला, एक बोली से उलथा करके दूसरी बोली में समझानेवाला।

सं० दुर } दुस् } उपस० बुरा, दुष्ट, अशुभ, नीच, तुच्छ, अवज्ञा करने योग्य (जैसे दुर्वचन, दुर्मन, दुर्बुद्धि, दुर्दिन आदि) २ अनुचित, उलटा, असत्य, झूठ (जैसे दुस्तर्क) ३ निषेध, कम, नहीं, ४ कठिनता से, दुख से, यह उपसर्ग सु का उलटा है)।

प्रा० दुरना—क्रि० अ० छिपना, लुकना।

सं० दुरंत—(दुर्+अन्त) गु० अशान्त चंचल, दुष्ट, ढीठ, कुकर्मी।

सं० दुरतिक्रम—(दुर्+अतिक्रम) गु० दुस्तर, कठिन।

सं० दुराग्रह—(दुर्+आग्रह, ग्रह=लेना) भा० पु० दुःखग्राह्य, दुःखसे लिया जाय।

सं० दुराचार—(दुर्=बुरा, आचार=चलन) भा० पु० बुराचलन, बुरा व्यवहार, अन्याय, अधर्म, पाप, गु० दुष्ट, जिसका बुरा चाल चलन हो।

सं० दुराचारी—(दुराचार) गु० दुष्ट, पापी, अन्यायी, अधर्मी, भ्रष्ट, पापात्मा।

सं० दुरात्मा (दुर्=दुष्ट, आत्मा=चित्त, मन) गु० दुष्ट, पापी, अधर्मी।

सं० दुराधर्ष—(दुर्=दुःखसे, आ+धृष्=जीतना, दबाना) गु० जो दुःख से जीता जाय, जो शत्रु से नहीं दबे।

प्रा० दुराना—क्रि० स० छिपाना, लुकाना।

सं० दुरालाप—(दुर्=बुरा, आलाप=बोलना) पु० गाली, दुर्वचन।

प्रा० दुराव—(दुराना) भा० पु० छिपाव, लुकाव।

सं० दुराशा—(दुर्=बुरी, आशा=आस) स्त्री० बुरी आशा, नीच आशा।

सं० दुरित—(दुर्=बुरी जगह, इण=जाना) पु० पाप, अधर्म।

सं० दुरुक्त—(दुर्=बुरा, उक्त=कहा हुआ, वच=कहना) पु० शाप, बद दुआ, दुर्वचन, बदकलाम।

सं० दुरुक्ति—(दुर्+उक्ति) स्त्री० दुबारा कहना, बारबार कहना, भ्रष्ट

रीति से कहना, मुहमिल कहना, जैसे पानी आनी, रोटी ओटी।

सं० दुरोदर-पु० जुआं का खेल, जुआरी, कपटी, धूर्त, व्यवहार, व्यवहारी।

सं० दुर्ग-(दुर्=कठिनता से वा दुःख से, गम्=जाना जहां) पु० गढ़, कोट, क़िला, घाटा, २ एक राक्षस का नाम, गु० कठिन, अगम्य, दुर्गम्य।

सं० दुर्गत-(दुर्=दुःखसे, गम्=जाना) गु० दुःखी, दीन, कंगाल, गरीब, दरिद्र, २ छीछालेदर।

सं० दुर्गति-(दुर्=बुरी, गति=दशा) भा० स्त्री० बुरी दशा, दुर्दशा, बरबादी, खराबी, गरीबी, नीचपन, अधमता, २ नरक।

सं० दुर्गन्ध-(दुर्=बुरी, गन्ध=बास) स्त्री० बुरीबास, कुबास, बुरी महक, बदबू।

सं० दुर्गम-(दुर्=कठिनतासे, गम्=जाना) गु० कठिन, औघट, अगम्य, विकट, दुश्वार, गुज़ार, २ गंभीर।

सं० दुर्गा-(दुर्ग एक राक्षसका नाम उसको मारनेवाली देवी) जैसे दुर्गा पाठमें लिखाहै कि "तत्रैव च वधिष्यामि दुर्गमाख्यंमहासुरम्। दुर्गादेवीतिविख्याता" अर्थ-देवी कहती है कि मैं वहां दुर्ग नाम असुर को मारूंगी तब मेरा नाम दुर्गा प्रसिद्ध होगा, स्त्री० देवी, भवानी, काली, भगवती, २ दुर्गापाठ, दुर्गामाहात्म्य, दुर्गाचरित्र, जिस में दुर्गाकी महिमा लिखी है।

सं० दुर्घट-(दुर्=कठिन, घट्=चेष्टा) गु० कठिन, औघट, विकट, अगम्य।

सं० दुर्जन-(दुर्=दुष्ट, जन=मनुष्य) पु० दुष्टमनुष्य, गु० दुष्ट, बुरा, नीच, बुरा करनेवाला।

सं० दुर्जय-(दुर्=कठिनता से, जि=जीतना) गु० जो कठिनतासे जीतने में आवे।

सं० दुर्दशा-(दुर्=बुरी, दशा=हालत, अवस्था) स्त्री० बुरी हालत, आपदा, विपदा, अभाग, बुरी अवस्था, दुर्दिन।

सं० दुर्दिन-(दुर्=बुरा, दिन) पु० बुरा दिन, ऐसादिन जिसमें बादल घिरे हुएहों और अंधेरा होजाय।

सं० दुर्नीति-स्त्री० दुष्टनीति, बुरा न्याय, खराबइन्साफ़।

सं० दुर्बल-(दुर्=थोड़ा वा नहीं, बल=ज़ोर) गु० निर्बल, निबल, दुबला, असमर्थ, बलहीन, कमज़ोर।

सं० दुर्बुद्धि-(दुर्=बुरी, बुद्धि=समझ) गु० मूर्ख, भोंदू, अनाड़ी, अज्ञान, नासमझ, मन्दबुद्धि, बदअक़ल।

सं० दुर्भगा-(दुर्=बुरा, भग=भाग) स्त्री० वह स्त्री जिसको उसका पति

नहीं चाहताहो।

सं०दुर्भाग्य–(दुर्=बुरा, भाग्य=भाग) गु० अभागा, भाग्यहीन, कमबख़्त।

सं०दुर्भिक्ष–(दुर्=नहीं, भिक्षा खाने की वस्तु,) पु० काल, अकाल, कुसमय, असमय।

सं०दुर्मति–(दुर्=बुरी, मति=बुद्धि) गु० मूर्ख, अज्ञान, दुर्बुद्धि, मंदबुद्धि, स्त्री० बुरीसमझ, बदअक़्ल।

सं०दुर्मद–(दुर्=बुरा, मद=अभिमान) गु० जिस को बहुत अथवा बुरा घमंडहो, पु० एक राक्षस का नाम।

सं०दुर्मुख–(दुर्=बुरा, मुख=मुँह) गु० जिस का मुँह बुराहो, २ कड़ी बात बोलनेवाला, पु० एक बन्दर का नाम, २ एक राक्षस का नाम।

सं०दुर्योधन–(दुर्=दुःख से वा बुरी तरह से युध्=लड़ना) पु० धृतराष्ट्र का बड़ा बेटा और कौरवों का मुखिया जिसने अपने चचेरे भाई युधिष्ठिर आदि पांडवों से लड़ाई की थी वह लड़ाई महाभारत कहलाती है।

सं०दुर्लभ–(दुर्=कठिनता से लभ्=पाना) गु० जो दुःख से मिले, दुष्प्राप्य, अलभ्य, २ अनोखा।

सं०दुर्वचन–(दुर्=बुरा वचन=बोल) पु० गाली, बुरी बात, बुरा वचन, दुर्वाद।

सं०दुर्वाद–(दुर्=बुरा, वाद कहना) पु० गाली, बुरा वचन, दुर्वचन, बुरी बात, दुष्णाम।

सं०दुर्वासना–(दुर्=बुरी, वासना=इच्छा) स्त्री०बुरी इच्छा, ख़राब, ख़्वाहिश।

सं०दुर्वासाः–(दुर्=बुरा, वा डरावना, वासस्=कपड़ा) पु० एक ऋषिका नाम जो अत्रि ऋषि का बेटा और शिव का अंश था, २ मैला कपड़ा, मलिन वस्त्र।

सं०दुर्विपाक–(दुर्=बुरा, विपाक=फल) पु० बुराफल, बदनतीजा, बदक़िस्मती, दुर्दैव, अभाग्य।

सं०दुर्बोध्य–(दुर्+बुध्, +य, बुध=जानना) गु० पु० कठिनता से जानने योग्य, मुश्किलसे जाना जाय।

प्रा०दुलकी–स्त्री० घोड़े की एक चाल, कूकर चाल।

प्रा०दुलड़ा–(दोलड़) पु०दोलड़ की माला, गु० दुगुना।

प्रा०दुलत्ती–(दु=दो, लात पांव की मार) स्त्री० पिछले दो पैरों से लात मारना।

प्रा०दुलत्तीमारना } बोल० लात मारना,
दुलत्तीछांटना } पिछले दो पैरों से लात मारना पुस्तक झाड़ना।

प्रा० दुलहन } स्त्री० बनी, बनरी,
दुलहिन } लाड़ी ।

प्रा० दुलहा } पु० बर, बनरा, बना ।
दुल्हा }

प्रा०दुलाई-(दु=दो + लाय=परत) स्त्री० रजाई, दुलैया ।

प्रा०दुलार-पु० प्यार, सनेह, प्रीति, प्रेम ।

प्रा०दुवार—(सं०द्वार)पु० दरवाज़ा ।

प्रा० दुशाला—पु०शाल का जोड़ा ।

सं० दुश्चरित— दुः + चरित, चर= चलना) भा० पु० दुराचार, बदचलन, दुष्ट व्यवहार ।

सं०दुष्कर—(दुर्=दुःखसे, कृ=करना) भा०पु०कठिन, असाध्य, जो करने में कठिन हो, मुश्किल ।

सं०दुष्कर्म्म-(दुर्=बुरा, कर्म्म=काम) पु०बुरा काम, कुकर्म, पाप, नीच कर्म्म ।

सं०दुष्कर्म्मी—(दुष्कर्म्म) क० पु० पापी, दुरात्मा, अधर्मी, कुकर्मी ।

सं० दुष्ट—(दुष्=बिगड़ना, भ्रष्ट होना, वा बुरा करना) गु० बुरा, दुर्जन, कुजन, नीच ।

सं० दुष्णाम—(दुष् + नाम)पु०बुरा नाम, गाली, अयश, बदनाम ।

सं०दुष्टता- (दुष्ट)स्त्री०बुराई, खोटाई ।

सं०दुष्प्राप्य-(दुस्=कठिनतासे, प्राप्य =पाने योग्य) गु० दुर्लभ, दुःखसे वा कठिनता से पाने योग्य ।

प्रा० दुसह—(सं०दुःसह) गु०दुःसह शब्द को देखो ।

सं०दुस्तर-(दुस्=दुःखसे, तृ=पारहोना) गु० कठिन, जिस का पार होना कठिन हो ।

प्रा०दुहना—(सं०दोहन, दुह्=दुहना) क्रि० स० दोहना, गाय के थनों में से दूध निकालना ।

प्रा०दुहराना—क्रि० स० दूनाकरना, २दोहराकर कहना, बारबार कहना ।

प्रा०दुहाई-(सं० द्वौ=दो, हाहा=हाय, अर्थात् दोनों हाथ ऊंचे कर के पुकारना) स्त्री० न्याय के लिये पुकारना, पुकार, २ सौगंद, शपथ, जैसे " नन्ददुहाई " ।

प्रा० दुहाईतिहाई करना—बोल० बारबार पुकारना ।

सं०दुहिता—(दुह्=देना, वा दुहना जो माबाप के धन को दुहाकरे या जिसको देते रहें) स्त्री० बेटी, लड़की, कन्या, पुत्री, सुता ।

प्रा० दुहूं—(सं० द्वौ) गु०दो, दोनों ।

प्रा० दूज —(सं०द्वितीया) स्त्री० दूसरी तिथि ।

प्रा० दूजवर—(सं०द्विजायावर द्वि= दूसरी, जाया=पत्नी, वर=दुलहा) पु० वह मनुष्य जो दूसरा ब्याहकरता है ।

प्रा०दूजा-(सं०द्वितीय)गु०दूसरा, और

सं० दूत—(दु+जाना) पु०समाचार लेजानेवाला, संदेशा पहुंचाने वाला, एलची, हरकारा ।

सं०दूतिका } (दूत) स्त्री० समा-
दूती } चार पहुँचाने वाली, संदेशा लेजानेवाली, २ कुटनी, नायिका ।

प्रा० दूध—(सं०दुग्ध) र्म० पु० दुग्ध, पय, क्षीर, २ किसी जड़ीका अथवा पौधे का रस ।

प्रा० दूधाधारी (सं० दुग्धाहारी) क० पु० दूध पीके जीतनेवाला ।

प्रा० दूधाभाती—(दूध+भात) स्त्री० ब्याहके चौथे दिन एक रीति होतीहै जब दुलहा और दुलहिन एक साथ बैठकर खीर खातेहैं । [दोहरा ।

प्रा० दूना—(सं०द्विगुण) गु०द्विगुना,

प्रा० दूब—(सं०दूर्वा,दूर्व=हिंसा करना, अर्थात् काटना) स्त्री० एक प्रकार की घास ।

प्रा० दूबर (सं०दुर्बल) गु० दुबला, कमज़ोर, २ दुर्वह: (दुर्=दुःख से, वह्=लेजाना) कठिन ।

सं० दूर—(दुर्=दुःखसे, इण=जाना) स्त्री० बीच, दूरी, गु० परे, अनन्तर, अलग, न्यारा, बीच ।

प्रा० दूरभागना—बोल० छोड़ना, मुँहफेरना, हाथ उठाना, घिन करना, अवज्ञाकरना, खराबकरना, बचना, टलजाना, अलग रहना ।

प्रा० दूरकरना—बोल० हटाना, सरकाना, टालना, हँकादेना, निकालदेना ।

प्रा० दूरहोना—बोल० हटना,अलग होना,टलना,निकलजाना,सरकना।

प्रा० दूरहो—बोल० चला जा, परे हो, निकल भाग ।

सं० दूरदर्शिता—भा० पु० दूर से देखना,पाण्डित्य,विवेकता,दूरंदेशी।

सं० दूरदर्शी—(दूर=दूर से अर्थात् पहले से दर्शी=देखनेवाला, दृश्=देखना) क० पु० दूर से देखनेवाला, पहले से जाननेवाला, अग्रसोची, पु० पण्डित, विवेकी,ज्ञानी, २ गीध । [पु० निंदक ।

सं० दूषक—(दुष्=दोषी होना) क०

सं० दूषण-(दुष्=दोषीहोना, भा०पु० दोष, निंदा, चूक, अपराध, अपवाद, भूल, २ एक राक्षसका नाम ।

सं० दूषणीय—(दूष्+अनीय) र्म० पु० निन्दायोग, दुष्ट, बदनाम ।

सं० दूषित—(दुष्=दोषीहोना) र्म० पु० निंदित, बुरा, खराब, भ्रष्ट, बदनाम, कलंकित, बिगड़ा हुआ ।

सं० दूष्य -(दूष्+य) र्म० पु० अयोग्य, दूषणयोग्य ।

प्रा० दूसर } (सं० द्वितीय) गु०
दूसरा } दूजा, और ।

प्रा० दृग-(सं० दृक्, दृश्=देखना) गु० पु० आंख, चक्षु ।

सं० दृढ़-(दृह्=बढ़ना) गु० कड़ा, कठोर, मज़बूत, पोढ़ा, पक्का, अचल, गाढ़ा, ठोस ।

सं० दृढ़ता-(दृढ) भा० स्त्री० पकावट, मज़बूती, पोढ़ाई, कठिनता, ठोसपन ।

प्रा० दृढ़ाना-(सं० दृढ) क्रि० स० मज़बूत करना, पक्का करना, पोढ़ा करना, सबल करना ।

सं० दृश्य-(दृश्=देखना) कर्म० पु० देखने योग्य, दर्शनीय, २ सुन्दर, सुहावना, मनोहर ।

सं० दृश्यमान-कर्म० पु० देखनेयोग्य, दर्शनीय, देखने काबिल ।

सं० दृष्ट-(दृश्=देखना) कर्म० पु० देखाहुआ, प्रकट, जो देखनेमेंआवे ।

सं० दृष्टकूट-पु० पहेली, क्लिष्ट, कठोर, कड़ा ।

सं० दृष्टान्त (दृष्ट=देखा, अन्त=आखिर, पार) पु० उदाहरण उपमा, बराबरी ।

सं० दृष्टि-(दृश्=देखना) भा० स्त्री० देखना, दर्शन, दीठ, नज़र, २ आंख ।

सं० दृष्टिपात-(दृष्टि+पात, पत्=गिरना) पु० दर्शन, कटाक्ष, घूरना देखना ।

सं० दृष्टिशशि-पु० महादेव, शिव ।

प्रा० देखना-(सं० दृश्=देखना) क्रि० स० लखना, दृष्टि करना, ताकना, निहारना ।

प्रा० देखनाभालना-बोल० अच्छी तरह से देखना, देखना, ताकना, निहारना ।

प्रा० देखादेखी-बोल० हिस्काहिस्की, बराबरी, देखनेसे, २ आपसमेंदेखना ।

सं० देदीप्यमान-क० पु० चमकीला, जाज्वल्यमान, चमकदार ।

प्रा० देनलेन (देनालेना) भा० पु० व्यवहार, पलटा, व्यापार, बनिज, बैपार, देवालेई, साहूकारी ।

प्रा० देना-(सं० दान, दा=देना) क्रि० स० देदेना, देडालना, सौंपना, त्यागना । [देनालेना ।

प्रा० देनापाना-बोल० हानिलाभ,

प्रा० देमारना-बोल० पटकदेना, पछाड़ डालना ।

सं० देय-(दा=देना) कर्म० पु० देनेयोग्य ।

सं० देव-(दिव्=खेलना, वा सराहना) पु० देवता, २ परमेश्वर, ३ राजा, ४ देवर, ५ ब्राह्मणोंका उपनाम, ६ बादल, मेघ, गु० पूज्य, पूजने योग्य ।

सं० देवक-(दिव्=खेलना, वा चम-

कना)पु० श्रीकृष्ण का नाना और देवकी का बाप।

सं०देवकार्य्य-(देव=देवता, कार्य्य =काम) पु० पूजा होम आदि।

सं०देवकी } (देवक) स्त्री० देवक
दैवकी } राजाकीबेटी, वसुदेव की स्त्री और श्रीकृष्णकी मा।

सं० देवकीनन्दन-(देवकी+नंदन =बेटा) पु० श्रीकृष्ण।

सं०देवगुरु-(देव+गुरु)पु० देवताओं का गुरु बृहस्पति।

सं०देवगृह-(देव+गृह) पु० मंदिर,देवालय, देहरा, ठाकुरद्वारा।

प्रा०देवठान-(सं० देवोत्थान) पु० कातिकसुदी ११ जिस दिन विष्णु चार महीने की नींदसे जागते हैं।

सं०देवता-(देव) पु० देव, अमर।

सं०देवदारु-(देव+दारु अर्थात् जिस पेड़की लकड़ी देवताओं की प्यारी है) पु० एक वृक्ष का नाम।

सं०देवदेव-(देव+देव) पु० देवताओं का देवता, महादेव।

सं०देवनागरी-(देव=देवता, नागरी=नगर की) स्त्री०देवताओं के नगरके अक्षर अथवा देवाताओं के नगर की भाषा, शास्त्री अक्षर, शुद्धहिंदी अक्षर, २ हिन्दीभाषा, नागरी बोली।

सं०देवर-दिव्=खेलना पु० पतिका छोटाभाई। जैसे "पश्यतिदेवरस्ते"।

प्रा०देवल-(सं० देवालय) पु० मन्दिर,ठाकुरद्वारा, देहरा।

सं०देवलोक-(देव+लोक) पु० देवताओंके रहने का स्थान, स्वर्ग, सात लोकों में का एक लोक (लोक शब्द को देखो)।

सं०देववाणी-(देव+वाणी) स्त्री० देवताओं की बोली, संस्कृतभाषा

सं०देवास्थान-(देव+स्थान) पु० मन्दिर,देवालय, देवल, ठाकुरद्वारा, देहरा।

प्रा०देवा-(सं० देव) पु० देवता, २ (देना) देनेवाला। [वाला।

प्रा०देवाल-(देना) पु० देने

सं०देवालय-(देव=देवता आलय =जगह) पु० मन्दिर, देवस्थान, देवल ठाकुद्वारा,देहरा, स्वर्ग।

सं०देवतरंगिनि-(देव=देवता, तरङ्गिनि=नदी) स्त्री० गंगा।

सं०देवध्वनि-स्त्री० आकाश गंगा।

सं०देवी-(दिव्=क्रीड़ा करना, खेलना) स्त्री० भवानी,दुर्गा, जगदम्बा, २ देवताकी स्त्री, ३ रानी।

सं०देवोत्थान-(देव=विष्णुभगवान् उत्थान=उठना) पु० कातिक सुदी ११ जिस दिन विष्णु चार महीने की नींद से जागते हैं।

सं०देश–(दिश्=देना) पु० मुल्क, देश, पृथ्वी का खंड, मण्डल, चक्र, प्रदेश, स्थान।

सं०देशदशाभिज्ञ–क० पु० देश की दशाकाज्ञाता, मुल्ककी हालत का जानने वाला।

प्रा०देशनिकाला–(देश+निकालना)पु०अपने देश से निकालना।

सं०देशभाषा(देश+भाषा)स्त्री० देशीभाषा, देशकी बोली।

सं०देशस्थ–(देश+स्थ) क० पु० देश में टिका, मुल्क में ठहराहुआ।

सं०देशाचार–(देश+आचार)पु० देशकाव्यवहार, देशकीरीतिभांति।

सं०देशाटन–देश=मुल्क,अटन=फिरना)पु०देश में फिरना,सफ़रकरना।

सं०देशाधिपति–(देश+अधिपति) पु० देशका राजा, देशका स्वामी।

सं०देशाधीश–(देश+अधीश)पु० देशका राजा, देशका स्वामी।

सं०देशान्तर–(देश=मुल्क, अन्तर=दूसरा वा दूरी)पु० दूसरा देश, बिदेश, २मध्याह्नरेखासे पूर्व अथवा पश्चिमको किसी जगह की दूरी,–इंगलैंडके भूगोलजाननेवाले ग्रीनच शहरसे और हिन्दुस्तान के ज्योतिषी लंकासे देशान्तरकाहिसाब करते हैं।

सं०देशहितैषी–क० पु० देश की भलाई की इच्छा करनेवाला, खैरख़्वाह मुल्क।

प्रा०देशी–(सं०देशी) गु०देशका।

सं०देशोन्नति–(देश+उन्नति)स्त्री० देशकी बढ़ती, देशकी वृद्धि, मुल्क की तरक्की। [तन।

सं०देह—(दिह्=बढ़ना)स्त्री०शरीर,

प्रा०देहढ़ुराना—बोल० गुप्त अंगों को ढकना।

प्रा०देहसंभालना–बोल० सचेत होना, चैतन्य होना, ढारस रखना, आप में आना।

सं०दोग्धा (दुह+तृ,दुह=दुहना) क०पु०वत्स, बछड़ा, २ अहीर।

सं०दोग्धी—(दुह+तृ+ई)स्त्री० धेनु, गौ, गाय।

सं०देहत्याग–(देह+त्याग) पु० मरण, मौत, मीच, प्राणत्याग।

प्रा०देहरा–(सं०देव=गृह) पु० देवता का मन्दिर, देवल, ठाकुरद्वारा, देवालय।

सं०देहली–(देह=लेपन, (लिह्=लेपना) और, ला=लेना) स्त्री०दोनों किवाड़ों के बीच का काठ दिहली, दहलीज़, २ फाटक,द्वार, डेवढ़ी। [जीवधारी।

सं०देही (देह) क० पु० प्राणी,

प्रा०देही–(सं० देह) स्त्री० देह, शरीर, तन।

सं० दैत्य (दिति) पु० दितिके बेटे, राक्षस, असुर ।

सं० दैत्यगुरु-(दैत्य+गुरु) पु० राक्षसों का गुरु, शुक्राचार्य ।

सं०दैत्यारि-(दैत्य+अरि)पु०विष्णु,

सं० दैवज्ञ-(दैव+ज्ञ=जानना) क० पु० ज्योतिषी, नजूमी ।

सं० दैन्य-भा० पु० दीनता, दुःखीपन, गरीबी, लाचारी, बेबसी ।

सं० दैनिक-भा० पु० दिनका, रोजाना, रोज रोज ।

सं०दैनिकवेतन-पु० रोजकीमजदूरी।

सं० दैव-(देव ईश्वर, अर्थात् ईश्वर से आयाहुआ, वा ईश्वर का) पु० भाग, प्रारब्ध, कर्मका फल, २ संयोग, ३ईश्वर, विधाता, गु० ईश्वरका।

सं० दैवात् } (दैव) क्रि० वि०
दैवी } संयोग से, अचानक, अकस्मात् ।

सं० दैवानुरागी-(दैव+अनुरागी) क० पु० ईश्वर का प्रेमी, ईश्वर भक्त, खुदापरस्त । [मानसे।

सं० दैविक-गु० देवताओं से, आस-

सं० दैहिक-गु० देहकी, शरीर की, जिस्मानी ।

प्रा० दैहौं-(देना) क्रि०स० दूंगा ।

प्रा० दो (द्वि) गु० दूसरी संख्या, एक और एक, २ ।

प्रा० दोऊ-(सं० द्वौ) गु० दोनों ।

प्रा० दोजीवा-(सं० द्विजीव=द्वि= दो, जीव=प्राणी) स्त्री० गर्भिणी, गर्भवती, पेटसे ।

प्रा० दोजीसेहोना-बोल० पेट से होना, गर्भिणी होना ।

प्रा० दोना } पु० पत्तों का बना
दौना } हुआ बरतन जिस में तरकारी मिठाईआदिलेकरखातेहैं ।

प्रा० दोनाली-(सं० द्विनाल) स्त्री० दो नल की बन्दूक [उभय ।

प्रा० दोनों-(सं० द्वौ) गु० दोऊ,

प्रा०दोबे-(सं० द्विवेदी, दो वेद जाननेवाला) पु० ब्राह्मणों की एक पदवी अथवा जाति ।

सं० दोला-(दुल=झूलना) पु० हिंडोला, झूलना ।

सं० दोलन-(दुल+अन) भा० पु० झूलना, पैंगना ।

सं० दोलिका-(दुल=झूलना)स्त्री० झूला, हिंडोला ।

सं० दोष-(दुष=दोषीहोना) भा०पु० चूक, भूल, अवगुण, अपराध, कसूर ।

सं० दोषा-स्त्री० रात्रि रात ।

प्रा० दोषना-(दोष) क्रि० स० दोषलगाना, कलंकलगाना, दाग लगाना ।

सं० दोषारोपण-(दोष+आरोपण, रुप्=जमाना वा लगाना) भा० पु० दोषलगाना, कलंक ल-

गाना, ऐबलगाना । [अपराधी ।

सं० दोषी—(दोष) गु० पापी,

प्रा० दोसाद—पु० नीच जाति जिस का धंधा सुअर पालने का है ।

सं० दोहता—(सं० दौहित्र, दुहितृ= बेटी) पु० बेटी का बेटा, नाती, दोहती=बेटी की बेटी, नतिनी ।

प्रा० दोहना—(सं० दोहन, दुह्= दुहना)क्रि०स०दुहना,दूधखींचना।

सं० दोहनी—(दुह्=दुहना जिसमें) स्त्री० दूधदुहने का बरतन ।

प्रा० दोहर—(दो) स्त्री० दोहरा कपड़ा, २ मियान । [दोहा ।

प्रा० दोहरा—(दो) गु० दूना, पु०

प्रा० दोहा—(सं०द्विपदा)पु०दोपद का छंद४८ मात्रा का छंद प्रथम तृतीय चरण में तेरह २ और द्वितीय चतुर्थचरणमेंग्यारह२मात्रा होती हैं,

प्रा० दौंगड़ा—पु०भारी वर्षा ।

प्रा० दौड़धूप—भा० स्त्री० परिश्रम, मिहनत।

प्रा० दौड़धूपकरना—बोल० बहुत मिहनत करना, परिश्रमकरना ।

प्रा० दौड़ना—(सं० धोर=जोर से चलना) क्रि० अ० भागना, जल्दी से चलना, झपटना, चढ़ना ।

प्रा०दौड़ादौड़ी—बोल०धावाधावी। हड़बड़ी, उतावली ।

प्रा० दौड़ाहा(दौड़ना) गु० दौड़ने वाला, हलकारा, अगुवा, दूत ।

प्रा० दौरी—स्त्री० टोकरी, चंगेरी ।

सं० द्युति—(द्युत्=चमकना) स्त्री० चमक, प्रकाश, सुन्दरता, दीप्ति ।

सं० द्युतित -(द्युत्+इत) कृ० पु० प्रकाशयुक्त, प्रकाशवान् ।

सं०द्युषत—(दिव+सद्,दिव=स्वर्ग, सद्=रहना) कृ० पु० स्वर्गस्थ,स्वर्ग निवासी, बिहिश्त का रहनेवाला ।

सं० द्यूत—(दिव्=खेलना) पु० पाशा खेलना, जुआ ।

सं०द्यूतकार—(द्यूत=जूआ, कार=करनेवाला, कृ=करना) पु० जुवारी, जूआ देखनेवाला । [देवलोक ।

सं० द्यो—(दिव+त) कृ० पु०स्वर्ग,

सं०द्योत(द्युत्+अ)पु०प्रकाश,दीप्ति।

सं० द्योतक(द्युत्=चमकना) कृ० पु० चमकनेवाला, प्रकाश करनेवाला ।

सं० द्योतन-(द्युत्+अन) भा०पु०प्रकाशकरना,जाहिरकरना,प्रकटकरना।

प्रा० द्योरानी—(सं० देवर) स्त्री० देवर की स्त्री ।

सं० द्रव—(द्रु=जाना) पु० रस, अर्क, २वेग,गु० पिघलाहुआ,बहताहुआ।

प्रा० द्रवना—(सं० द्रव) क्रि० अ० पिघलना, २ कृपालु होना, कोमल चित्त होना ।

सं० द्रविण—पु० धन, रुपिया पैसा ।

सं० द्रव्य—(द्रु=जाना) पु० धन, दौलत, २ सारवस्तु, पदार्थ, ३ न्याय में नौ प्रकार के द्रव्य हैं (१ धरती, २ पानी, ३ आग, ४ हवा, ५ आकाश, ६ समय, ७ दिशा, ८ आत्मा, ९ मन) ४ औषध, दवाई।

सं० द्रष्टव्य—(दृश्+तव्य, दृश्=देखना) र्म्म० पु० देखनेयोग्य, दर्शनीय, काबिलदीद।

सं० द्रष्टा—(दृश्+तृ) क० पु० दर्शक, देखनेवाला, नाजिर।

सं० द्राक्षा—(द्राक्ष=चाहना) स्त्री० दाख, अंगूर।

सं० द्राघण—(द्राघ्+अन, द्राघ=आयाम वा श्रम) पु० श्रम, मेहनत।

सं० द्राघित—(द्राघ्+इत) र्म्म० पु० श्रमित, थकित।

सं० द्रावक द्रावी—(द्रु=बहना) क० पु० बहनेवाला, पतला होनेवाला।

सं० द्राव—(द्रु=बहना, चलना) भा० पु० बहाव, स्रवण, चाल, अर्क, शंखद्राव।

सं० द्रुत—(द्रु=जाना) गु० जल्द, तुरन्त, शीघ्र, झटपट।

सं० द्रुम—(द्रु=डाली, अर्थात् जिसके डालियां हों, द्रु=जाना) पु० वृक्ष, पेड़, रूख, दरखत, तरु।

सं० द्रुमारि—(द्रुम+अरि) पु० गज, हस्ती, कुठार, कुल्हाड़ा, प्रचण्ड वायु, तेजहवा।

सं० द्रुमेश्वर—(द्रुम+ईश्वर) पु० चन्द्रमा, ताल वृक्ष, अश्वत्थवृक्ष, पीपर।

सं० द्रोण—(द्रुण=टेढ़ा करना, वा द्रु=जाना) पु० द्रोणाचार्य जिसने पाण्डवों और कौरवों को धनुषविद्या सिखलाई थी, २ चार आढ़क का परिमाण अथवा आठ सेर, ३ काला कौवा।

सं० द्रोह—(द्रुह=बुरा चीतना) पु० वैर, लाग, द्वेष, डाह, ईर्षा, विरोध।

प्रा० द्रोहिया—(सं० द्रोही) गु० द्रोही, द्वेषी, वैरी।

सं० द्रोही—(द्रोह) गु० वैरी, द्वेषी, विरोधी, द्रोहिया, डाही, दुष्ट।

सं० द्रौपदी—(द्रुपद) स्त्री० पंचाल देश के राजा द्रुपद की बेटी और पांचों पांडवों की स्त्री।

सं० द्वन्द्व—(द्वौ द्वौ=दोदो) पु० जोड़ा, युगल, २ कलह, झगड़ा, बखेड़ा, ३ व्याकरण में एक समास का नाम, ४ रागद्वेष।

सं० द्वादश—(द्वि=दो, दश=दस) गु० बारह, बारहवां।

सं० द्वादशी—(द्वादश) स्त्री० बारहवीं तिथि।

सं० द्वापर—(द्वि=दो, पर=पीछे, अ-

र्थात् दो के पीछे) पु० तीसरा युग जो ८६४००० बरस का था।

सं० द्वार-(द्वृ=ढकना)पु०दरवाजा, किवाड़, २ राह, मार्ग, उपाय, कारण।

सं० द्वारका-(द्वार=उपाय, अर्थात् मोक्ष का उपाय जहां हो) स्त्री० एक पुरी का नाम जिसको श्रीकृष्ण ने समन्दर के तीर पर बसाई।

सं०द्वारपाल-(द्वार=दरवाजा, पाल =खबर रखनेवाला) पु० डेवढ़ीवान्, पौरिया।

सं० द्वारा-(द्वृ=ढकना) क्रि० वि० कारण से, हेतु से, सहायता से, मदद से।

सं० द्वारावती } (द्वार=मोक्ष का
द्वारका } उपाय जहां हो)
स्त्री० द्वारका, श्रीकृष्ण की पुरी।

सं० द्विगुण-(द्वि=दो, गुण=गुना हुआ) गु० दूना, दुगुना, दोहरा।

सं० द्विज-(द्वि=दोबार, जन्=पैदा होना) गु० दोबार जन्मा हुआ पु० ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य इन तीन वर्णों के मनुष्यों को द्विज कहते हैं क्योंकि ये एक बार तो अपनी मा के गर्भ से पैदा होते हैं और दूसरी बार यज्ञोपवीतादि संस्कार से, जैसे स्मृति में लिखा है कि "जन्मनाजायते शूद्रः संस्कारैर्द्विजउच्यते" अर्थ—जन्म से शूद्र पैदा होता है और संस्कार से द्विज कहलाता है, और भी "मातुरग्रेऽधिजननं द्वितीयंमौञ्जिबन्धने" अर्थ एक बार मा के गर्भ से पैदा होना और दूसरीबार मौञ्जीबन्धन संस्कार से, २ दांत, ३ पक्षी आदि अण्डेसे पैदा होनेवाले जीव।

सं० द्विजराज-(द्विज=ब्राह्मण, राजन्=राजा)पु० चन्द्रमा, चांद, गरुड़, विप्र, शिव।

सं० द्विजाति-पु०द्विजशब्दकोदेखो।

सं०द्वितीय-(द्वि=दो)गु०दूसरा, दूजा।

सं० द्विधा-(द्वि=दो, धा=प्रकार) क्रि० वि० दोप्रकारसे, दो तरहसे।

सं०द्विप-(द्वि=दो से, पा=पीना, हाथी पहले अपनी शुण्ड में पानी भर कर फिर अपने मुंह में उतारता है) पु० हाथी, गज, वृक्ष, नागकेशर।

सं०द्विपद-(द्वि=दो, पद=चलना) पु० मनुष्य, राक्षस, देवता, दो पैर से चलनेवाले।

सं० द्विपायिन्-(द्वि=दो, पा=पीना) पु० हस्ती, गज।

सं० द्विविद-(द्वि=दो, विद्=जानना) पु० एक वानरका नाम।

सं० द्वीप-(द्वि=दोनों ओर, आप=पानी, अर्थात् जिसके सब ओर

पानी हो) पु० धरती का वह बड़ा टुकड़ा जिसके चारों ओर पानीहो, हिन्दुओं के शास्त्र में सातद्वीप लिखे हैं और हरएक द्वीप एक एक समुद्र से घिरा है, सातों द्वीपों के नाम, १ जम्बूद्वीप, २ कुश, ३ पुक्ष, ४ शाल्मली, ५ क्रौंच, ६ शाक, ७ पुष्कर । [गुलचमा ।

सं० द्वीपिन्—पु० व्याघ्रभेद, चीता,

सं० द्विरेफ—पु० भ्रमर, मधुप, भौंरा ।

सं० द्वेष—(द्विष्=वैरकरना) पु० द्रोह, वैर, ईर्षा, शत्रुता, अदावत, दुश्मनी ।

सं० द्वेषक—(द्विष् + अक) क० पु० वैरी, द्रोही, शत्रु, दुश्मन ।

सं० द्वेषी—(द्वेष) क० पु० वैरी, विरोधी, शत्रु, द्रोही ।

सं० द्वेष्टा—क० पु० वैरी, शत्रु, दुश्मन ।

प्रा० द्वै—(सं० द्वौ) गु० दो ।

सं० द्वैधीभाव—भा० पु० तोड़फोड़, लड़ाई, झगड़ा, आपस की नाइत्तिफाकी ।

सं० द्वैपायन—पु० व्यासजी ।

सं० द्वैमातुर—पु० गणेश, जरासन्ध, जो दो माताओं से उत्पन्न हो ।

ध

सं० ध—(धा=रखना, वा धे=पीना) पु० धर्म, २ कुबेर, ३ ब्रह्मा, ४ धन ।

प्रा० धन्धक—पु० काम करनेवाला, उद्यमी ।

प्रा० धन्धा—पु० काम काज, पेशा, उद्यम, कार्य, व्यवहार ।

प्रा० धंधारी-(धंधा + अरी=शत्रु) शिथिल, उदासी, ढीला, पेशा न करने वाला ।

प्रा० धँसना—क्रि० अ० पैठजाना, गड़जाना, घुसजाना ।

प्रा० धकधकी—स्त्री० कँपकँपी, धड़क, थरथरी, धड़धड़ाहट, घबराहट, हड़बड़ी ।

प्रा० धकधकाना-क्रि० अ० कांपना, धड़कना, थरथराना, धड़धड़ाना, फड़कना ।

प्रा० धकेलना—क्रि० स० ढकेलना, रेलना, धकादेना, ठेलना, हूलना, पेलना ।

प्रा० धकेलदेना—बोल० ढकेलना, धक्का देना, झोंकदेना ।

प्रा० धक्का—पु० ढकेल, ठेल, झोंक, रोला, रेल, टक्कर, हूल ।

प्रा० धकादेना—बोल० ढकेलना, ठेलना, रेलना, पेलना, झोंकना, हूलना ।

प्रा० धक्कमधक्का—बोल० ठेलाठेली, रेलपेल, ठेलमठेल, कशमकश ।

प्रा० धज (सं० ध्वज, ध्वज्=जाना) स्त्री० रूप, डौल, आकार, चालढाल, रविश, आन, दशा, अवस्था,

सजधज, बजाज। [झंडा।

प्रा० धजा-(सं०ध्वजा)स्त्री०पताका,

प्रा० धजीला-गु० सुडौल,सजीला, स्वरूपवान्, सुन्दर।

प्रा० धज्जी-(सं०ध्वज)स्त्री०कपड़े का अथवा कागज़ का टुकड़ा, चीर, कतरन, काटन, टुकड़ा।

प्रा० धज्जियांउड़ाना-बोल० बदनाम करना, बातों से हराना।

प्रा० धज्जियांकरना-बोल० टुकड़े २ करना।

प्रा० धड़ } धर } (सं० धृ=रखना) स्त्री० बिनशिर की देह, रुण्ड, शरीर, काया।

प्रा० धड़क-(धड़कना) स्त्री० धड़धड़ाहट, धुकधुकी, फड़क, थरथराहट, २ डर, भय।

प्रा० धड़कना-क्रि० अ० कांपना, धुकधुकाना धकधकाना, थरथराना, धड़धड़ाना, फड़कना, मारना।

प्रा० धड़का-पु० डर, संदेह, दुबिधा, २ कँपकँपी, धड़क, धड़धड़ाहट, ३ कड़क, गर्ज।

प्रा० धड़काना-क्रि० स० डराना, भयदिखाना) कँपाना, दहलाना।

प्रा० धड़धड़ाना-क्रि०अ०धड़कना, (कांपना।

प्रा० धड़का-पु० ठनक, ठोकने की आवाज, २ डर, दहलना, ३ भीड़।

प्रा० धड़ा-पु० जत्था, समूह, तरफ़, ओर, पक्ष, २ तौल, जोख।

प्रा० धड़ाका-पु० कड़क, धमक, शब्द, आवाज़।

प्रा० धड़ी-स्त्री० पांच सेरकी तौल।

प्रा० धत-स्त्री० हाथी चलाने का शब्द, दुदकारना, हिकारत करना।

प्रा० धतूरा-(सं० धत्तूर, ध=रखना धातुओं को) पु० एक प्रकार का पौधा, कनक।

प्रा० धतूरिया-(धतूरा) गु० छली, बहुरूपिया।

प्रा० धधकना-(सं०दहन)क्रि०अ० भभकना, बरना।

प्रा०धधच्छर } दधच्छर } (सं० दग्धाक्षर= जलाने वाले अक्षर) पु० कविता में वे अक्षर जिन को कवि अशुभ गिनते हैं (जैसे ह ग न कविता के शुरूअ में, र ज स बीच में और क ट झ अक्षर कवित्तके अन्तमें अशुभ गिने जातेहैं)।

सं० धन-(धन्=पैदाहोना) पु० दौलत, द्रव्य, लक्ष्मी, सम्पत्ति, संपदा, २ गणित में जोड़का चिह्न +

प्रा० धनक-पु० जड़ाव, कारचोबी।

सं० धनञ्जय-(धनम्=दौलत को, जि=जीतना) पु० अर्जुन का नाम, २ आग, ३ एक वृक्ष का नाम।

सं० धनतृष्णा-(धन+तृष्णा) स्त्री० धनका लालच, धनकी लालसा, लोभ ।

प्रा० धनत्तर—गु० धनी, धनवान्, अड़ियल, सेठ, कोठीवाल ।

सं० धनद—(धन=दौलत, दे=पालना, दा=देना) पु० कुबेर, धनपति, गु० दातार, उदार, धन देनेवाला ।

सं० धनपति -(धन+पति) पु० कुबेर, धनका देवता ।

सं० धनवन्त, धनवान् (धन=दौलत, वत्=वाला) गु० धनी, दौलतमन्द, मालदार, धनिक, लक्ष्मीवान्, धनाढ्य ।

सं० धनहीन—(धन+हीन) गु० मुफ़लिस, निर्धन, दरिद्र, कंगाल, गरीब ।

सं० धनाढ्य -(धन=द्रव्य, आढ्य=युक्त) गु० धनवान्, धनी, मालदार ।

सं० धनाधार—धि० पु० धनागार, भण्डार, खज़ाना रखनेका मकान ।

सं० धनाधिप—(धन+अधिप) पु० कुबेर ।

सं० धनाध्यक्ष-(धन+अध्यक्ष) पु० कुबेर, २ खज़ानची, भण्डारी ।

सं० धनान्ध—(धन+अन्ध) गु० धन से अन्धा, धनके मद से घमंडी, धनगर्वित ।

सं० धनार्थी—(धन+अर्थी) गु० लोभी, लालची, कृपण ।

सं० धनाशा—(धन+आशा) स्त्री० धनेच्छा, धनकी चाह ।

प्रा० धनासरी—(सं० धनेश्वरी) स्त्री० एक रागिणी का नाम, एक छन्द का नाम ।

सं० धनिक—(धन) गु० धनवान्, धनी, पु० महाजन, उधार देनेवाला ।

प्रा० धनियां-पु० एक मसाला ।

सं० धनिष्ठा-(धन्=पैदा होना) स्त्री० चौबीसवें नक्षत्रका नाम ।

सं० धनी—(धन) गु० धनवान्, दौलतमन्द, मालदार, लक्ष्मीवान्, पु० मालिक, स्वामी, अधिकारी, पति ।

प्रा० धनु, धनुक (सं० धनुष) पु० कमान, चाप ।

प्रा० धनुकधारी-(सं० धनुर्धारी) पु० तीरन्दाज़, कमनैत ।

सं० धनुस्, धनुष् (धन्=शब्द करना) पु० धनुक, कमान, चाप, २ ज्योतिष में नवीं राशि ।

सं० धनुर्धर-(धनुष्=कमान, धृ=रखना) क० पु० कमान चढ़ानेवाला, धनुर्धारी, तीरन्दाज़, कमनैत ।

प्रा० धनुटंकार—(सं० धनुष्टङ्कार) पु० कमान के चिल्ले का शब्द, रोदा की आवाज़ ।

सं० धनुर्विद्या—(धनुष+विद्या) स्त्री० तीर चलाने की विद्या

तीरन्दाज़ी, बाणचलाना ।

सं० धनेश, धनेश्वर — (सं० धन+ईश वा ईश्वर) पु० कुबेर, धनाधिप ।

प्रा० धनेसा—(सं० धनेश) पु० कुबेर ।

प्रा० धन्नासेठ, धनासेठ — (सं० धनश्रेष्ठ) गु० बहुत धनवान्, कृतार्थ, धनका घमण्ड ।

सं० धन्य—(धन) गु० सराहने योग्य, भाग्यवान्, श्रीमान्, वि० बो० शाबाश, वाहवाह, धन, प्रशंसा को जतलानेवाला शब्द ।

प्रा० धन्यमानना, धनमानना — बोल० धन्यवाद करना, उपकार मानना ।

सं० धन्यवाद—(धन्य, वद्=कहना) पु० सराह, स्तुति, आशिष्, शुकरगुजारी, अहसानमन्दी ।

सं० धन्वन्तरि—(धन्वन्=वैद्यकशास्त्र वा शिल्पशास्त्र, री=जाना अर्थात् वैद्यक शास्त्र के पार जानेवाला) पु० समुद्र मथने के समय उसमें से प्रकट देवताओं का वैद्य जो हुआ, २ एक पण्डित का नाम जो विक्रमादित्य की सभा में था ।

सं० धन्वी—(धन्व=धनुष्, धन्व्=दौड़ना) धनुर्धर, तीरन्दाज़, कमठैत, धनुर्धारी ।

प्रा० धब्बा-पु० कपड़े पर दाग़ ।

प्रा० धमक- स्त्री० पांव का आहट, २ ताड़न ।

प्रा० धमका—पु० भारी चीज़के गिरने का शब्द, २ झिड़की, ३ बड़ी धूप वा गरमी ।

प्रा० धमकाना-क्रि० स० झिड़कना, डांटना, डराना, घुड़कना ।

प्रा० धमकाहट, धमकी — स्त्री० झिड़की, घुरकी, डाट, भबकी ।

सं० धमनी—(धम्+अन्+ई, धम=चलना वा शब्द करना) स्त्री० नाड़ी, नाड़िका, नब्ज़ रग ।

प्रा० धमाका—पु० एकतरहकी तोप जो हाथी पर लेजाई जातीहै ।

प्रा० धमाल—स्त्री० ताल, २ एक तरह का गीत जो होली में गाया जाताहै ।

सं० धरण—(धृ=रखना) स्त्री० कड़ी, बरँगा, २ नाभी, अथवा नाभी में की नस ।

सं० धरणा—स्त्री० पृथिवी, धरती ।

प्रा० धरणडिगना, धारणउखड़ना — बोल० नाभ टलना, पेट की रग बिगड़ना ।

सं० धरणि, धरणी — (धृ=रखना, वा पकड़ना) स्त्री० धरती, पृथ्वी, ज़मीन ।

सं० धरणिधर } (धरणि, वा धर-
धरणीधर } णी=धरती, धर=
रखनेवाला, धृ=रखना) पु० शेषजी, अनन्त, २ विष्णु का नाम, ३ पहाड़, ४ कछुवा ।

सं० धरणीसुता-(धरणी=धरती, सुता=बेटी) स्त्री० सीता, जानकी ।

प्रा० धरती-(सं० धरित्री) स्त्री० पृथ्वी, धरणी, भूमि ।

प्रा० धरना-(सं० धरण, धृ=रखना, पकड़ना) क्रि० स० रखना, रख-देना, २ सौंपना, ३ पकड़ना, पकड़ लेना, गहना ।

प्रा० धरनादेना } जब कोई मनुष्य
धरनाबैठना } किसी से रुपये मांगता हो और वह नहीं दे तब रुपये मांगनेवाला उसके दरवाज़े पर आ बैठता है और जबतक उसके रुपये का कुछ निबेड़ा नहीं होता तबतक न आप कुछ खाता है और न उसको खाने देता है उसको धरना देना वा धरना बैठना कहते हैं ।

प्रा० धरषना-(सं० धर्षण, धृष्=क्रोध करना वा अनादर करना) क्रि० स० दबाना, क्रोध करना ।

सं० धरा-(धृ=रखना) स्त्री० धरती, पृथ्वी, धरणी, ज़मीन ।

सं० धरातल-(धरा+तल) स्त्री० पृथ्वी का तल, भूतल, तहज़मीन ।

सं० धराधर-(धरा=धरती, धर=धारण करनेवाला, धृ=रखना) पु० वराह रूप विष्णु, २ पहाड़, शेषनाग ।

सं० धरित्री-(धृ=रखना) स्त्री० धरती, पृथ्वी, ज़मीन ।

प्रा० धरोहर-(धरना) स्त्री० गिरो, थाती, अमानत, बन्धक ।

सं० धर्ता-पु० ऋणी, धारणिक, क़र्ज़दार ।

सं० धर्म्म-(धृ=रखना) पु० पुण्य, पवित्र काम, न्याय, नेकी, २ पन्थ, मत, मज़हब, जाति व्यवहार, ३ क़ानून, व्यवस्था, ४ कर्तव्य कर्म, करने योग्य काम, ५ यमराज ।

सं० धर्म्मक्षेत्र-(धर्म्म+क्षेत्र) पु० पवित्र जगह, कुरुक्षेत्र ।

सं० धर्मज्ञ-(धर्म+ज्ञ=जाननेवाला ज्ञा=जानना) क० धर्म्मात्मा, धर्म्मज्ञानी ।

सं० धर्म्मधुरन्धर-(धर्म्म=पुण्य, धुरन्धर=बोझा उठानेवाला) गु० धर्म के काम में प्रधान, धर्मात्मा ।

सं० धर्म्मध्वजी-(धर्म्म=पुण्य, ध्वजी=ध्वजावाला) गु० पाखण्डी, कपटरूप जो जीविका के लिये जटा आदि बढ़ा लेता है ।

सं० धर्म्मपत्नी-(धर्म्म+पत्नी) स्त्री० पहली स्त्री जो एकही जाति

की हो और धर्म्म की रीति से ब्याही जाय ।

सं० धर्म्मपुत्र-(धर्म्म=धर्म्मराज, पुत्र =बेटा) पु० युधिष्ठिर ।

सं०धर्म्ममूर्त्ति-(धर्म्म + मूर्त्ति)पु०धर्म्म का स्वरूप, धर्मात्मा, धर्मावतार ।

सं०धर्म्मराज-(धर्म्म=न्याय,राज=राजा, राज्=शोभना, अर्थात् जो धर्म से शोभता है अथवा धर्म का राजा) पु० यमराज, २ युधिष्ठिर का नाम, ३ न्यायी राजा ।

सं०धर्मशाला-(धर्म + शाला) भि० स्त्री० वह मकान जहां गरीबों को खैरात बांटी जाती है, २ विचारस्थान, न्याय करने की जगह, कचहरी ।

सं० धर्म्मशास्त्र-(धर्म्म + शास्त्र) पु० व्यवस्थाशास्त्र, क़ानून की किताब जैसे मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य, अत्रि, विष्णु, हारीत, उशना, अङ्गिरा, यम, आपस्तम्ब, संवर्त, कात्यायन, बृहस्पति, पराशर, व्यास, शंख, लिखित, दक्ष, गौतम, शातातप, वशिष्ठ, ये धर्म्मशास्त्र प्रवर्तक हैं ।

सं० धर्म्मशील-(धर्मशीलस्वभाव) गु०साधु,पुण्यवान , धर्म्मात्मा,नेक।

सं० धर्म्मशीलता-भा० पु० साधुत्व, नेकी, धर्म्मकी प्रकृति ।

सं० धर्म्मात्मा-(धर्म्म + आत्मा) गु० पवित्र मनुष्य, साधु, नेक, पुण्यात्मा ।

सं० धर्माधिकरण-पु० जज्ज ।

सं० धर्माध्यक्ष-(धर्म=न्याय,अध्यक्ष =स्वामी) पु० न्यायी, न्याय करने वाला, मजिस्ट्रेट, जज ।

सं०धर्मनिष्ठ, **धर्म्मरत** } कर्म० पु० धर्म में ठहरा हुआ, धर्म में तत्पर, धर्म पर आरूढ़ ।

सं० धर्म्मावतार-(धर्म + अवतार) पु० धर्म का अवतार, धर्मस्वरूप, धर्ममूरत ।

सं० धर्म्मिष्ठ, **धर्म्मी** } (धर्म)गु०पुण्यवान्, न्यायी, साधु, धर्मात्मा, नेक ।

सं० धव-(धु वा धू=कंपाना) पु० पति, स्वामी, भर्ता, २ एक वृक्ष का नाम ।

सं० धर्ष-(धृष्=क्रोध करना) पु० प्रगल्भ, धृष्ट ।

सं० धर्षक-(धृष् + अक) क० पु० साहसी, दिलेर, धैर्यवान् ।

सं० धर्षण-भा० पु० दिलेरी करना, साहस करना ।

सं० धवल-(धाव=शुद्ध करना, वा धव=कंपाना और ला=लेना) गु० धौला, श्वेत, सफ़ेद, २ सुन्दर, पु० शुक्लवर्ण, धौलारंग, ३ एकवृक्ष

का नाम।

प्रा० धसकना—क्रि० अ० गड़ना, धसजाना, गिरना, पड़ना, बैठ जाना।

प्रा० धसना—क्रि० अ० खुबना, चुभना, छिदना, २ गड़ना, कीचड़ में पांव डूब जाना, धस जाना।

प्रा० धसान, धसाव—(धसा) पु० दलदल, पांका।

प्रा० धांगर—पु० किसान, कुली।

प्रा० धांधना—क्रि० स० भखना, भकोसना, अफरना।

प्रा० धांधल—स्त्री० नटखटी, झगड़ा, बेईमानी, लुट्टस, लूट।

प्रा० धांसना—क्रि० अ० खांसना, खोखना।

प्रा० धांसी—स्त्री० खांसी, खोखी।

प्रा० धाई, धाय—(सं० धात्री) स्त्री० लड़केको दूध पिलाने वाली, दाई।

प्रा० धाक—स्त्री० डर, भय, धमकी, आतंक २ ठाठ, धूमधाम, ३ नाम, यश, कीर्त्ति।

प्रा० धागा—पु० डोरा, तागा, सूत।

प्रा० धात—(सं० धातु) स्त्री० धातु शब्द को देखो।

सं० धाता—(धा=रखना, पालना) पु० ब्रह्मा, विष्णु, क० पालनेवाला।

सं० धातु—(धा=रखना) स्त्री० मनुष्य के शरीर का सार अंश, जैसे (बात पित्त कफ) २ बीज, वीर्य, ३ सोना, रूपा, तांबा आदि खानि से निकली हुई चीज, ४ व्याकरण में शब्दों का मूल अर्थात् ऐसा शब्द जिससे क्रिया आदि शब्द बनें।

सं० धातुविलेपक—(धातु=रांगा, पारा, विलेपक=लेप करनेवाला) क० पु० कलईसाज, कलईगर।

सं० धात्री—(धा=पालना) स्त्री० धाय, धाई, २ मा, माता, ३ आंवला।

प्रा० धान—(सं० धान्य) पु० बिन कूटा चावल।

प्रा० धाना, धावना—(सं० धावन, धाव्=जाना) क्रि० अ० दौड़ना, जल्दी से चलना, २ परिश्रम करना, ३ (सं० ध्यान) पूजना, अर्चना, आराधना करना।

प्रा० धानी—(धान) स्त्री० एकप्रकार का बिन कूटा चांवल, २ हलका हरा रंग।

सं० धान्य—(धा=पोषना, पालना, जिससे शरीरका पोषण होता है) पु० सब प्रकारका अनाज, पर विशेष करके बिनकूटा चांवल, धान।

प्रा० धाभाई—(सं० धात्राभ्राता) पु० दूधभाई, कोका।

सं० धाम—(धा=धारण करना, रखना) पु० घर, स्थान, गेह, मकान,

मसकन, जगह ।

प्रा० धायमारना } बोल० पुकार के
धायमाररोना } रोना, हायमार
के रोना ।

प्रा० धार–(सं० धारा, धृ=पकड़ना वा गिरना) स्त्री० लकीर, २ बहाव, सोता, प्रवाह, ३ नोक, तीखी अनी, ४ तीक्ष्णता, बाढ़, चोखाई ।

प्रा० धारमारना } बोल० तुच्छ
धारपरमारना } जानना, हलका जानना ।

सं० धारक–(धृ=रखना) कृ० पु० ऋणी, मक़रूज़, उधरहा ।

सं० धारण–(धृ=रखना) भा० पु० पकड़ना, रखना, संभालना, सहारना ।

प्रा० धारना–(सं० धारण) क्रि० स० स्मरण, चेत, याददाश्त रखना, पकड़ना, २ पहनना ।

सं० धारा–(धृ=गिरना स्त्री० बहाव, प्रवाह, सोता, चश्मा ।

सं० धारावाहिक–(धारा + वाहिक, वह=चलना) कृ० पु० परम्परागतिक, क़दीम राहपर चलनेवाला ।

सं० धारासार–पु० भारी वर्षा ।

प्रा० धारि–स्त्री० सेना, फ़ौज ।

प्रा० धारी–(सं० धारा) स्त्री० लकीर, रेखा, २ एक पौधे का नाम गु० रखनेवाला, धरनेवाला ।

सं० धार्मिक–(धर्म्म) गु० धर्मात्मा, धर्मिष्ठ, पुण्यवान, साधु, पुण्यात्मा ।

सं० धार्य्य–(धृ=धरना) कर्म० पु० धरने योग्य, लेनेलायक़ ।

सं० धावक–(धाव्=दौड़ना) कृ० पु० दूत, दौड़ाहा, चलनेवाला, क़ासिद ।

सं० धावन–(धाव्=दौड़ना) पु० जाना, दौड़ना, गमन, २ दौड़ाहा, दूत ।

सं० धावमान–गु० दौड़ता हुआ, भागता हुआ ।

प्रा० धावा –(सं० धावन) पु० दौड़, चढ़ाई, हल्ला, हमला ।

प्रा० धावामारना–बोल० चढ़ाई करना, छापा मारना, हमला करना ।

प्रा० धाह--स्त्री० हाय, कूक, चिंघार ।

सं० धिक्–वि० बो० फिट, छीछी, निंदा को जतलानेवाला शब्द ।

सं० धिक्कार–(धिक्=छीछी, कृ=करना) पु० फिटकार, तिरस्कार, शाप, छीछी, लानत ।

प्रा० धिकारना–(सं० धिक्कारण) क्रि० स० फिटकारना, तिरस्कार करना, लानतदेना ।

प्रा० धिया–(सं० धी) स्त्री० बेटी ।

प्रा० धिरकार–(सं० धिक्कार) पु० धिक्कार, फिटकार, अपमान ।

सं० धी–(ध्यै=सोचना) स्त्री० बुद्धि, मति, अक़्ल, ज्ञान, २ बेटी, पुत्री ।

सं०धीमत–गु० अक्लमन्द, बुद्धिमान्।

प्रा० धीमा, धीरा–(सं० धीर) गु० ढीला, धीरा, सुस्त, आलसी, काहिल, २ कोमल, शांत, ठंढा, स्थिर, गम्भीर।

प्रा० धीमे धीमे–क्रि० वि० बोल० धीरे धीरे, हौले हौले, आहिस्ता आहिस्ता।

सं०धीमान्–(धी=बुद्धि, मत्=वाला) गु० बुद्धिमान्, चतुर, निपुण, अक्लमन्द।

सं० धीर–(धी=बुद्धि, रा=लेना) गु० धीरज रखनेवाला, साहसी, धीर, स्थिर, क्षमावान्, संतोषी, साबिर, गम्भीर, शान्त, बुद्धिमान्, पंडित।

प्रा० धीरज–(सं० धैर्य) स्त्री० साहस, स्थिरता, सहनशीलता, बरदाश्त, सब्र, संतोष, धीरता, गंभीरता, दृढ़ता।

सं० धीवर–(धा=रखना, वा पकड़ना) पु० मल्लुवा, कैवर्त्त, मछली पकड़ने वालों की जाति।

प्रा० धुआं, धुवां–(सं० धूम) पु० धुवां, धूप, भाफ, २ मरण, मरना, जैसे "धुआंदेखिखरदूषण केरा" "जाइसुपनखारावणप्रेरा"।

प्रा० धुकड़पुकड़, धुकुड़पुकुड़–स्त्री० धड़क, थरथराहट, धड़धड़ाहट, हिलाव डुलाव।

प्रा०धुकधुकी–स्त्री० लटकन, गलेमें पहनने का गहना, २ घबराहट, हड़बड़ी, व्याकुलता, सोच।

सं० धुत–(धु=कँपना) क० पु० कम्पित, भीत, डराहुआ। [छल।

प्रा० धुत्ता–(सं० धूर्त्तता) पु० धोखा,

प्रा० धुत्तादेना–बोल० धोखादेना, फरेब करना, छलना।

प्रा० धुन–(सं० ध्यान) स्त्री० इच्छा, चाह, लहर, तरंग, लौ, अभ्यास।

प्रा० धुन, धुनि–(सं० ध्वनि) स्त्री० शब्द, आवाज, स्वर, नाद।

प्रा० धुनिया–(धुना) पु० रूई तूमनेवाला, नदाफ।

प्रा० धुन्ना, धुनना–(सं० धुनना, धु=कांपना) क्रि० स० तूमना, रूई को सुधारना, २ हिलाना, कंपाना, पीटना––सिरधुनना––बोल० दुख से सिर हिलाना या पीटना।

सं० धुर–(धृ=रखना, वा धुर्व्=मारना) पु० बोझा, भार, २ जूवा, ३ अंत, किनारा।

प्रा० धुर–पु० आरम्भ, शुरूअ, २ अवधि, अन्त। [अन्ततक।

प्रा० धुरसेधुरतक–बोल० आदिसे

सं० धुरन्धर–(धुरं भार को, धृ=रखना) क० बोझ उठानेवाला, २ भारवाहक संतोष के साथ काम पूराकरनेवाला, २ मुखिया, प्रधान, सरदार।

प्रा० धुरपद–(सं०ध्रुवपद) पु०एक प्रकार का गीत ।

सं० धुरा–(धृ=धरना) स्त्री० चिन्ता, भार, रथ की धुरी ।

प्रा० धुरी–(सं०धुरा, धृ=रखना, वा धुर्व्=मारना) स्त्री०गाड़ीके पहिये का लोहे का डंडा ।

सं० धुरीण–(धुर्=बोझ) रू० पु० धुरन्धर, बोझ उठानेवाला, २प्रधान, मुखिया,बैल, रथ, वृषभ, लांगला, अर्थात् बैल ।

सं० धुर्य्य–(धुर्=बोझ) रू० पु० धुरन्धर, बोझ उठानेवाला, २प्रधान, सिरदार ।

प्रा० धुलाई–(धुलाना) भा० स्त्री० कपड़े धोने की मजदूरी ।

प्रा० धुलाना–(धोना) क्रि० स० धुवाना, कपड़े साफ़ कराना ।

प्रा० धुलेंड़ी } स्त्री० होलीका दूसरा
धुलैंड़ी } दिन जिस में धूल उड़ाते हैं ।

प्रा० धुस्सा–पु० लोई, एक प्रकार का ऊनी कपड़ा ।

प्रा०धूआ } (सं०धूम) पु० धुवां
धूवां } धूम, धूम्र, भाफ़ ।

प्रा० धूवांधार–(सं० धूमाधार)पु० बहुत धुवां, गु० धुआंसा, इराया, भगाया, २ सुन्दर, सँवारा हुआ, शोभित ।

प्रा० धूंवारा–(सं०धूम) पु०धुएँके निकलने का मोखा अथवा राह ।

प्रा० धूनी–(सं० धूप) स्त्री० धूवां २ आग जिसको तपस्वी तपस्या करनेके लिये जलाते हैं, ३ किसी दवाको आग पर रखकर उसका धुवां पिलाना वा भूत प्रेत झाड़नेके समय किसी चीज को आगपर रख कर उसको महक सुँघाना, ४ किसी चीज के मांगने के लिये आग जला कर धरना देना ।

प्रा० धूनीदेना–बोल०धरना देना, बार २ मांगना, २ धुआँ, आग सु, लगाना, पिलाना ।

प्रा०धूनीलगाना–बोल० हठकरना अथवा बराबर मांगा करना ।

प्रा०धूनीलेना–बोल० धुआं पीना, बफ़ारा लेना ।

सं० धूप–(धूप्=तपना, वा चमकना, वा महकना) पु० गूगल और लोबान आदि सुगन्धितवस्तु जिसको पूजाके समय देवता के आगे आग पर रखते हैं ।

प्रा० धूप–(सं० धूप=तपना) स्त्री० घाम, तपिश । [भाफ़ ।

सं० धूम–(धू=कांपना) पु० धुआं-

प्रा० धूम–स्त्री० रौला, बखेड़ा, कोलाहल, हलचल, खड़बड़ी, हाहू,

चर्चा, शोहरत, नामवरी।

सं० धूमकेतु—धूम=धूआं, केतु=झंडा) पु० पूंछलतारा, २ आग, ३ केतु, ४ एक राक्षस का नाम।

प्रा० धूमधाम—स्त्री० भड़क, शोभा, ठाठ, बाट, २ हूहा, रौला, कोलाहल, भीड़भाड़।

सं०धूमयन्त्र=रेलका एंजन।

प्रा०धूमरा } धूमला } धूमा } (सं० धूम्र वा धूम्रल, धूम=धुआं, रा=लेना) गु० धूएं सा रंग लाल और काला मिलाहुआ।

सं० धूमवाहनी—(धूम+वाहनी) स्त्री० रेल, रेलका एंजन।

प्रा०धूर } धूल } (सं० धूलि)स्त्री० धूल, खाक, रेत, रज, रेणु।

प्रा०धूर—स्त्री० बिस्वे का बीसवां हिस्सा, बिस्वांसी।

सं०धूर्ज्जटि—(धूर्=बोझ, जटि वा जटा केशोंका समूह) पु० शिवका नाम, जटाधारी।

सं०धूर्त्त—(धूर्=वा धुर्व्=मारना, हानि पहुँचाना) क० नटखट, छली, फरेबी, मक्कार, कपटी, ठग, उचक्का, दुष्ट, हानि पहुँचानेवाला।

सं०धूर्त्तता—(धूर्त्त भा०स्त्री०नटखटी, मक्कारी, फरेब, ठगाई, छल कपट।

सं०धूलि } धूली } (धू=कांपना) स्त्री० धूर, धूल, रज, रेत, रेणु।

सं०धूसर—(धू=कांपना) गु० कबरा, भूरा, धुंधला, खाकी, मिटिया।

सं०धृत—(धृ=रखना)कर्म०पु०धारण किया हुआ, रक्खा हुआ, पकड़ा हुआ।

सं०धृतराष्ट्र(धृत=रक्खा है, राष्ट्र=राज, जिसने) पु० दुर्योधनका बाप और पांडवों का चचा।

सं०धृति-(धृ=रखना) स्त्री० धीरज सन्तोष, स्थिरता, मज़बूती, धैर्य, इस्तकलाल।

सं०धृतिमान्—गु० बुद्धिमान्, मतिमान्, अक्लमन्द। [आठ।

सं०धृतिसंख्या-गु०अठारह,दश और

सं०धृष्ट—(धृष्=ढीठ होना) क० पु० ढीठ, धीठ, साहसी, २ निर्लज्ज, ३ मगरा, मचला, गुस्ताख।

सं०धृष्टता—भा० स्त्री० ढिठाई, शोखी, साहसपन, गुस्ताखी।

सं०धृष्णु—क० पु० ढीठ, साहसी, शोख, २ निर्लज्ज।

प्रा०धेगामुष्टि-स्त्री० बोल० घूंसम घूंसा, धकमधक्का, मुक्कमुक्का।

सं०धेनु—(धे=पीना, जिसका दूध आदि पीते हैं वा जो अपने बछड़ोंको दूध पिलाती है) स्त्री० गाय, दूध देनेवाली गाय। [का नाम।

सं०धेनुक—(धेनु) पु० एक राक्षस

सं०धेनुमती(धेनु=गाय,मती=वाली)

स्त्री० गोमती नदी ।

प्रा०धेला-पु० आधा पैसा, (अधेला शब्द को देखो)

सं०धैर्य्य-(धीर) स्त्री० धीरज, स्थिरता, दिलेरी हिम्मत।

प्रा०धोक-स्त्री० देवता की मूरत के सामने झुकना, दण्डवत् प्रणाम।

प्रा०धोकड़=गु०महाबली, बलवान्, पराक्रमी पहलवान ताक़तवर।

प्रा०धोखा-पु० छल, कपट, दगा। ठगाई, चूक, भूल, भ्रम, निराश, ३सन्देह,४ मृगतृष्णा, कोई कल्पित बस्तु।

प्रा० धोखाखाना-बोल० धोखे में आना, ठगा जाना, बहकना, भूलना, भुलावे में आना।

प्रा०धोखादेना-बोल० ठगना, छलना, बहकाना, भुलावा देना, दग़ा देना, फ़रेब में लाना।

प्रा०धोती-(सं०धौत्र,धाव्=धोना) स्त्री० एक कपड़े का नाम।

प्रा०धोना-(सं०धावन,धाव्=धोना) क्रि० स० पखारना, साफ़ करना।

प्रा०धोप-स्त्री०एकप्रकार की तलवार।

प्रा०धोव } (धोना) पु० धोना,
धोप } साफ़ करना, पखारना।

प्रा०धोबी-(धोना) पु० कपड़े धोनेवाला।

प्रा०धौ-(सं० धातकी, धा=रखना) स्त्री० एकप्रकारकी लकड़ी।

प्रा०धोरी-पु० बैल, बर्द्ध, वृषभ।

प्रा०धौं अव्यय०नजाने, कि, याकि क्या। [क्रि० स० फूंकना।

प्रा०धौंकना-(सं० ध्मा फूंकना)

प्रा०धौंकनी (धौंकना) स्त्री० आग फूंकने की चमड़े की भाथी, धौंकी।

प्रा०धौताल-(सं० धनवन्त) गु० धनवान्, मालदार,मजबूत. बलवान्, ३ शूरमा, वीर, ४ दुष्ट, दुर्जन।

प्रा०धौन-(आधमन) पु० बीस सेर, आधा मन।

प्रा०धौंसा-पु० बड़ा नगारा।

सं०धौत-(धाव्=धोना) म्भ० पु० धोया हुआ, प्रक्षालित।

प्रा०धौरा } (सं० धवल) गु० श्वेत,
धौला } शुक्ल, सफ़ेद।

प्रा०धौल-स्त्री० धप्पा, थप्पड़, थाप।

प्रा०धौल जड़ना } बोल० ठठाना
धौलमारना } मुक्का मारना
धौललगाना } थाप मारना, थप्पड़ मारना।

प्रा०धौललगना-बोल० घटी सहना, हानिसहना, नुक़सान उठाना, घटी होना।

प्रा०धौलधप्पा-बोल० धप्पा धप्पी, मारकूट, चोट चपेट।

प्रा०धौलागिरि-(सं० धवलागिरि धवल धौला, गिरि पहाड़) पु०

हिमालय पहाड़ की एक चोटी।

सं० ध्यात-(ध्यै=चिन्ताकरना) कर्म० पु० चिन्तित, विचारित।

सं० ध्यातव्य-(ध्यै+तव्य) कर्म० पु० ध्यानयोग्य, यादके, लायक।

सं० ध्याता-क० पु० चिन्तक, विचारकर्त्ता, शोचक।

सं० ध्यान-(ध्यै=सोचना) पु० सोच, विचार, चिन्ता, परमेश्वर, में मन लगाना, लौ, लगन।

प्रा० ध्याना-(सं० ध्यान) क्रि० स० ध्यान करना, लौ लगाना, मन लगाना।

सं० ध्यानी-(ध्यान) क० पु० ध्यान करनेवाला, विचार, करनेवाला, सोचने वाला, योगी, भक्त।

सं० ध्यानीय-(ध्यै+अनीय) कर्म० पु० चिन्तनीय, विचारणीय, विचार योग्य, भजनयोग्य, यादके लायक़।

सं० ध्यायक-(ध्यै+अक) क० पु० चिन्तक, विचारी, योगी, भक्त।

सं० ध्येय-(ध्यै=विचारना) कर्म० पु० ध्यानयोग्य, विचारणीय, ध्याताई।

सं० ध्रुव-(ध्रु=ठहरना) गु० ठहरा हुआ, पक्का, दृढ़, अटल, २ ठीक, किल, सच, निश्चय, पु० विष्णु, २ एक भक्तकानाम जो उत्तानपाद राजाका बेटाथा, ३ ध्रुवकातारा, ४ उत्तरकेन्द्र।

सं० ध्वंस } (ध्वंस्=नाश करना)
ध्वंसन } भा० पु० नाश, क्षय हानि।

सं० ध्वंसक-(ध्वंस+अक) क० पु० नाशक, क्षयकारक, हानिकर्त्ता।

सं० ध्वंसित-(ध्वंस+इत) कर्म० पु० नाशित, क्षयकृत, हानिकृत।

प्रा० ध्वजा-(सं० ध्वज, ध्वज्=जाना) स्त्री० पताका, केतु, झंडा।

सं० ध्वन् } (ध्वन्=शब्द करना)
ध्वनि } भा० स्त्री० शब्द, स्वर, नाद, आवाज।

सं० ध्वनित-(ध्वन्+इत) कर्म० पु० शब्दित, उदित, कथित।

सं० ध्वस्त-(ध्वंस्=नीचे गिरना) कर्म० पु० गिरा हुआ, नीचे पड़ा हुआ, मात किया गया, हत किया गया।

सं० ध्वान्त-पु० अन्धकार, तम।

--:०:--

न

सं० न-क्रि० वि० नहीं, निषेध, अभाव, सूर्य, शनैश्चर, दीर्घ, मनुष्य।

प्रा० न } व्रजभाषा में और क-
नि } विता में बहुवचन का चिह्न जैसे "बेगिकरहु किन आंखिन ओटा" "तब कपीश चरननि शिरनावा"।

प्रा० नंग, नंगा — (सं० नग्न) गु० उघाड़ा, बिन कपड़े, वस्त्र हीन, दिगम्बर, २ निर्लज्ज, बेशरम ।

प्रा० नंगाझूरी—बोल० ढूंढना, ढूंढ ढांढ, झाड़ाझूड़ी ।

प्रा० नंगामुंगा, नंगामुनंगा, नंगधड़ंग — बोल० बिलकुल नंगा, दिगम्बर, वस्त्रहीन, नंगा, मादरजाद ।

प्रा० नंगेसिर—बोल० खुले सिर, उघाड़े सिर ।

प्रा० नक—(सं०नासिका) पु०नाक, नासिका, नासा ।

प्रा० नकघिसनी—बोल० दंडवत् करने में या आधीनी से जमीनपर नाक रगड़ना ।

प्रा० नकचढ़ा—बोल० चिड़चिड़ा, खुनसाहा, रिसहा, क्रोधी, जिसका बुरा स्वभाव हो ।

प्रा० नकटा—(नाक कटा) गु० नाक कटा हुआ, बिन नाक का, २ निर्लज्ज, बेशरम ।

प्रा० नकसीर (सं० नासिका नाक और शिरा नस) स्त्री० नाक की नस अथवा रग ।

प्रा० नकसीरफूटना, नकसीरचलना — बोल० नाकसे लोहू बहना ।

सं० नकार—(न=नहीं, कृ=करना) पु० नहीं, निषेध, न मानना, (अरबी में इनकार) ।

प्रा०नकारना— (सं० नकार) क्रि० स० नहीं मानना, निषेध करना, स्वीकार नहीं करना ।

सं० नकुल—(न=नहीं, कुल=वंश जिसके) गु० निर्वंश, कुलरहित, जिसके वंश न हो पु० युधिष्ठिरका भाई, पांच पांडवों में का चौथा, २ नेवला जानवर, ३ महादेव ।

प्रा० नकेल—(नाक) स्त्री० लकड़ी अथवा लोहे की बनी हुई एक चीज़ जो ऊँटके नाक में डाली जाती है और उस में डोरी डाल कर ऊँट को चलाते हैं ।

प्रा० नक्कू—गु० अपयशी, निखट्टू, बदनाम, नकारा, बुरा, नीच, निकम्मा । [रजनी ।

सं० नक्त—(नज्=लजाना) रात,

सं०नक्तक—पु० लघुवस्त्र, २ मलिन, ३ धूम्रवर्ण, धुमैला रंग ।

सं० नक्र—(न=नहीं, क्रम्=दूरजाना) पु० मगर ।

सं० नक्रराज—(नक्र+राज) पु० ग्राह, हांगर ।

प्रा० नक्षत्र—(नक्ष=पहुँचना व जाना) पु० तारा, नक्षत्र २७ हैं जैसे १ अश्विनी २ भरणी, ३ कृ

त्तिका, ४ रोहिणी, ५ मृगशिरा ६ आर्द्रा, ७ पुनर्वसु, ८पुष्य, ९श्लेषा, १० मघा, ११ पूर्वाफाल्गुनी, १२ उत्तराफाल्गुनी, १३ हस्त, १४चित्रा, १५ स्वाती, १६ विशाखा, १७ अनुराधा, १८ ज्येष्ठा, १९ मूल, २० पूर्वाषाढ, २१ उत्तराषाढ, २२ श्रवण, २३ धनिष्ठा, २४ शतभिषा, २५ पूर्वभाद्रपद, २६ उत्तरभाद्रपद, २७ रेवती ।

सं० नक्षत्री-(नक्षत्र, अर्थात् जो अच्छे नक्षत्रों में पैदा हुआ हो) गु० भाग्यवान् । [चन्द्र, चांद ।

सं० नक्षत्रेश-(नक्षत्र + ईश) पु०

सं० नख-(न=नहीं, ख=छेद जिसमें, अथवा, नह्=बांधना) पु० नाखून, नखर, बीस की संख्या, विभाग, गुड़, खांड़, स्त्री०सीप, सुक्ति ।

प्रा०नखसिखसे } बोल० सिरसे
नखसेसिखतक } पांव तक, सब का सब, बिलकुल ।

प्रा० नख-(फा० नख) पु० पतंग की डोरी ।

प्रा० नखत-(सं०नक्षत्र)पु०नक्षत्र ।

सं० नखमुख-पु० नम्रता, २ बाण, धन्वा ।

सं० नखायुध-(नख + आयुध) गु० व्याघ्र, कुकुट, बिल्ली, नृसिंह, मोर ।

सं० नखी-(नख) गु० फाड़नेवाले वे जानवर जिनके नख और पंजा होते हैं नखैल ।

प्रा० नग-पु० नगीना, अंगूठी में जड़ने का पत्थर ।

सं० नग-(न=नहीं, गम्=चलना) पु० पहाड़, पर्वत, २ वृक्ष, ३ सात की संख्या ।

प्रा० नगचाना-(सं० निकट) क्रि० अ० पास आना, पहुंचना ।

प्रा० नगन-(सं० नग्न) गु० नंगा ।

सं० नगपति } (नग=पहाड़, पति वा
नगाधिराज } अधिराज=राजा) पु० पहाड़ों का राजा, हिमालय पहाड़, सुमेरु ।

सं० नगर-(नग वृक्ष वा पहाड़ अर्थात् जिस में वृक्ष वा पहाड़ हों) पु० शहर, पुर, पत्तन ।

सं० नगरनारी-(नगर + नारी) स्त्री० वेश्या, पतुरिया ।

सं० नगरी-(नगर) स्त्री० पुरी, छोटा शहर ।

सं० नग्न-(नज्=लजाना)गु० नंगा, उघाड़ा, वस्त्रहीन, बिन कपड़े, पु० नंगा साधु वा भिखारी, बौध वा जैन मत का दिगम्बर ।

प्रा० नचवाना } (नाचना क्रि०
नचाना } स०नाचकराना ।

प्रा० नचवैया -(नाच) कृ० पु० नाचनेवाला, नृत्यक।

सं० नट -(नट्=नाचना) पु० नटवा, नर्तक, जायाजीवी, नटुआ, नटवर, स्वांगी, इन्द्रजाली।

प्रा० नटखट -(सं० नट) गु० कपटी छली, पाखंडी, धूर्त, फ़रेबी, फरफंदी, गँठीला।

प्रा० नटखटी – स्त्री० हरामज़दगी, दग़ाबाज़ी, फ़रेब, छल, कपट, धूर्तता।

सं० नटन –(नट्+अन) भा० पु० नाचना, नृत्य करना।

सं० नटवर –(नट+वर) पु० बड़ा नट, नटवा।

सं० नटमाया –(नट+माया) स्त्री० छलविद्या, बाज़ीगिरी, नटका खेल, धोखा, फरफन्द, प्रपंच।

सं० नटी –(नट) स्त्री० नटिनी, नटकी स्त्री, २ वेश्या, नाचनेवाली, पतुरिया।

सं० नत -(नम्=झुकना, नवना) र्म्म० पु० झुका हुआ, नमाहुआ, नम्र, नमित।

प्रा० नतरु –(सं० नान्यतर, न=नहीं अन्यतर और प्रकार) क्रि० वि० नहीं तो।

सं० नताङ्गी -(नत=झुक गया है स्तन और जांघ आदि के भार से अंग शरीर जिसका) स्त्री० स्त्री, नारी, सुन्दरी।

सं० नति –(नम्=झुकना) स्त्री० नवना, झुकना, नमस्कार, प्रणाम।

प्रा० नतिनी -(सं० नप्त्री) स्त्री० दोहती, बेटी की बेटी।

प्रा० नतैत –(नाता) गु० नातेदार, सगा, रिश्तेदार।

प्रा० नथ, नथनी –(सं० नाथ=पति, अर्थात् पतिके जीने का चिह्न) स्त्री० नाक का गहना, नाक की बाली, एक गहना जो चौड़ा और गोल होता है जिसको बेटी स्त्री नाक में पहनती है जिसका पति जीताहो।

प्रा० नथना –पु० नाक का छेद।

सं० नद –(नद्=शब्द करना) पु० बड़ी नदी जैसे ब्रह्मपुत्र, सोन, और सिंधु आदि।

सं० नदित –कृ० पु० शब्द कर्त्ता शब्द करनेवाला।

सं० नदी –(नद्=शब्द करना) स्त्री० बहताहुआ पानी, जलधारा, जलका प्रवाह, जैसे गंगा, यमुना आदि।

सं० नदीश –(नदी+ईश) पु० समुद्र, सागर।

प्रा० नदेश –(नद+ईश) पु० समुद्र सागर।

प्रा० ननद –(सं० ननन्दा, न=नहीं,

नन्द=प्रसन्न होना, अर्थात् जो बहुत, कुछ देने से भी राज़ी नहीं होती है) स्त्री० पति की बहन, ननदिया, ननदी।

प्रा० ननदिया } (सं०ननन्दा) स्त्री०
ननदी } ननद, पति की बहन।

प्रा० ननिहाल-(नाना) पु० नाना का घर।

सं० ननु अव्य० प्रश्न, निश्चय, अवधारण, अनुमति, अनुज्ञा, अनुनय, आमन्त्रण, सम्बोधन, परकृत अविकार, संभ्रम, स्तुति, आक्षेप, उत्प्रेक्षा, विरोधोक्ति।

सं० नन्द-(नन्द्=आनन्द करना, वा प्रसन्नहोना) पु० श्रीकृष्ण का पालनेवाला बाप, आनन्द, हर्ष।

सं० नन्दन-(सं० नन्द्=आनन्द करना, प्रसन्न होना) पु० बेटा, पुत्र, २ इन्द्रका बाग़, गु० सुखदायक, आनन्द देनेवाला।

सं० नन्दनन्दन-(नन्द+नन्दन) पु० नन्द का बेटा, श्रीकृष्ण, नन्दलाल।

सं० नन्दलाल-(नन्द+लाल प्यारा) पु० नन्द का बेटा, नन्दनन्दन, श्रीकृष्ण।

सं० नन्दि-(नन्द्=आनन्द करना) पु० शिवका द्वारपाल, द्यूतक्रीड़ा, जुआं खेलना।

सं० नन्दिघोष-(नन्दि+घोष) पु० अर्जुन का रथ, बन्दीजनों का शब्द, भाटों की स्तुति।

सं० नन्दिनी-स्त्री० पार्वती, गंगा, ननद, वशिष्ठमुनि की गौ।

प्रा० नन्दोई } (सं० ननन्दपति)
नन्दोसी } पु० ननद का पति

सं० नद्ध (नह=लगना) र्म० पु० लगाहुआ, नाधाहुआ।

प्रा० नन्हा } (सं० न्यून) गु०छोटा,
ननका } लघु, प्यारा, लाड़ला, पु० छोटा लड़का, बेटा।

सं० नपुंसक-(न=नहीं, पुंसक=पुरुष) पु० हिजड़ा, खोजा, क्लीव, नामर्द, गु० डरपोक, कायर, हेठा।

फ़ा० नफ़ीरी-स्त्री० तुरही, सहनाई, सहनाय।

सं० नभ } (नह=बाँधना) पु० आका-
नभस् } श, गगन, आस्मान, २ सावनका महीना, सूर्य्य, मेघ, वर्षा।

सं० नभग-(नभ=आकाश, गम्=जाना) पु० पखेरू, पक्षी।

सं० नभगनाथ } (नभग=पखेरू
नभगेश } नाथ वा ईश=राजा) पु० गरुड़।

प्रा० नभचर-(सं०नभश्चर, नभस्=आकाश, चर=चलनेवाला, चर=

चलना) पखेरू, पक्षी, २ विद्याधर, मेघ, ४ हवा, पवन, गु० आकाश में चलनेवाला।

सं० नभोधूम – पु० मेघ, वारिद।

सं० नमः–(नम्=नमना) अव्यय० नमस्कार, प्रणाम, २ दान।

सं० नमस्कार–(नमस्=प्रणाम, कृ=करना) पु० प्रणाम, दण्डवत्।

सं० नमित–(नम्=झुकना) स्त्री० झुकाहुआ, लचाहुआ।

सं० नम्र–(नम्=नमना, झुकना) गु० झुकाहुआ, अधीन, विनयी, मिलनसार। [आधीनता, विनय।

सं० नम्रता–(नम्र) भा० स्त्री०

सं० नय–(नी=लेजाना, चलाना, वा पाना) स्त्री० नीति, इन्साफ़।

सं० नयन–(नी=लेजाना, पहुँचाना, वा पाना) गु० पु० आंख, नेत्र, लोचन।

सं० नयनपट–(नयन=आंख, पट=परदा) पु० पलक।

प्रा० नयना–(सं० नयन) स्त्री० आंख की पुतली, आंख का तारा।

सं० नयनागर–(नय=नीति, नागर =चतुर) गु० नीतिमें निपुण, नीति में चतुर, अथवा, प्रवीण, नीति जाननेवाला।

सं० नयनामृत–(नयन+अमृत) पु० अञ्जनविशेष, सुरमा, काजल।

प्रा० नया, नवा } (सं० नव) गु० नवेला, नवीन, टटका, नूतन।

प्रा० नयेसिरसे-बोल० फिरसे, दूसरी बारसे।

सं० नर–(नृ=लेजाना, वा चलाना) पु० मनुष्य, पुरुष, मर्द, मनुष्यजाति, २ परमेश्वर, ३ नरावतार, अर्जुन।

सं० नरक–(नर मनुष्य, कै=शब्द करना, जहां पापी रोते हैं, वा नृ=लेजाना, जहां पापी लोग ले जाये जाते हैं) पु० पापों के फल भुगतने की जगह, दोज़ख १ तामिस्र २ अन्धतामिस्र ३ रौरव ४ महारौरव ५ कुंभीपाक ६ कालसूत्र ७ असिपत्रवन ८ शूकरमुख ९ अन्धकूप १० कृमिभोजन ११ सन्दंश १२ तप्तभूमि १३ वज्रकंटक १४ शाल्मली १५ वैतरणी १६ पूयोद १७ प्राणरोध १८ विशसन १९ लालाभक्ष २० सारमेयादन २१ अवीचिरयःपान २२ क्षारकर्दम २३ रक्षोगण भोजन २४ शूलप्रोत २५ दन्तशूक २६ अवनिरोधन २७ पर्यावर्तन २८ सूचीमुख।

सं० नरककुण्ड–(नरक+कुण्ड) पु० वह कुण्ड जिसमें पापीलोग दुःख भुगतने के लिये डाले जाते हैं ८६ हैं वह ब्रह्मवैवर्त्तपुराण में वर्णन किये गये हैं।

प्रा० नरकट, नरकल } (सं० नलकाण्ड) पु० सरकण्डा, एक

प्रकार का बांस ।

सं० नरकासुर-(नरक + असुर) पु० एकराक्षस का नाम जो कंस का मित्रथा ।

सं० नरकेशरी-(नर=मनुष्य, केशरी =सिंह) पु० नरसिंह अवतार, विष्णु का चौथा अवतार ।

सं० नरकान्तक-(नरक + अन्तक) पु० विष्णु ।

सं० नरकदेवता-स्त्री० अभाग्य, दरिद्र, यमराज, चित्रगुप्त ।

सं० नरकामय-(नरक + आमय) पु० कोढ़रोग, जिससे शरीर नरक सम होजाय ।

सं० नरङ्ग } पु० नारंगी, नारङ्ग,
नारङ्ग } कौला ।

सं० नरनारायण-(नर + नारायण) पु० श्रीकृष्ण और अर्जुन का अवतार, दो मुनि ।

सं० नरपति-(नर + पति) पु० मनुष्यों का राजा, राजा, महाराज, भूपाल ।

सं० नरपुर-(नर + पुर) पु० मर्त्यलोक, पृथ्वी, यह लोक ।

सं० नरमेध-(नर=मनुष्य, मेध=यज्ञ) पु० नरबली, वह यज्ञ जिस में मनुष्य होमा जाता है ।

प्रा० नरसिंगा-(सं० नलशृंग, नल=नली, शृंग=सींग) पु० तुरही, सींगी, एकप्रकार का बाजा ।

सं० नरसिंह (नर + सिंह) पु० विष्णु का चौथा अवतार जो हरिणकशिपु को मारने के लिये और प्रह्लाद के बचाने के लिये हुआ था, २ मनुष्यों में श्रेष्ठ मनुष्य, नरश्रेष्ठ ।

प्रा० नरसों-पु० आजसे चौथा दिन, (पहला अथवा पिछला) ।

सं० नरहरि-नर=मनुष्य, हरि=सिंह) पु० नरसिंह, विष्णु का चौथा अवतार, २ तुलसीदास के गुरु का नाम ।

सं० नराधम (नर + अधम) पु० मनुष्यों में नीच, पापी, नीच, कमीना ।

सं० नराधिप (नर=मनुष्य, अधिप= =राजा) मनुष्यों का राजा, नरपति, बादशाह ।

प्रा० नरिया-पु० खपरा ।

प्रा० नरेटी-स्त्री० गला, घांटी, गर्दन, टेंटुवा । [घोटना ।

प्रा० नरेटीदबाना-बोल० गला

सं० नरेन्द्र-(सं० नर + इन्द्र) पु० राजा, नरपति ।

सं० नरेश } (नर=मनुष्य, ईश वा
नरेश्वर } ईश्वर=स्वामी) पु० राजा, नरेन्द्र, नरपति ।

सं० नर्त्तक-(नृत्=नाचना) कृ० पु० नाचनेवाला, नट ।

सं० नर्त्तकी-(नर्त्तक) कृ० स्त्री० नाचनेवाली, नटनी ।

सं० नर्त्तन—(नृत्=नाचना)भा० पु० नाच, नृत्य।

सं० नर्तनप्रिय—गु० जिसको नाचना अच्छा लगे, मोर।

सं० नर्दक—(नर्द्=शब्द करना) क० पु० बोलनेवाला फा० नर्द स्त्री० गोट।

सं० नर्म्मद—(नर्म्म=हंसी वा आनंद, दा=देना) क० पु० सुखद, सुखदायक, आनंदकारी, खुशी देनेवाला।

सं० नर्म्मदा—(नर्म्म=हँसीवाआनंद, दा=देनेवाली, दा=देना) स्त्री० एक नदीका नाम जो दक्षिण में है, रेवा, मेकलसुता।

सं० नल—(नल्=बांधना) पु० सरकंडा, सेंठा, नरकट, नेज़ा, बाँस, २ नली, फोंफी, चोंगा, टोंटा, टोंटी, ३ नाली प्रनाली, ४ एक राजा का नाम, ५ एक बन्दर का नाम, ६ एक राक्षस का नाम।

सं० नलकूबर—पु० कुबेरकेदो बेटेजो नारदमुनिके शापसे पेड़ होगये थे।

सं० नलनीर—पु० फव्वारा।

सं० नलिन—(नल्=बांधना) पु० कमल, पद्म, २ पानी, ३ सारस।

सं० नलिनी—(नलिन) स्त्री० कमलिनी, कुमुदिनी, २ कमलों का समूह, ३ कमलों से भरा तालाब।

प्रा० नली—(सं० नल) स्त्री० फोंफी, चोंगा, टोंटी, २ नरेटी, सांसी, ३ बंदूककी नाल, ४ टंगड़ीकी हड्डी।

सं० नव—(नु=सराहना) गु० नया, नवीन, नूतन, २ नौ संख्या, ९।

सं० नवखण्ड—(नवनौ, खण्ड भाग) पु० भरतखंड आदि पृथ्वी के नौखंड।

सं० नवग्रह—(नव+ग्रह) पु० सूर्य आदि नौग्रह, जैसे १ सूर्य, २ चांद, ३ मंगल, ४ बुध, ५ बृहस्पति, ६ शुक्र, ७ शनि, ८ राहु, ९ केतु।

सं० नवदुर्गा—(नव दुर्गा) स्त्री० दुर्गा, की नौ मूर्त्ति, जैसे १ शैलपुत्री, २ ब्रह्मचारिणी, ३ चन्द्रघण्टा, ४ कूष्माण्डा, ५ स्कन्दमाता, ६ कात्यायनी, ७ कालरात्री, ८ महागौरी, ९ सिद्धिदा।

सं० नवद्वार—(नव+द्वार) पु० शरीरके नौ रस्ते, २ आंखें, २ कान, २ नाकके छेद, सातवां मुँह, आठवां लिंग नवां गुदा जैसे "नवद्वार का पींजरा यामें पंछी पौन" (कबीर)।

सं० नवनिधि—(नव नौ, निधि ख़ज़ाना) स्त्री० संपदा, कुबेरका धन, कुबेर का खज़ाना।

प्रा० नवनी—(सं० नवनीत) स्त्री० मक्खन, नैनू।

सं० नवनीत—(नव नया, नी=लेजाना) पु० मक्खन, माखन, नैनी, नवनी।

सं० नवबाला—(नव=नई, बाला=

जवान स्त्री वा लड़की) स्त्री० नवयौवना, सोलह बरसकी लड़की, जवान स्त्री ।

सं० नवम-(नव) गु० नवां ।

सं० नवमी- (नवम) स्त्री० नौमी, नवीं तिथि ।

सं० नवयौवना-(नव=नई, यौवना =जवानस्त्री) स्त्री० जवान स्त्री, नव बाला, नवोढ़ा ।

सं० नवरत्न- (नव + रत्न) पु० नौजवाहिर (अर्थात् १ हीरा, २ पन्ना, ३ माणिक, ४नीलम, ५लहसुनिया, ६पुखराज,७गोमेद,८मोती,९मूंगा) २ विक्रमादित्य की सभाके नौपंडित (१ धन्वन्तरि,२ क्षपणक, ३अमरसिंह,४ शंकु,५ वेतालभट्ट,६ घटकर्पर,७ कालिदास, ८वाराहमिहिर, ९ वररुचि) ३ हाथमें पहननेका एक गहना जिसमें नौरत्न जड़े हों ।

सं० नवरात्र-(नव=नौ, रात्र रातों का समूह) पु० आश्विनसुदी परिवा से ले नौमीतक के नौ दिन रात, आश्विन चैत, असाढ़ और माघ के शुक्लपक्षके नौ दिन रात नवरात्र कहलाते हैं, दुर्गा पूजा के नौ दिन ।

सं० नवल-(नव=नया, ला=लेना= गु० नया, नवा, नवीन, सुन्दर, मनोहर, पु० एक पौधेका नाम ।

सं० नवशिक्षक- (शिक्ष=सीखना) क० पु० नया पढ़ने वाला,मुबतदी ।

सं० नवांश-(नव + अंश) पु० नवां

प्रा० नवाड़ा-(नाव) पु० एक प्रकार की नाव, छोटी नाव ।

प्रा० नवाना-(सं० नमन, नम्= झुकना) क्रि० स० झुकाना, नीचे करना, २ बश करना ।

सं०नवीन-(नव, नु=सराहना) गु० नया, नवा, नूतन ।

सं० नवोढ़ा-(नव + नवीना, ऊढ़ा= स्त्री)स्त्री०नईब्याहीहुई,नईस्त्री,बनी ।

सं० नव्य—गु० नया ।

सं० नश्वर-(नश=नहीं दीखना, नाश होना) क० पु० नाश होने वाला, विनाशी, २ हानिकरने वाला, हिंसक ।

सं० नष्ट—(नश्=नाश होना) क० पु० जो नाश हुआ, भ्रष्ट, विनष्ट, मलमेट, मटियामेट । [दुष्टा ।

सं०नष्टा-स्त्री० व्यभिचारिणी, भ्रष्टा,

प्रा० नसाना, नसावना (सं० नाशन, नश= =नाश होना)क्रि० स० नाश करना, बिगाड़ना ।

प्रा० नहनी, नहरनी (सं०नखहरणी) क० स्त्री० नखकाटने का औज़ार ।

प्रा० नहलाना-(न्हाना) क्रि०स०

स्नान कराना, अंग धोना।

प्रा० नहान-(न्हाना) पु० स्नान।

प्रा० नहाना / न्हाना (सं० स्नान, वा अवगाहन) क्रि० अ० स्नान करना, शरीर शुद्ध करना, अंगधोना।

प्रा० नहानी-(न्हाना) कपड़ों से होने का समय, रज फूल।

प्रा० नहारुआ—पु० नार, जांघ में अथवा और कहीं शरीर में एक सूतसा रोग जो निकलता है।

प्रा० नहियर-पु० पीहर=मैका।

प्रा० नहीं-(सं० नहि, नह=बांधना रोकना) क्रि० वि० निषेध, न-मना, नांह।

प्रा० नाइन- स्त्री० नाई की स्त्री।

प्रा० नाई / नाऊ (सं० नापित) पु० हज्जाम, हजामत बनाने वाला, उस्तां।

प्रा० नाईं-स्त्री० भांति, तरह।

प्रा० नांदिया-(सं० नन्दि) पु० महादेव का वाहन बैल।

प्रा० नांव / नाऊं (सं० नाम) पु० नाम संज्ञा, २ यश, नामवरी।

प्रा० नांह-(सं० ना, वा नहि) क्रि० वि० नहीं, निषेध, न।

प्रा० नाक-(सं०नासिका) पु०स्त्री० नासा, नासिका, सूंघनेकी इन्द्री।

प्रा० नाक कटाना—बोल० अपमान करना, अनादरकरना, पानी उतारना, २ बदनाम होना।

प्रा० नाककटी होना--बोल० अपना मान खोना, अपनी बड़ाईको मिटाना, बदनाम होना।

प्रा० नाक का बाल-बोल० जिस का बहुत मान हो, प्यारा, जिसका बहुत आदर किया जाय।

प्रा० नाक चढ़ाना—बोल०क्रोधित होना, अप्रसन्न होना, गुस्सा होना, नाराजहोना।

प्रा० नाक रखना—बोल० अपना यश बनारखना, अपनी इज्जत को बना रखना।

प्रा० नाक सकोड़ना-बोल० नाक चढ़ाना, अप्रसन्नहोना,नाराजहोना।

सं० नाक-(न=नहीं, अक=दुःख अर्थात् जहां दुःख नहीं है और अक=बना है, अ=नहीं और क-सुख, अर्थात् सुख नहीं दुःख) पु० स्वर्ग, देवलोक।

सं० नाकपति-(नाक=स्वर्ग, पति =राजा) पु० स्वर्गका राजा, इन्द्र।

सं० नाकनटी-(नाक=स्वर्ग, नटी= नाचनेवाली) स्त्री० अप्सरा।

प्रा० नाका-पु० रस्ते का अन्त, २ सुई का छेद, ३ गली, राह, नाकेबन्दी, बोल० रस्ता बन्द करना।

प्रा० नाका—(सं०नक्र) पु० मगर, घड़ियाल, ग्रांगर ।

सं०नाग—(न=नहीं,अगठहराहुआ) पु० कश्यपमुनि की स्त्री कद्रू के बेटे जिन का मुँह मनुष्य का और फण और पूंछ सांपकी होती है जो पाताल में रहते हैं और देवता कहलाते हैं, सांप, सर्प, २ हाथी, ३ नागकेशर ।

सं० नागकन्या—(नाग+कन्या) स्त्री० नागों की अथवा पाताल के देवताओं की लड़कियां जो बहुत रूपवती और सुन्दर होती हैं ।

सं० नागकेशर—पु० फूलों के एक पेड़ का नाम ।

सं० नागदन्त, नागदन्तक (नाग=हाथी,दन्त=दांत) पु० हाथी-दांत, २ दोकांटोंका टेकन,जो हाथी-के दांतकी तरह होताहै स्त्री० खूंटी ।

प्रा० नागन, नागनी (सं० नागनी) स्त्री० नागकीस्त्री, सांपिनी, सर्पिणी ।

सं० नागपञ्चमी—(नाग+पञ्चमी) स्त्री० सावनसुदी पञ्चमी जिस दिन हिंदूलोग सांपकी पूजा करते हैं ।

सं० नागपाश—(नाग=सांप,पाश=फंदा) स्त्री० वरुण का अस्त्र, फन्दा, फांसी, फांस ।

प्रा०नागफांस- नाग=पाश) स्त्री० वरुण का अस्त्र, फंदा,फांसी,पाश ।

प्रा० नागबेल-(सं०नागवल्ली) स्त्री० पान की बेली ।

सं० नागर—(नगर शहर) गु०नगर का बासी,चतुर,प्रवीण, २ गुजराती ब्राह्मणों की एकजाति ।

सं० नागरी—(नागर) स्त्री० चतुर स्त्री, २ नागरकी स्त्री, ३ देवनागरी अक्षर वा भाषा ।

सं० नागरिपु-(नाग=हाथी, रिपु=वैरी) पु० सिंह, शेर, बाघ ।

प्रा०नागल-(सं० लाङ्गल, लगि=मिलना वा जाना) पु० हल ।

सं० नागलोक—(नाग+लोक)पु० नागों का लोक, पाताल ।

प्रा०नागा-(सं०नग्न)पु०नंगेसंन्यासी।

प्रा० नागिन, सं० नागिनी (नाग) स्त्री०नागन, सांपनी, सर्पिणी ।

प्रा०नांघना-(सं०लङ्घन) क्रि०अ० लांघना,पार होना, उतरना,कूदना ।

प्रा० नाच—(सं०नाट्य,वा नृत्य) पु० नाचना, नृत्य, नाट्य ।

प्रा०नाचनचाना-बोल० खिझाना, चिढ़ाना, सताना ।

फ़ा० नाज़=नखरा, घमण्ड, मान ।

सं०नाट-(नट्=नाचना) पु०कर्णाटक देश, नाच, नृत्य ।

सं०नाटक—(नट्=नाचना) क०पु० एक प्रकार का काव्य जिस में नट नटी के खेल की रीति पर वर्णन

होताहै जैसे "शकुन्तलानाटक" विक्रमोर्वशी "वेणीसंहार" "उत्तररामचरितआदि", २ नट, नाचनेवाला ।

सं०नाटन-भा० पु० नाचना, नर्तन ।

प्रा० नाटा-गु० बावना, ठिगना, पस्तक़द ।

सं० नाटेय-पु० नटीसुत, वेश्यापुत्र ।

सं० नाट्य-(नट) पु० नटों का काम जैसे नाचना, गाना और बजाना ।

सं० नाट्यशाला-(नाट्य+शाला) स्त्री० नाचघर, रंगशाला, जहां नाटक होताहो ।

प्रा०नाट-पु० नास्ति, शून्यता, अभाव, नाश ।

सं० नाड़ि, नाड़ी (सं० नड़ गिरना) स्त्री० धमनी, शिरा, नब्ज़, नस । [नासूर ।

सं० नाड़ीव्रण-पु० नसोंका घाव,

प्रा० नातर-(सं० नान्यतर, वा नान्यथा, न=नहीं, अन्यतर वा अन्यथा और प्रकार) क्रि० वि० नहीं तो ।

प्रा० नाता-(सं० ज्ञातेय, ज्ञाति=जाति भाई) पु० सम्बंध, अपनायत, रिश्तेदारी । [की बेटी ।

प्रा० नातिन-(सं०नप्त्री) स्त्री० बेटी

प्रा० नाती-(सं०नप्ता, न=नहीं, पत्=गिरना, अर्थात् नाती के होने से पितर अर्थात् पुरुषे नीचे नहीं गिरते हैं) पु० बेटी का बेटा, दोहता ।

सं० नाथ-(नाथ=मांगना जिससे मांगते हैं) पु० स्वामी, मालिक, पति, धनी, २ योगियों की पदवी, जैसे गोरखनाथ, गंभीरनाथ ।

सं०नाथ-(नाथ=सताना, दुःखदेना) स्त्री० रस्सी जो बैल के नाकमें डाली जाती है ।

प्रा० नाथना-(सं० नाथन, नाथ सताना वा दुःख देना) क्रि० स० बैलकी नाक छेदना ।

सं०नाद-(नद्=शब्द करना) पु० शब्द, गर्ज, आवाज, ध्वनि, मिट्टी का बर्तन ।

सं०नादन-(नाद्+अन) भा० पु० शब्द करना, गर्जना, नाद करना ।

प्रा० नानक-पु० सिखों के मत का चलानेवाला ।

प्रा० नानकपंथी, नानकशाही पु० नानक के मत को मानने वाला, सिख ।

सं० नाना-अव्य० अनेक प्रकार, भांति भांति, उभयार्थ । [मह ।

प्रा० नाना-पु० मा का बाप, माता-

सं० नानार्थ-(नाना+अर्थ) पु० बहुत अर्थ, अनेकप्रयोजन, बहुताशय ।

सं० नान्दी-(नद्=शब्द करना) स्त्री० देवता पितर जहाँ आनन्द का शब्द करें, प्रशंसा, नक़ारा, नगारा, स्तुतिसंयुक्त आशीर्वाद ।

सं० **नान्दीमुख**—पु० वृद्धिश्राद्ध, वृद्धिश्राद्धभुक् पितृगण, कुआं के ढांपनेका पट, कूपमुखबन्धन ।

प्रा० **नाप**—(सं० मापना, वा नापना) पु० माप, परिमाण,—नापजोख, बोल० नापतौल ।

प्रा० **नापना**—(सं० मापनं मा=मापना) क्रि० स० मापना, परिमाण करना ।

सं० **नापित**—पु० नाई, हज्जाम ।

सं० **नाभि** (नह=बांधना) स्त्री० नाभ, नाभी, तोंदी, ढुंढी, कस्तूरी, पु० नाम राजाका ।

सं० **नाम**—(नम् पुकारना) पु० नाँव, संज्ञा, पदवी, २ यश, ख्याति ।

सं० **नामकरण**—(नाम + करण) पु० लड़के का नाम रखना, नाम देना, लड़के के पैदा होने के पीछे दशवें दिन नाम रखने का संस्कार अर्थात् रीति ।

प्रा० **नामकरना**-बोल० नामी होना, नामवर होना, यशस्वी होना, विख्यात होना, प्रसिद्ध होना ।

प्रा० **नाम डुबोना**—बोल० अपना यश खोना, बदनाम होना ।

प्रा० **नामदेना**—बोल० नाम रखना।

प्रा० **नाम धरना**—बोल० नाम रखना, नाम ठहराना, किसी नाम से पुकारना, खराब करके कहना, बुरा नाम रखना । [वाचक ।

सं० **नामधेय**—पु० नाम, संज्ञा, नाम-

प्रा० **नाम निकालना**—बोल० नामी होना, नाम करना, २ दोषी का नाम निर्णय करना ।

प्रा० **नाम रखना**—बोल० नाम धरना, नाम देना ।

प्रा० **नाम लेकर मांग खाना**—बोल० दूसरे मनुष्य के नामसे भीख मांग खाना ।

प्रा० **नाम लेना**—बोल० सराहना, प्रशंसा करना, २ परमेश्वर का नाम लेना, जप करना, माला फेरना । [यश फैलना ।

प्रा० **नामहोना**—बोल० यश होना,

प्रा० **नामी**—(सं० नाम) गु० विख्यात, यशस्वी, उजागर ।

प्रा० **नामीहोना**—बोल० नामवर होना, प्रसिद्ध होना, विख्यात होना, उजागर होना ।

सं० **नायक**—(नी=लेजाना वा चलाना) पु० अगुवा, मुखिया, सरदार, प्रधान, २ सेनापति, थोड़ीसी सेना का सरदार, ३ प्रेमाभिलाषी पुरुष, ४ नाचने और गाने में निपुण पुरुष ।

प्रा० **नायन**—स्त्री० नाई की स्त्री ।

सं० **नायिका**—(नायक) स्त्री० नायक की स्त्री, जवान स्त्री वा लड़की,

२ कुटनी, दूती, ३ रूपवती स्त्री, सुन्दर स्त्री, साहित्य में नायिका तीन प्रकार की हैं (१ स्वकीया जो केवल अपने पतिही से प्रेम करे, २ परकीया जो पराये पुरुषसे प्रीति करे, ३ सामान्या जो धन लेकर किसी से प्रीति करे) जैसे "स्वकिया व्याही नायिका परकीया परवाम । सो सामान्या नायिका जाके धन सों काम" अवस्था भेद से प्रत्येक नायिका आठ प्रकार की हैं (१ प्रोषितपतिका, २ खंडिता, ३ कलहान्तरिता, ४ विप्रलब्धा, ५ उत्कण्ठिता, ६ वासकशय्या, ७ स्वाधीनपतिका, ८ अभिसारिका)।

प्रा० नार—(सं० नारी) स्त्री० लुगाई, स्त्री, २ (सं० नाल) बंदूक की नाल वा नली, ३ कमलों की नाल, ४ गरदन ।

प्रा० नारकी-(नरक) गु० नरकवासी, नरक भोगनेवाला जीव, २ नरक ।

प्रा० नारंगी, नारंज (सं० नारङ्ग) स्त्री० केवला, कौला, एक प्रकारका खटमीठा फल ।

सं० नारद—(नार=ज्ञान, दा=देना) पु० एक ऋषिका नाम, ब्रह्मा का बेटा और दश देवऋषियों में का एक देवऋषि ।

सं० नाराच-(नार=मनुष्योंकासमूह, आ=चारोंओर से, चम्=खाना) पु० तीर, बाण ।

सं० नारायण—(नार=मनुष्यों का समूह, अयन=स्थान, अर्थात् जिन में सब मनुष्य रहते हैं, वा नार=पानी, अयन=स्थान, अर्थात् जो क्षीरसमुद्रमें सोते हैं) पु० विष्णु का नाम, आदिपुरुष ।

सं० नारायणी—(नारायण) स्त्री० विष्णु की पत्नी, लक्ष्मी, २ गंगा, ३ शतावरी ।

सं० नारिकेल—(नारि=डांठी, क=हवा वा पानी, इल=चलना, अर्थात् जिसकी डांठी हवा से वा पानी से बढ़ती है) पु० नारियल, श्रीफल ।

प्रा० नारियल—(सं० नारीकेल) पु० श्रीफल, नारिकेल, एक फल का नाम ।

सं० नारी—(नर) स्त्री० लुगाई, स्त्री, औरत, अबला, बनिता, जन ।

प्रा० नारू—नहारु शब्द को देखो ।

सं० नाल-(नल्=बांधना व चमकना) स्त्री० नली, २ बंदूक की मुहरी वा नली, ३ मृणाल, कमलकी डांठी, डांडी, जुआंकी चिरागी ।

प्रा० नाला—पु० नहर, छोटी नदी, सोता, २ पनाला, मोरी ।

प्रा० नालकी-स्त्री० एकप्रकार की पालकी ।

सं० नालिक-(नाल्+इक) क० स्त्री० बन्दूक, भुशुण्डी ।

प्रा० नाव-(सं० नौ) स्त्री० नौका, डोंगी, तरणी ।

प्रा० नावना } (सं० नमन, नम्= नाना } झुकना) क्रि० स० झुकाना, निहुराना, शिर झुकाना, नमस्कार करना ।

प्रा० नावरि-स्त्री० नाव झुकाना, नाव फेरना, नावपर का खेल ।

सं० नाविक-(नौ) क० पु० मांझी कर्णधार, केवट, मल्लाह ।

सं० नाश-(नश्=नाश होना) भा० पु० ध्वंस, बरबादी, नष्टहोना, क्षय, हानि, बिगाड़ ।

सं०नाशक-(नश=नाशकरना क० पु० नाश करनेवाला, उजाड़ू, बिगाड़करनेवाला, हानिकरनेवाला ।

सं० नाशन (नाश्+अन) भा० पु० नाश करना, बिगाड़ देना, उड़ा देना ।

सं०नाशवान्-क०पु०नाशहोनेवाला।

सं० नाशनीय } र्म० पु० नाश नाशितव्य } करनेयोग्य, उजा- नाश्य } ड़नेलायक ।

सं० नाशी-(नाश्+ई) क० पु० नाशकरनेवाला, उड़ाऊ, उजाड़ू ।

प्रा० नास-(सं० नाश) पु० नाश, २ (सं० नस्य, नासा=नाक) स्त्री० हुलास, सुंघनी ।

सं० नासमझ-गु० अबोध, अज्ञान ।

प्रा० नासना (सं० नाश) क्रि० अ० भागना, पलाना, पीठदेना, २ क्रि० स० नाशकरना ।

सं० नासा } (नास्=शब्दकरना) नासिका } स्त्री० नाक, सूंघने की इन्द्रिय ।

सं० नासीर-(नास्=शब्द करना) पु० सेना का मुख, आगे चलने वाली सेना ।

सं० नास्ति-(न=नहीं, अस्ति=है, अस्=होना)नहींहै, नाहीं, अभाव ।

सं० नास्तिक-(नास्ति=नहीं है, अर्थात् परलोक और ईश्वर वा सृष्टि का कर्ता नहीं है ऐसा कहनेवाला) पु० ईश्वर और परलोक को नहीं माननेवाला, अनीश्वरवादी ।

सं०नास्तिकवाद्-भा० पु० ईश्वर को न मानना, नास्तिकोंका झगड़ा, कुफ्र की बातें ।

सं० नास्तित्व-भा० पु० अभाव, शून्यता, नाठ ।

प्रा०नाह (सं० नाथ) पु० स्वामी, मालिक, नाथ, पति ।

प्रा०नाहर-पु० बाघ, शेर ।

प्रा०नाहिं } (सं० नहि)क्रि० वि० नाहीं } नहीं, न ।

सं० नि—उपस० नहीं, बिन, रहित, २ नीचे, ३ नित्य, सदा, ४ हास ५ निश्चय, ६ अच्छीतरह से, सब तरहसे, ७ बीच में, मध्य, भीतर ८ बाहिर, ९ क्षेप, १० कौशल, ११ आश्रय, १२ दान, १३ मोक्ष, १४ भाव, १५ बन्धन, १६ स्थापन, १७ निवेश ।

सं० निःशङ्क-(निर्=नहीं, शङ्का=डर) गु० निडर, निर्भय ।

सं० निःशेष-(निर्=नहीं, शेष=बाकी) गु० पूरा, समाप्त, जहां कुछ नहीं बचे ।

सं० निःश्वास-(निर्=बाहर, श्वास=सांस) पु० मुँह और नाक से बाहर निकली हुई हवा, पवन, सांस, प्राणवायु, २ पछतावा, हाय, ठंढी सांस, लंबी सांस ।

सं० निःसंदेह-(निर्=बिन, सन्देह=शक) गु० बिन संदेह, निश्चय, बेशक ।

सं० निःसरण-(निर् सृ=जाना) भा० पु० निकलना, द्वार, मार्ग, मृत्यु, उपाय, मोक्ष, निर्गम ।

सं० निःसारण-भा० पु० निकालना, निछावर, घरकेनिकलनेकादरवाजा ।

सं० निःस्पृह } निस्पृह } (निर् वा नि=नहीं, स्पृहा=इच्छा) गु० जिसको किसी बातकी इच्छा न हो, इच्छारहित, अनिच्छुक, बेख़्वाहिश ।

सं० निःस्वादु-निर्=बिन, स्वादु=रस) गु० बेस्वाद, बेरस, फीका, अलोना ।

सं० निकट-(नि=पास, कट=जाना) नित्य सं० पास, नगीच, नजदीक, समीप ।

सं० निकटस्थ-(निकट + स्था) क० पु० पासरहनेवाला, क़रीबी, नजदीकी ।

प्रा० निकंटक-(सं० निष्कण्टक) गु० अकण्टक, बिनशत्रु, आराम से सुखी, बेखरखशा ।

सं० निकन्द } निकन्दन } (नि=नहीं, कन्द=जड़) पु० नाश, २ नाश करनेवाला, उखड़ाहुआ ।

प्रा० निकम्मा-(सं० निष्कर्म, निर्=बिन, कर्म=काम) गु० जो कुछ कामका न हो, बेकाम ।

सं० निकर-(नि, कॄ=बिखेरना, फैलना) पु० समूह, भीड़भाड़ ।

प्रा० निकलना (सं० नि, कस्=जाना) क्रि० अ० बाहर आना, बाहरजाना, निकसना, फटना, उत्पन्न होना, बढ़ आना ।

प्रा० निकलचलना-बोल० भागना, टलजाना, २ बढ़चलना, आगे निकलना, ३ बहुत बोलना

अथवा अपना गुण दिखलाना ।

प्रा० निकलजाना-बोल० भाग जाना, चलाजाना । [आजाना ।

प्रा० निकलपड़ना-बोल० बाहर

प्रा० निकलभागना-बोल० भाग जाना ।

प्रा० निकसना-(सं०नि,कस=जाना) क्रि०अ०निकलना,बाहरआना।

प्रा० निकाई-(फा०नेक) भा०स्त्री० शोभा, भलाई, अच्छाई ।

सं० निकाम-नि=नहीं, कम्=चाहना) गु० जिस को किसी बात की इच्छा न हो, इच्छारहित, निस्पृह, बेतमअ, कामनारहित, क्रि० वि० आप से, इच्छा से, मन से ।

सं० निकाय-(नि,चि=इकट्ठाकरना) पु० समूह, २ घर, स्थान, शरीररहित, परमात्मा ।

प्रा० निकाल-(निकालना) पु० निकास, निसार, बाहर आना, २ उपाय, युक्ति, जोड़, तोड़ ।

प्रा० निकालडालना-बोल० काटना, काट डालना, खारिजकरदेना, अलग करना ।

प्रा० निकालदेना-बोल० छुड़ा देना, बाहरकरना, अलगकरदेना, दूरकरना ।

प्रा०निकाललाना-बोल० लेआना, बचालाना, ढूंढलाना ।

प्रा०निकाललेना-बोल० लेजाना, उखाड़लेना, काढ़लेना, छांटलेना।

प्रा० निकालना } (सं०निष्कासन,
निकासना } नि,कस=जाना)
क्रि० स० बाहरलाना, बाहर करना, ले लेना, उखाड़ना, प्रकट करना, काढ़ना, बनाना ।

सं० निकृष्ट-(नि=नीचे, कृष्=खैंचना) मर्ष० पु० नीच, अधम, तुच्छ, जाति से निकालाहुआ ।

सं० निकेत } नि=अच्छी तरह से,
निकेतन } कित्=रहना, बसना)
धि० पु० घर, स्थान ।

सं० निक्षिप्त-(नि=नीचे, क्षिप्=फेंकना) मर्ष० फेंकाहुआ, डालाहुआ, छोड़ाहुआ, रक्खाहुआ ।

सं० निक्षेप-मर्ष०पु० धरोहर, अमानत, प्रक्षेप, न्यास ।

प्रा० निखट्टू-गु० सुस्त, आलसी, उड़ाऊ, निर्दयी, कठोर, निठुर, निकम्मा ।

सं० निषङ्ग-पु० तरकस, तूण ।

प्रा० निखरना-क्रि० अ०साफहोना, चमकना, उजलना, उजला होना, फच्छा होना ।

सं० निखर्व-पु० अधिक, दीर्घ, ह्रस्व, बौना, दशखर्व ।

प्रा० निखारना-क्रि० स० मैल छांटना, साफ करना, उजलाकरना,

फर्श्री करना ।

सं० निखात-(नि, खन्=खोदना) र्म्म० पु० खत्ता, गर्त, खन्दक ।

सं०निखिल-(नि=नहीं, खिल=शेष, बाकी) गु०पूरा, सम्पूर्ण, सब, सारा ।

सं० निगड़-पु० बेड़ी, हथकड़ी, शृंखला, ज़ंजीर, आंदू, मोटीज़ंजीर ।

सं०निगड़ित-(नि, गल=बांधना) र्म्म० पु० बँधाहुआ, कसाहुआ ।

सं० निगद-(नि, गद्=कहना) भा० पु० कहना, औषधि ।

सं० निगदित-र्म्म० पु० कथित, कहाहुआ ।

सं० निगम-(नि, गम्=जाना) पु० वेद, पवित्र लेख ।

सं० निगमनिवासी (निगम=वेद, निवासी=रहनेवाला) पु० वेदों में रहनेवाला, विष्णु, २ ब्रह्मा ।

प्रा० निगलना-(सं० नि, गल्= खाना, वा गॄ=निगलना) क्रि०स० लीलना, गले उतारना, घोंटना, खा जाना, गट करना ।

सं० निगूढ़-(नि + गूढ़) गु० गहरा, सूक्ष्म, गंभीर, गुप्त, छिपाहुआ ।

प्रा० निगोड़ा-(नि=नहीं, गोड़= पांव, तो इसका अक्षरार्थ हुआ बिन पैर का) गु० निकम्मा, अकर्मी, २ कुकर्मी, दुष्ट, चंडाल ।

सं० निग्रह, निग्रहण (नि, ग्रह=लेना) भा० पु० रोक, विरोध, २ कलह, युद्ध, भर्त्सन, जलाना, ३ मर्यादा, ४ पराभव, ५ मानखण्डन, ६ चिकित्सा, ७हठ, ८ क़ैद, बन्धन, ९ घुड़की, धमकी, १०रोष ।

सं०निघण्ट-(नि, घट्=इकट्ठा करना) पु० औषधकोष संग्रह, औषधों का गुणदोषसूचक ग्रंथ ।

सं० निचय, निचाय (नि, चि=चुनना इकट्ठा करना) पु० राशि, ढेर, समूह, समुच्चय ।

प्रा० निचंत, निचिंत (सं० निश्चित) गु० बे फ़िक्र, बे सोच, अशोची, असावसान ।

प्रा० निचितहोना-बोल० काम पूरा करना, निबटाना, बे फ़िक्र होना, फुरसत पाना ।

प्रा० निचाई-(नीच) स्त्री० नीचपन, तुच्छता ।

प्रा० निचोड़-(निचोड़ना) पु० किसी काम का अन्त, सिद्धान्त, नतीजा, निष्पत्ति, बोझ, भार, अथवा वह चीज़ जिसपर कोई दूसरी चीज़ ठहरे ।

प्रा० निचोड़ना-क्रि० स० गीले कपड़ेसे पानी निकालना, मरोड़ना, दबाना, गारना, पेरना ।

प्रा० निछावर-स्त्री० उतारा, बलि, कुरबान, बलिहारी ।

सं० निज–(नि, जन्=पैदा होना) गु० सर्वना० अपना, स्व, आपका, आत्मीय ।

सं० निजगति–स्त्री० अपनी दशा, अपनी हालत ।

सं० निजवृत्ति–स्त्री० अपनी जीविका, अपना पेशा ।

सं० निजतन्त्र–पु० स्वतन्त्र, स्ववश, खुदमुख्तार ।

प्रा० निठल्ला–गु० निकम्मा, सुस्त, आलसी ।

प्रा० निठुर–(सं० निष्ठुर) गु० कठोर, निर्दय, कठिन, बड़ा क्रूर, जिसका दिल पत्थर सा कड़ा हो ।

प्रा० निठुरता, निठुराई (सं० निष्ठुरता) भा० स्त्री० कठोरता, निर्दयता, कड़ापन, बेरहमी ।

प्रा० निडर–(सं० निर्दर निर्=नहीं, द=डरना) गु० निर्भय, निधड़क, निःशंक, ढीठ, बेडर, अशंक, बेखौफ ।

प्रा० निढाल, निढोल (सं० निर्दोल निर्=नहीं, दुल्=हिलाना) गु० अचेत, सूनसान, निश्चल, अचल ।

प्रा० नित–(सं० नित्य) क्रि० वि० सदा, सर्वदा, निरन्तर, हमेश, हमेशह, रोज़ रोज़ ।

प्रा० नितउठ, नितउठके बोल० सदा, निरन्तर, रोज़ रोज़, हमेशह, हरदम, हमेश ।

प्रा० नितनित-बोल० सदा, नित उठ, हरदम, रोज़ रोज़, निरन्तर, हमेशह ।

सं० नितम्ब– (नि=नीचे, तम्ब=जाना, वा स्तम्भ=ठहरना) पु० कमरके नीचे का भाग, पुट्ठा, कूला, चूतड़ ।

प्रा० नितप्रति–(सं० प्रतिनित्य प्रति=हर एक, नित्य=सदा) क्रि० वि० नित नित, नितउठ, सदा, हररोज़, रोज़रोज़, हमेशह ।

सं० नितान्त–पु० एकान्त, अतिशय, निरन्तर ।

सं० नित्य–(नि=निश्चय, अर्थात् जो निश्चयहीहो) क्रि० वि० सदा, सर्वदा, नित, हमेशह, सनातन, निरन्तर, लगातार, मामूली ।

सं० नित्यकर्म्म–(नित्य=सदा का कर्म्म धर्म का काम) पु० स्नान, सन्ध्या, वन्दन, तर्पण, पूजा, जप, तप आदि षट्कर्म, हर एक दिनका अवश्य करने योग्य काम ।

सं० नित्यानित्य–(सं० नित्य + अनित्य) क्रि० वि० निरन्तर, हमेशा, हमेशगी, जावेदानी ।

सं० नित्यानन्द–(नित्य + आनन्द)

पु० सदासुख, सदाहर्ष ।

प्रा० निथरा-गु० फर्छा, स्वच्छ, निर्मल।

प्रा० निथारना–क्रि० स० ढालना, उझलना, २ निखारना, पानी को अथवा और किसी रसको साफ करना, निर्मल करना ।

प्रा० निदरना–(सं० निरादर) क्रि० स० निरादर करना ।

सं० निदर्शन–(नि, दृश्=दिखाना) पु० उदाहरण, दृष्टान्त, प्रमाण ।

सं० निदाघ-(नि, दह्=जलाना, नाश करना) पु० ग्रीष्मकाल, ग्रीष्म ऋतु, घाम, उष्ण, पसीना ।

सं० निदान-(नि=निश्चय, दा=देना) क्रि० अ० अन्तमें, पीछे, पु० आदि कारण, मूलकारण, सबूत, हुक्म, नज़ीर ।

सं० निदेश–(नि, दिश्=हुक्मदेना) पु० आज्ञा, हुक्म, निकट, भाजन, बर्तन।

सं० निद्रा-(नि, द्रा=सोना) स्त्री० नींद।

सं० निद्रालु–(निद्रा) गु० निंदालु, ऊँघासा, निंदासा, जिसको नींद आती हो ।

सं० निद्राशन-(निद्रा+अशन) पु० सोना, और खाना ख़्वाब ख़ुर ।

सं० निद्रित–र्म० पु० सोयाहुआ, नींदमें भराहुआ ।

प्रा० निधड़क-(सं० निर्दर, निर्=नहीं, दृ=डरना) गु० निडर, निर्भय, अशंक ।

सं० निधन – (नि, हन्=मारना) पु० मौत, मरण, मृत्यु, २ (नि=नहीं, धन=दौलत) गु० निर्धन, कंगाल, ग़रीब ।

सं० निधनता-(निधन) स्त्री० कंगालपन, ग़रीबी ।

सं० निधान-(नि=भीतर, धा=रखना) पु० घर, आधार, स्थान, जगह, ठांव, २ कुबेरका भण्डार, ख़ज़ाना, निधि ।

सं० निधि–(नि=भीतर, धा=रखना) पु० कुबेर का भण्डार, ख़ज़ाना, संपदा, कोष, २ आधार, जगह, स्थान, घर, आसरा ।

सं० निनीषा–(नी=प्राप्त करना, पैदा करना) स्त्री० लेने की इच्छा, हासिल करने का इरादा ।

सं० निनीषु–क० पु० प्राप्तिकी इच्छा करनेवाला ।

सं० निनेता-क० पु० सरदार, नायक।

सं० निन्दक–(निंद्=बुराई करना) क० पु० निन्दा=करनेवाला, बुराई करनेवाला, हजो करनेवाला ।

प्रा० निन्दना–(सं० निन्दन, निंद्=बुराई करना) क्रि० स० कलंक लगाना, दूषना, बुराकहना, निन्दा करना ।

सं० निन्दा–(निन्दा=निन्दाकरना) स्त्री० बुराई, कलंक, दोष, अपवाद, कुत्सा, धिक्कार ।

सं० निन्दित-(निन्द्=निन्दाकरना) र्म्म० पु० दोष लगायाहुआ, दूषित, बुरा, बदनाम ।

सं० निन्द्य-(निन्द्=निन्दा करना) र्म्म० पु० निन्दा के योग्य, बुराई करनेके लायक ।

सं० निन्द्यकर्म्म-पु० कुत्सितकर्म्म, बुराकाम ।

प्रा० निन्नानबे-(सं० नवनवति नव=नौ, नवति=नब्बे) गु० नब्बे और नौ, ९९ ।

प्रा० निन्नानबेके फेरमें पड़ना-बोल० धनके इकट्ठा करनेही में लगा रहना २ दुःख में फँसना ।

प्रा० निपट-गु० बहुत, अधिक, अत्यन्त ।

सं० निपतन-(नि=नीचे, पत्=गिरना) भा० पु० नीचे गिरना ।

सं०निपात-(नि=नीचे, पत्=गिरना) भा० पु० गिरना, मौत, मृत्यु, मरण, २ व्याकरण में च आदि और प्र आदि अव्यय ।

सं० निपातक-(निपात्+अक) नाशक, उजाड़नेवाला, ढहानेवाला ।

प्रा० निपातना-(सं० निपात)क्रि० स० गिराना, नाशकरना, मारना ।

सं० निपात-र्म्म० पु० नाश किया, उजाड़दिया ।

सं० निपातित-र्म्म० पु० अधःपतित, निक्षिप्त, नीचेगिरा, उजाड़ाहुआ ।

सं० निपान-(नि+पा=पीना) धि० जलाधार, चरही, कुएंका चहबचा, दोहनी, दूधदुहने का पात्र, कठरा ।

सं० निपीड़न-(नि+पीड़=मारना, मथना) भा० पु० पीड़ा देना, तकलीफ देना ।

सं० निपीड़ित-र्म्म० पीड़ा दिया गया, घातित, निचोड़ा गया ।

सं० निपुण-(नि, पुण=पवित्रहोना) गु० प्रवीण, चतुर, बुद्धिमान् ।

प्रा० निपुणाई-भा० स्त्री० चतुराई, अक्लमन्दी ।

प्रा० निपूता-(सं० निष्पुत्र) गु० जिसके लड़का न हो, पुत्रहीन, निःसन्तान, बे औलाद ।

प्रा० निबड़ना } निबटना } (सं० निवर्तन) क्रि० अ० होचुकना, निपटना, खर्चहोना, नाश होना, पूरा होना, खतम होना ।

सं०निबन्धन (बन्ध=बांधना) भा० पु० बन्धन, बन्धेज, रोंक, क़ैद ।

सं०निबन्ध-भा० पु० प्रमाण, बन्धन, प्रबन्ध, कारण, आनाह रोग, मूत्रादि रोग, ग्रन्थ की वृद्धि, संग्रहविशेष, माहवारी, सालीना, दैवीसम्पत् ।

प्रा० निबल-(सं० निर्बल) गु० दुबला, दुर्बल, कमज़ोर ।

प्रा० निवाह-(सं० निर्वाह) पु० पूरा करना, निर्वाह, पूरा, समाप्त, गुज़ारा, बसर ।

प्रा० निवाहना-(सं० निर्वहण नि- र्=निश्चय, वह्=सहना, ले जाना) क्रि० स० पूरा करना, सिद्ध करना, समाप्त करना, पार लगाना, २ बचाना, रक्षाकरना, ३ वचन पूरा करना, अपना विश्वास बना रखना, ४ व्यवहार करना ।

प्रा० निबेड़ना } निवेड़ना } (सं० निवर्त्तन) क्रि० स० पूरा करना, निपटाना, चुकाना ।

प्रा० निबेड़ा } निवेड़ा } (सं० निवर्त्तन) पु० निबटारा, छुटकारा, पूरा करना ।

प्रा० निबुकना- क्रि० अ० छुड़ाना, छुटकारापाना, २ सुकुड़ना, छोटा होना ।

सं० निभ- (नि=पास, भा=चमकाना) गु० बराबर, समान, सदृश, पु० कपट, छल, व्याज ।

प्रा० निभना-(सं० निर्वहण) क्रि० अ० पार लगना, होना, पूरा होना, बन आना ।

सं० निभृत-(निभृ=भरना) गु० नम्र, अचल, निश्चल, एकाग्र, २ निर्जन, बुद्धिमान्, ३र्म, ४ गृहीत, लिया गया, छिपा, खुफ़िया ।

सं० निभृतं-अव्य० बलात्कार, हठ, आग्रह ।

सं० निम-पु० सूची, सूजा, कर्तन, कतरनी, २ घोसला, ३ क्लेश ।

सं० निमग्न- (नि=नीचे मस्ज्= डूबना) गु० डूबा हुआ, मग्न ।

सं० निमज्जन- (नि=नीचे, मस्ज्= डूबना) पु० स्नान, न्हाना, जल में डूबना, गुस्ल करना ।

सं० निमन्त्रण- (नि, मन्त्र=बुलाना) पु० नेवता, बुलाहट, नौता ।

सं० निमन्त्रित- र्म० न्योतागया, बुलाया गया ।

सं० निमि- एक राजा का नाम जो इक्ष्वाकु राजा का पुत्र था ।

सं० निमित्त- (नि, मा=नापना) पु० कारण, हेतु, सबब, लिये, २ भाग्य, भाग, शकुन, फल, शक्य ।

सं० निमीलन-(मील्=मीचना) भा० पु० संकोचन, आंखमीचना, मृत्यु, तन्द्रा, ऊंघ, बड़ी नींद ।

सं० निमीलित- र्म० पु० मुद्रित, बन्द करलिया ।

सं० निमिष } निमेष } (नि, मिष्=पलक मारना) पु० पलक, पल, क्षण, लव ।

सं० निम्न-(नि=नीचे, म्ना=अभ्यास करना, याद करना) गु० नीचे, जैल, २ गहरा ।

सं०निम्नगा- (गम्=जाना)स्त्री०नदी।

सं० नियत-(नि,यम्=रोकना)कर्म० पु० रोकाहुआ, २ ठहरा हुआ, निश्चित, मुकर्रर किया हुआ, क्रि० वि० लगातार ।

सं० नियन्ता-(नियम्+तृ)क०पु० शिक्षक,सारथी,पशुप्रेरक। [धर्म्म।

सं० नियति- स्त्री० प्रमाण, इमान,

सं० नियम-(नि, यम्=रोकना, ठहराना) पु० वचन, शर्त, प्रतिज्ञा, संकल्प, वाचा, २ धर्म का काम जैसे व्रत, जागरण, प्रार्थना यज्ञ आदि, ३ रीत, चलन, व्यवहार, क़ायदा ।

प्रा०नियर-(सं० निकट) क्रि० वि० पास, नजदीक ।

प्रा० नियराना-(नियर) क्रि०अ० पास आना, नगचाना, पहुँचना, क़रीब आना ।

सं० नियुक्त-(नि, युज्=मिलना) क० पु० लगाहुआ, ठहराया हुआ, स्थापित, मुकर्रर किया, मशगूल ।

सं० नियुत-(नि, यु=मिलना) गु० दसलाख ।

सं० नियोग-(नि, युज्=मिलना) पु० आज्ञा, प्रेरणा, हुक्म, ताकीद, २ काम, शुग़ल, अनुमति ।

सं० नियोगी-क० पु० अशुभचिंतक, बदख़्वाह, अहलकार, कारकुन ।

सं० नियोजन-(युज्=मिलना) भा० पु० प्रेरणा, ताकीद, लगाना, मिलाना ।

सं० निर्-उपस० नहीं, बिन, २ निश्चय, ३ बाहिर, ४ अच्छी तरहसे ।

प्रा० निरङ्कार-(सं० निराकार) गु० आकार रहित, बिन आकार, अस्वरूप, पु० परमेश्वर, विष्णु ।

सं० निरंकुश-(निर्=बिन,अंकुश=आंकुश) गु० बिन रुकावट, नहीं रोकाहुआ, स्वेच्छाचारी, अपनी इच्छा के अनुसार चलने वाला, स्वतन्त्र, बे अदब ।

प्रा० निरखना-(सं० निरीक्षण) क्रि० स० देखना, ताकना ।

सं० निरञ्जन-(निर्=चलागयाहै,अञ्जन=मल अथवा अन्धकार तमोगुण आदि) गु०निर्मल, निस्पृह, स्वच्छ, निर्दोष, काम व क्रोध से रहित, बेमक्र, बेरिया, परमेश्वर, परब्रह्म ।

सं० निरत-(नि=भीतर, रत=लगा हुआ) गु० लगा हुआ, नियुक्त, आसक्त, तत्पर, मशग़ूल ।

सं० निरति-स्त्री० अप्रीति, बेग़र्ज़ी ।

सं० निरधार-भा० पु० निश्चय, निर्णय, ठीक ।

सं० निरन्तर (निर्=नहीं, अन्तर=बीच) क्रि० वि० लगतार,नितउठ।

सं० निरपराध-(निर्=नहीं, अप-

राध=पाप) गु० निष्पाप, निर्दोष, शुद्ध।

सं० निरय -पु० नरक, दोजख।

सं० निरर्गल-(निर्=नहीं, अर्गल= संकली) गु० बेरोक, निरंकुश, बे जंजीर, बेसांकरका।

सं० निरर्थक-(निर्=नहीं अर्थ= प्रयोजन) गु० निष्प्रयोजन, वृथा, निष्फल, अर्थ हीन, बेफ़ायदा।

सं० निरवकाश-(निर्+अवकाश) गु० बे फुरसत, बे छुट्टी।

सं० निरवद्य-(निर्=नहीं, अवद्य =दोष) गु० निर्दोष, बे ऐब।

सं० निरस-(नि=बिन, रस=स्वाद) गु० फीका, बेस्वाद, अलोना, फ़ीका।

सं० निरसन-(निर्+असन, अस् =फेकना) पु० परित्याग, अति-क्षेप, वध, निकारना।

सं० निरस्त-कर्म० पु० हारगया, फेकागया, मारा गया, भर्त्सित, जलायागया, लस्तपस्त।

प्रा० निरा-(सं० निरालय, निर= बाहिर, एकान्त, आलय=जगह) गु० केवल, मात्र, बिलकुल, सिर्फ़।

सं० निराकार-(निर्=नहीं, आकार =रूप) गु० अस्वरूप, निरंकार, पु० परमेश्वर, अरूप।

सं० निरादर-(निर्=नहीं, आदर =मान) पु० अपमान, अमान, अप्रतिष्ठा, बेइज्जती, बे क़दरी।

सं० निरामय-(निर=नहीं, आमय =रोग) गु० तन्दुरुस्त, नीरोग, सुखी, पु० सुअर, २ बनका बकरा।

सं० निरामिष-(निर्=नहीं, आमिष मांस) गु० मांस विना, बिन मांस का (भोजन)।

सं० निरायुध-(निर्=नहीं, आयुध शस्त्र) गु० बिन शस्त्र, बे हथियार।

प्रा० निराला-(सं० निरालय, निर् =बाहिर, एकान्त, आलय=जगह) गु० एकान्त, निर्जन, अलग, २ निरा, केवल, मात्र, ३ अनूठा।

प्रा० निरावना-क्रि० स० खेती से कूड़ा करकट, जुदाकरना, साफ़ करना, पछोड़ना।

सं० निराश-(निर्=नहीं, आश= उम्मैद) गु० आशाहीन, नाउम्मैद, बेसहारा, बेभरोसा।

सं० निराश्रय-(निर्=नहीं, आश्रय =आसरा) गु० बिन आसरे।

सं० निराहार-(निर=बिन, आहार =खाना) पु० उपवास, उपास, फ़ाका, गु० बिनभोजन, बिनखाये।

सं० निरीक्षण-(निर्=निश्चय, ईक्ष् =देखना) भा० पु० देखना, दर्शन, दृष्टि, नजरकरनी, ताक।

सं०निरीह-(निर्=नहीं, ईहा=इच्छा, चेष्टा) गु० जिसको किसी बात की

अथवा चीजकी इच्छा न हो, बे चेष्टा, निःस्पृह, बे नयाज, बेलालच ।

सं० निरुक्त-(निर्=निश्चय, उक्त=कहा हुआ, वच्=कहना) पु० वेदका एकअंग जिसमें वेदके शब्दोंका अर्थ लिखा, वेद का व्याकरण और कोष, गु० कहा हुआ, कथित ।

सं० निरुत्तर-(निर्=नहीं उत्तर= जवाब) गु० चुप, अवाक्, लाजवाब, बेजवाब ।

सं० निरुत्साह-(निर्=बिन, उत्साह =उमंग) गु० जिसके मन में किसी बात की उमंग नहो, सुस्त, आलसी, ढीला ।

सं० निरुपम-(निर्=नहीं, उपमा= बराबरी) गु० जिसकी बराबरी नहीं होसके, अनूप, अनुपम, अतुल्य, अपूर्व, बे मिस्ल ।

सं० निरुपाधि-(निर्=नहीं, उपाधि= गुणनाम, विशेषण वा छल) गु० उपाधिरहित, गुणरहित, निर्गुण, शुद्ध, निर्मल, बेखशखशा, बेझगड़ा ।

सं० निरूप-(नि=नहीं, रूप=आ- कार) गु० निराकार, अस्वरूप, अरूप, बे सूरत, पु० परमेश्वर ।

सं० निरूपण-(नि=निश्चय, रूप्= आकार बांधना, वा देखना) पु० वर्णन, निर्णय, निर्द्धार, विचार, दर्शन, देखना ।

सं० निरोग-(नि=नहीं, रोग=बीमारी) गु० भला, चंगा, अरोग, तन्दुरुस्त ।

सं० निर्गत-(निर्=बाहिर, गम्= जाना) कृ० निकलाहुआ, बाहिर गया हुआ ।

सं० निर्गन्ध-(निर्=नहीं, वा बिन, गन्ध=बास) गु० बिना बास, बिन महक, गन्धरहित ।

सं० निर्गम-(निर्=बाहिर, गम्= जाना) भा० पु० निकलना, बा- हर जाना ।

सं० निर्गुण-(निर्=नहीं, गुण=हु- नर, चतुराई, वा सत, रज, तम) पु० परमेश्वर, परमात्मा, ब्रह्म, गु० निर्विकार, निराकार, निरञ्जन, सत रज और तम इन तीनों गुणों से रहित, २ मूर्ख, गुणहीन, निकम्मा ।

सं० निर्घर्षण-(निर्=निश्चय, घर्ष= रगड़ना)भा० पु० घिसना, रगड़ना ।

सं० निर्घोष-(निर्+घुष=शब्दकरना) शब्द, आवाज ।

सं० निर्जन- (निर्=बिन, जन= मनुष्य) गु० एकान्त, जहां कोई मनुष्य न हो ।

सं० निर्जर-(निर्=नहीं, जरा=बुढ़ापा) पु० देवता, २अमृत, गु० अजर, अमर ।

सं० निर्जल-(निर्=बिन, जल= पानी) पु० जंगल, मैदान, मरु-

स्थल, ऐसी जगह जहां पानी न मिले,गु० ऊसर, उजाड़,बिन पानी, जल बिन,सूखी (धरती) ।

सं० निर्जित-(निर्=नहीं, जि=जीतना)गु०अजय, अपराजित, अजीत, २ परास्त, पराजित, जीतागया ।

सं० निर्जीव-(निर्=बिन, जीव=प्राण) गु० अचेत,जड़, प्राणहीन।

सं० निर्झर-(निर्=नीचे, झॄ=उपर का घटना वा गिरना) पु० झरना, पहाड़ का सोता, चश्मा ।

सं० निर्णय-(निर्=निश्चय, नी=पाना वा चलाना) पु० निश्चय, विचार,विवेचना,मीमांसा, फ़ैसला ।

सं० निर्णीत-म्मं० पु० निश्चयकृत, फ़ैसलहुआ, विचारित ।

प्रा० निर्त-(सं० नृत्य) पु० नाच ।

प्रा० निर्दई-(सं० निर्दयः, निर्=बिन+दया) गु० जिसके मन में दया न हो, कठोर, कड़ा, दयाहीन, जिसका दिल पत्थरसा कड़ा हो, संगदिल, निठुर ।

सं० निर्दम्भ-गु० निश्छल, निष्कपट, बेमक्र ।

सं० निर्दिष्ट-(निर्=अच्छीतरह से दिश्=देना वा दिखाना, जताना) म्मं० पु० अच्छीतरह से कहा हुआ, दिखलाया हुआ, निर्णय किया हुआ, नियत किया गया।

सं० निर्दोष-(निर्=बिन, दोष=अपराध) गु० निरपराध, दोषहीन, बिन चूक, बे क़सूर ।

सं० निर्द्वन्द्व-(निर्=बिन, द्वन्द्व=दो, वा बखेड़ा) गु० बिन बखेड़े, बे झगड़े, आराम से, चैनसे ।

सं० निर्धन-(निर्=बिन, धन=दौलत) गु० गरीब, कंगाल, दरिद्री ।

सं० निर्धार, निर्धारण (निर्=निश्चय, धृ=रखना) पु० निश्चय, निर्णय, २ पृथक्करण, जुदाकरना ।

सं० निष्पक्ष-(निर्=बिन,पक्ष=सहाय) गु० असहाय, बेबश, अनाथ, बे मदद ।

सं०निष्फल-(निर्+फल) गु० निष्फल, वृथा, व्यर्थ ।

सं०निर्बन्ध-(निर्+बन्ध=बन्धना) भा० पु० बेरोक, बेक़ैद, बेसहारा, बेरोजगार ।

सं० निर्बल-(निर्+बल) गु० निबल, दुर्बल, दुबला, कमज़ोर ।

सं० निर्बुद्धि-(निर्+बुद्धि) गु० मूर्ख, असमझ, अनसमझ, अज्ञान ।

सं० निर्भय-(निर्=नहीं, भय=डर) गु० निडर, बेख़ौफ़ ।

सं० निर्भर-(निर्=निश्चय, भृ=भरना) गु० पूरण, पूरा, बहुत, अत्यन्त, अतिशय ।

सं० निर्म्मल-(निर्=बिन, मल=मैल)गु०पवित्र, शुद्ध,स्वच्छ,उजला ।

साफ़ । [कर्ता ।

सं० निर्माणक–क० पु० मुसन्निफ़,

सं० निर्माण–(निर्, मा=नापना, वा बनाना) पु० बनावट, रचना, तसनीफ़ २ सार ।

प्रा० निर्म्माण करना–क्रि० स० बनाना, रचना ।

सं० निर्म्माल्य–(निर्मल से, अथवा निर् और माल्य फूल वा फलों की माला) भा० पु० देवता का जूंठा प्रसाद, देवता को चढ़ाया हुआ नैवेद्य, २ पवित्रता, सफ़ाई, फर्छाई, गु० पवित्र, साफ़, शुद्ध ।

सं० निर्मित–(निर्, मा=नापना, वा बनाना) कर्म० बनाया हुआ, रचित, कल्पित ।

सं० निर्मूल–(निर्=बिन, मूल=जड़) गु० उखड़ाहुआ, जड़सेखोदाहुआ, बिन जड़, निर्बीज, बे ठिकाने, २ उजड़, नाश, ध्वंस ।

सं० निर्मोही–(निर्=बिन, मोह=प्यार) गु० निर्दय, कठोर, कड़ा ।

सं० निर्यास–(निर्, यस्=निकलना) पु० वृक्षरस, गोंद, गंध ।

सं० निर्लज्ज–(निर्=बिन, लज्जा=लाज) गु० निर्लज्ज, बेशर्म, नकटा ।

सं० निर्लेप–(निर्=नहीं, लिप्=लेपना) गु० बेलाग, बिनलगाव, अलेप, बेलौस ।

सं० निर्लोभ, निर्लोभी–(निर्=बिन, लोभ=लालच) गु० जिस को लालच न हो, लोभहीन, बेतमा ।

सं० निर्वंश–(निर्=बिन, वंश=कुल) गु० वंशहीन, जिसके वंश न हो, अपूता, निपूता, बे औलाद, लावल्द ।

प्रा० निरवहे–गु० बीतगये, छूटगये ।

सं० निर्वाचन–(निर्, वच्=कहना) भा० पु० चुनना ।

सं० निर्वाचक–क० पु० चुननेवाला ।

सं० निर्वाण–(निर्, वा=बहना, जाना) पु० मुक्ति, मोक्ष, लयहोना, गु० बुता हुआ, बुझा हुआ, ठंढा किया हुआ, २ नष्ट ।

सं० निर्वात–गु० वायुरहित स्थान, बे हवा का ।

सं० निर्वास–(निर्+वास=रहना) भा० पु० निकालना, बाहर करना, मारना, मनाकरना ।

सं० निर्वासक–(निर्वास्+अक) क० पु० निकालने वाला । [गया ।

सं० निर्वासित–कर्म० पु० निकाला

सं० निर्वाह–(निर्=निश्चय, वह=लेजाना) पु० निबाह, पूराकरना, समाप्ति ।

सं० निर्विकल्प–(निर्=नहीं, विकल्प=भेद भ्रम) गु० भेद और भ्रम से रहित, बेशक शुबहा ।

सं० निर्विकार—(निर्=बिन, विकार=बदलना) गु० नहीं बदला हुआ, जिस में किसीतरह का विकार वा दोष न हो, एक भाव, एक रंग।

सं० निर्विघ्न-(निर्=बिन, विघ्न=बिगाड़) गु० विघ्नरहित, बिन बिगाड़ बेखटके।

सं० निर्बीज-(निर्+बीज) गु० निर्मूल, बीजरहित, बिन बीज।

सं० निलय—(नि=भीतर, ली=लेना वा मिलना) पु० घर, स्थान।

सं० निवर्तन—(नि, वृत्=वर्तना, रोकना) क्रि० स० लौटना, वापस आना।

सं० निवारण—(नि, वृ=घेरना रोकना) पु० रोक, रुकावट, अटकाव, बाधा दूरकरना, हटाना, निवारना।

प्रा० निवारना-(सं० निवारण) क्रि० स० रोकना, दूर करना, अटकाना।

सं० निवास-(नि=भीतर, वस्=रहना) पु० वासा, घर, मकान, डेरा, जगह।

सं० निवासी-(निवास) गु० रहने वाला, बसने वाला, वासी।

सं० निविड़-(नि=बहुत, विड्=इकट्ठा होना) गु० गहरा, घना, सघन, गुंजान।

सं० निवृत-(वृ=घेरना) कर्म० पु० छूटाहुआ, मुक्त, फरागत पायाहुआ।

सं० निवृत्ति—भा० स्त्री० छुट्टी, रिहाई, सुख, सिद्धि।

सं० निवेदन-(नि=अच्छी तरह से विद्=जानना) पु० विनती, प्रार्थना, विज्ञापन, विनयपत्र, दरख़्वास्त।

सं० निश् } (नि=सब तरह से, शो
निशा } =पतला करना, अर्थात् कामों को पूरा करना) स्त्री० रात, रात्री २ हल्दी।

सं० निशाकर—(निशा=रात, कर=करनेवाला, कृ=करना) पु० चांद, चन्द्र, चन्द्रमा।

सं० निशाचर—(निशा=रात, चर=चलनेवाला, वा खानेवाला चर्=चलना वा खाना) पु० राक्षस, २ भूत, ३ उल्लू, ४ चोर, ५ गीदड़, गु० रात को चलनेवाला, वा खानेवाला।

सं० निशाचरी—(निशाचर) स्त्री० राक्षसी २ वेश्या, व्यभिचारिणी, कुलटा, ३ केशिनी नाम गंधद्रव्य।

सं० निशानन } (निशा+आनन)
निशामुख } सायङ्काल, प्रदोष,
रात्रिमुख } शाम।

सं० निशानाथ } (निशा=रात,
निशापति } नाथ वा पति=राजा) पु० चांद, चन्द्रमा, चन्द्र।

सं० निशिनाथमुखी—स्त्री० चन्द्रमुखी।

प्रा० निशि } (सं० निश् वा निशा)
निसि } स्त्री० रात, रात्री, रजनी।

प्रा० निशिचर } (सं० निशाचर
निसिचर } वा निशि=रातमें चर=चलनेवाला) पु० राक्षस ।

सं० निशित –(नि=अच्छी तरह से शि=तीखा करना) पु० तीखा,तीक्ष्ण, चोखा, शाणित, पैना ।

सं० निशीथ(नि=अच्छी तरह+शी=सोना) पु० अर्द्धरात्रि, आधी रात ।

सं० निशीथिनी–स्त्री० रात्रि ।

सं० निशुम्भ–(नि=निश्चय, शुम्भ् =मारना) पु० एक राक्षस का नाम, जिसको दुर्गाने मारा ।

सं० निशेश–(निशा=रात, ईश=राजा) पु० चांद, शशि ।

सं० निश्चय–(निर्=अच्छीतरहसे चि=इकट्ठा करना)भा० पु० निर्णय, ठीक करना, पक्का करना, भरोसा, विश्वास, गु० ठीक, सच, असंशय ।

सं० निश्चर–(निश्=रात, चर=चलनेवाला, चर्=चलना) पु० राक्षस ।

सं० निश्चल–(निर्=नहीं,चल=चलना) गु० अचल, अटल, स्थिर, ठहरा हुआ, जो नहीं चले ।

सं० निश्चला-स्त्री० पृथ्वी, जमीन ।

सं० निश्चित-(निर्=अच्छीतरहसे, चि=इकट्ठा करना) र्म० पु०निश्चय किया हुआ, निर्णय किया हुआ ।

सं०निश्चिन्त–(निर्=नहीं, चिन्ता =शोच) गु० निचिन्त, बे फिक्र, बिनचिंता, चिन्तारहित ।

सं० निश्वास– (नि=बाहर, श्वस् =सांस आना वा लेना) पु० मुँह और नाक से बाहर निकली हुई हवा, सांस, निसास ।

सं० निषङ्ग–(नि, षञ्ज्=मिलना) पु० भाथा, तूण, तूणीर, तर्कस ।

सं०निषण्ण– (नि=नहीं, षद्=चलना) र्म० पु० बैठा हुआ, आसीन, आसन्न ।

सं० निषाद –(नि, षद्=मारना) पु० चंडाल, जो ब्राह्मण से शूद्री के गर्भ में पैदा हो, मल्लाह, २ एक राग का नाम ।

सं० निषिद्ध– (नि, षिध्=जाना, पर नि, उपसर्ग के साथ आने से अर्थ हुआ रोकना) र्म० रोका हुआ, निवारित, वर्जित ।

सं० निषेधक–(नि, षिध्=अक)कृ० पु० रोकनेवाला, मनअ करनेवाला ।

सं० निषेध –(नि, षिध्=रोकना)पु० रोक, रुकाव, बाधा, नाहीं ।

सं०निष्क-पु० अशर्फी,सोनेकारुपया, दीनार ।

सं० निष्कण्टक –(निर्=बिन,कंट-